# संगीत रत्न–पंडित दीनानाथ मिश्र
# व्यक्तित्व
# एवं
# उत्तर भारतीय संगीत में योगदान

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा को
पी.एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध
संगीत–विभाग


**शोधकर्ता**

मीनू मिश्रा

**शोध निर्देशिका**

डॉ. (श्रीमती) निशि माथुर
विभागाध्यक्ष–संगीत
जानकी देवी बजाज राजकीय
कन्या महाविद्यालय, कोटा (राज.)
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा



वर्ष – 2014

# CERTIFICATE TO ACCOMPANY THE THESIS

It is certified that the

(i) Thesis entitled ''–संगीत रत्न पंडित दीनानाथ मिश्र व्यक्तित्व एवं उत्तर भारतीय संगीत में योगदान''

Submitted by **मीनू मिश्रा**

is an original piece of research work carried out bythe candidate under my supervison.

(ii) Literary presentation is satisfactory and the thesis is in a form suitable for publication.

(iii) Work evinces the capacity of the candidate for critical examination and independent judgement.

(iv) Candidate has put in at least 200 days of attendance every year.

**Signature of supervisor with date**

# अनुक्रमणिका

पृष्ठ सं.


**प्राक्कथन**

**प्रथम अध्याय** **1–53**

"उत्तर भारतीय संगीत का उद्‌भव व विकास के संदर्भ में" 2

1. संगीत में घराना 19
2. भारतीय शास्त्रीय गायकों का विवेचन 29
3. गायन शोध कार्य की समीक्षा 48
4. अध्ययन के उद्‌देश्य 51

**द्वितीय अध्याय** **54–68**

"संगीत रत्न पंडित दीनानाथ मिश्र"

1. जन्म एवं बाल्यकाल 55
2. वंश परिचय 57
3. प्रारंभिक जीवन 59
4. पारिवारिक स्थिति और संगीतात्मक पर्यावरण 60
5. स्वभाव, रहन–सहन एवं जीवन दर्शन 61
6. अन्य रुचियाँ 64

**तृतीय अध्याय** **69–79**

"गायन शिक्षा" 70
1. प्रारम्भिक गायन शिक्षा 71
2. पंडित जी पर अन्य कलाकारों का प्रभाव 72

**चतुर्थ अध्याय** **80–96**

"गायन शैली की परंपरा" 81
1. गायन शैली की परंपरा में बनारस व पटियाला घराना 89

**पंचम अध्याय** **97–112**

"पंडित जी की गायन शैली"
1. समकालीन गायकों से तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर 98
2. गायन की विशेषताएँ 105

**षष्टम अध्याय** **113–150**

"गायन कार्यक्रम एवं सम्मान"
1. दूरदर्शन केन्द्रों पर कार्यक्रम 114
2. संगीत सम्मेलनों में कार्यक्रम 115
3. अन्यत्र भारत में यात्राएँ एवं कार्यक्रम 117
4. विदेशों में गायन प्रचार एवं प्रसार हेतु लक्षित कार्यक्रम 140
5. उपलब्धियाँ 144

**सप्तम अध्याय** 151–180

"सांस्कृतिक धरोहर का प्रचार एवं संरक्षण''

1. विद्यार्थी 152

2. कार्यक्रम की प्रस्तुतियाँ 162

3. अन्य (वेबसाईट सी. डी. विडियो क्लिप्स एवं साहित्य) 174

**अष्टम अध्याय** 181–200

"शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोग''

1. मौलिक चिंतन एवं मान्यताएँ 182

2. गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोग 188

**उपसंहार** 222–229

**परिशिष्ट (1)** 230–235

गायन से सम्बन्धित चित्र

सम्मान उपाधियों से संबंधित चित्र

गायन शिक्षा से सम्बन्धित चित्र

**परिशिष्ट (2)** 236–243

संदर्भ ग्रन्थ एवं समाचार पत्र–पत्रिकाएँ

# प्राक्कथन

ईश्वर ने सृष्टि की रचना करते समय विभिन्न प्रकार के प्राणियों को जन्म दिया, इन प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वाधिक बुद्धि वाला प्राणी बनने का सौभाग्य मनुष्य को प्रदान किया। मनुष्य ने अपने जीवन के विकास क्रम में भाषा का सहारा लिया तथा अपने जीवन को अधिकाधिक आनंदमयी बनाने के लिए संगीत रूपी तत्व की खोज की। हमारे प्राचीन मनीषियों ने वीणा के तार पर बाईस श्रुतियों की खोज करके मुख्य सात स्वरों को पहचान कर विभिन्न रागों का निर्माण किया जिससे शास्त्रीय गायन शैली का प्रादुर्भाव हुआ। यह संगीत के विकास का क्रम तब से आज तक निरन्तर जारी है। संगीत के क्षेत्र में भरत का नाट्यशास्त्र, मतंग का बृहद्देशी ग्रंथ, जयदेव रचित गीत गोविन्द, शारंगदेव का महत्वपूर्ण ग्रन्थ संगीत रत्नाकर, पार्श्वदेव का संगीत समयसार, लोचन का राग तरंगिणि, कल्लिनाथ द्वारा लिखी गई संगीत रत्नाकर की टीका, रामामात्य का स्वरमेल कलानिधि, पंडित व्यंकटमुखि द्वारा रचित चतुर्दण्डिप्रकाशिका, अहोबल रचित संगीत पारिजात, भावभट्ट की अनूपविलास, अनूपसंगीत रत्नाकर व अनुपांकुश आदि ग्रन्थों ने संगीत को आज इस ऊँचाई पर पहुँचाया है कि विश्वभर में भारतीय शास्त्रीय संगीत का अपना एक विशिष्ट स्थान है। भारतीय शास्त्रीय संगीत को इस ऊँचाई पर पहुँचाने का श्रेय भारत की दो महान विभूतियों पंडितविष्णु दिगम्बर पलुस्कर एवं पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे को जाता है।

वर्तमान में भारतीय शास्त्रीय संगीत का जो स्वरूप हमारे सामने विद्यमान है यह पीढ़ी दर पीढ़ी गुरुओं द्वारा दिये गये अपने शिष्यों को ज्ञान पर आधारित है। यदि हमें कहीं भारतीय शास्त्रीय संगीत का विकृत स्वरूप दिखाई देता है, इसका स्पष्ट शब्दों में अर्थ यह है कि शिष्यों को सही गुरु नहीं मिल पाना क्योंकि शिष्य कच्ची मिट्टी के घड़े के समान है और कुम्भकार उसे जो रूप प्रदान करता है वह उसी ढांचे में ढल जाता है कहने का अभिप्राय यह है कि गुरु का अपने शिष्यों पर गहरा प्रभाव पड़ता है जिस प्रकार की उन्हें तालीम मिलेगी वे उसी सांचे में ढल जाएंगे तथा अपने गुरु की गायकी का ही प्रतिनिधित्व करेंगे, योग्य गुरु अपने शिष्यों को गायन संबधि सभी विकृतियों से बचाता है। अतः यदि शिष्य को सही गुरु न

मिले तो गायकी में कई अवगुण आ जाते हैं परंतु यदि गुरु योग्य, गुणी व अच्छा मार्ग दर्शक हो तो वह अपने शिष्यों को इस प्रकार तैयार करता है कि वे संगीत के क्षेत्र में नाम कमाने के साथ–साथ इसके विकास में अपना भरपूर सहयोग देते हैं।
प्रस्तुत शोध ग्रंथ में संगीत रत्न पंडित दीनानाथ मिश्र के संगीतमयी जीवन प र प्रकाश डाला गया है। इस ग्रंथ में जहाँ उनके चहुमुखी व्यक्तित्व को उभारने का प्रयास किया गया है वहीं उत्तर भारतीय संगीत में उनका योगदान, उनकी प्रारंभिक शिक्षा, गायन शैली, घराना, संगीत सम्मेलन तथा देश–विदेश में दिए गए विभिन्न कार्यक्रमों की समीक्षा भी की गयी है।

मैंने इस ग्रंथ को व्यवस्थित रूप देने के लिए आठ अध्याय में विभाजित किया है जिससे यह ग्रन्थ क्रमबद्ध तरीके से अपनी गति को प्राप्त कर सके तथा पाठकों को इसका सही दृष्टि से विश्लेषण एवं आलोचना करने में सहायता मिल सके व यह अधिक से अधिक उपयोगी ग्रन्थ के रूप में सिद्ध हो सके।

प्रथम अध्याय में उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का उद्भव एवं विकास तथा भारतीय शास्त्रीय गायक कलाकारों का विवेचन किया गया है। इस अध्याय में संगीत में घरानों के महत्व, प्रमुख घराने तथा उनकी विशेषताओं और गायन शैली का विस्तार से विवरण किया गया है। इस अध्याय में पंडित जी पर शोध करने के उद्देश्य तथा उनके गायन के शोध कार्य की समीक्षा भी की गई है।

द्वितीय अध्याय में संगीत रत्न पंडित दीनानाथ मिश्र के जन्म एवं बाल्यकाल का वर्णन करते हुए उनके वंश का परिचय दिया गया है। साथ ही उनके प्रारंभिक जीवन, स्कूली शिक्षा एवं पारिवारिक स्थिति तथा परिवार में संगीत के वातावरण के बारे में बताते हुए उनके स्वभाव, उनका रहन–सहन एवं भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति उनके जीवन दर्शन का विस्तार से वर्णन मिलता है। इसी अध्याय में पंडित जी की विभिन्न रुचियों की जानकारी भी हमें प्राप्त होती है।

तृतीय अध्याय में पंडित जी की गायन शैली पर अन्य कलाकारों के प्रभाव के बारे में विस्तार से समझाया गया है इसके साथ ही पंडित जी की प्रारंभिक गायन शिक्षा एवं उनके गुरुजनों के बारे में बताया गया है। इस अध्याय में पंडित जी की संगीत के प्रति जिज्ञासा एवं संगीत को आत्मसात करने के गुणों का पता चलता है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत मैंने ख़्याल गायकी के घरानों का विवेचन करते हुए बनारस व पटियाला घराने का स्थान निरूपित किया है। दीनपिया उपनाम से बनी

पंडित जी की बंदिशों एवं नवीन रचनाओं पर भी प्रकाश डाला है। इसी अध्याय में विभिन्न गायन शैलियों का संक्षिप्त विवरण भी मिलता है व गायन शैली की परंपरा में बनारस व पटियाला घराने का तथा इन घरानों से जुड़े कलाकारों का भी विवेचन किया है।

पंचम अध्याय में पंडित जी की गायन शैली का अन्य गायन शैलियों से तुलनात्मक अध्ययन का समावेश किया गया है साथ ही समकालीन गायकों से तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर गायन की विशेषताओं को भी विस्तार से समझाया गया है।

षष्टम अध्याय के अंतर्गत पंडित जी के गायन कार्यक्रम जैसे दूरदर्शन केन्द्रों पर कार्यक्रम, अन्यत्र भारत में यात्राएँ एवं कार्यक्रम, विदेशों में गायन का प्रचार–प्रसार हेतु कार्यक्रम व उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है।

सप्तम अध्याय में पंडित जी के द्वारा सांस्कृतिक धरोहर का प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण के अंतर्गत भारतीय एवं विदेशी विद्यार्थी तथा देश–विदेश में उनके कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ व अन्य तत्वों जैसे वेबसाईट, सी.डी, विडियो क्लिप्स एवं साहित्य को उजागर किया गया है।

अष्टम अध्याय के अंतर्गत पंडित जी के द्वारा शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों में उनके मौलिक चिंतन एवं मान्यताओं का विवेचन किया गया है।

यद्यपि किसी भी शोध ग्रंथ को लिखने का दायित्व किसी एक व्यक्ति का होता है किंतु मुझे यह मानने में किसी भी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं है कि इस कार्य को पूर्ण रूप देने के लिए मुझे अन्य कई व्यक्तियों की सहायता लेनी पड़ी। मेरा मानना है कि इन लागों की सहायता के बिना यह कार्य अधूरा रहता। अतः मेरा दायित्व बनता है कि इस कार्य की अवधि के दौरान जिन–जिन व्यक्तियों ने इस शोध ग्रंथ को अंतिम रूप देने में मेरी सहायता की उनका मैं हृदय से आभार प्रकट करूँ।

डॉ.निशि माथुर संगीत विभागाध्यक्ष, जानकी देवी बजाज राजकीय कन्या महाविद्यालय, कोटा राजस्थान, जिन्होंने मुझे विशेष अभ्यर्थी के रूप में शोध कार्य करने में मेरी पूरी मदद की। जब भी मैं आपके पास इस शोध से संबंधित अपनी कोई समस्या लेकर गई तब व्यस्तता होने के बावजूद आपने स्नेह पूर्वक मेरी समस्याओं को सुनकर उसका सरल समाधान बताकर मुझे अपना भरपूर सहयोग प्रदान किया।

हाल ही में 9 सितम्बर 2014 को भारतेंदु समिति द्वारा भारतेंदु हरीशचन्द्र जी की 164 वीं जयंती के अवसर पर आपको **''साहित्य श्री''**पुरस्कार से नवाज़ा गया है। अतः मैं इनके प्रति सदैव आभारी रहूँगी।

मैं आभारी हूँ स्वयं पंडित दीनानाथ मिश्र जी की जिन्होंने इस शोध कार्य में आई सभी छोटी–बड़ी समस्याओं का समाधान कर परिणाम प्राप्त करने में मुझे पूर्ण सहयोग दिया। मैं जब–जब आप से रूबरू मिलने गई तब–तब एक परिवार की भांति आपने मेरी संपूर्ण जिज्ञासाओं का समाधान किया। आप चाहे अपने निवास स्थान पर रहे या किसी संगीत सम्मेलन में, या कहीं भ्रमण पर गए हुए हों, सदैव मोबाइल के द्वारा मेरे सम्पर्क में रहकर मेरी समस्याओं का हाथों हाथ समाधान करते रहे और इतनी व्यस्तता के बावजूद इस शोध कार्य को पूर्ण करने में मेरी सहायता की। अतः मैं आपकी इस कृपा के लिए चिरऋणी रहूँगी।

मैं पंडित जी की पत्नी श्रीमती मायादेवी, पुत्र श्री राजेश मिश्र व मंगल मिश्र तथा उनकी पुत्री श्रीमती स्नेह लता मिश्रा के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ कि उन्होंने समय–समय पर पंडित जी के विषय में विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ उपलब्ध करवाई।

मैं पंडित जी के परिवार के सभी सदस्यों के साथ–साथ उनके भाई शम्भूनाथ मिश्र, सारनाथ मिश्र, पशुपतिनाथ मिश्र, भोलानाथ मिश्र, कालीनाथ मिश्र तथा उनकी बहिनें माधुरी मिश्रा व उर्मिला मिश्रा का विशेष आभार प्रकट करना चाहूँगी कि उन्होंने इस शोध कार्य के परिणाम को प्राप्त करने में मेरी विभिन्न जिज्ञासाओं का समाधान करके मुझे सहयोग प्रदान किया।

मैं आभारी हूँ मेरे सह–शिक्षक श्रीमान कमलेश सुरोलिया का जिन्होंने मुझे सदैव शोध करने के लिए प्रेरित किया तथा इस शोध ग्रन्थ के दौरान आई सभी कठिनाइयों को दूर करके इस कार्य को पूर्ण करने में मेरी मदद की।

मैं डी.ए.वी. स्कूल अजमेर के प्रधानाचार्य श्रीमान एम. पी. सिंह की आभारी हूँ कि जिन्होंने मुझमें इस प्रतिभा को परख कर शोध कार्य करने को प्रेरित किया।

मैं आभार व्यक्त करती हूँ हमारे स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती अंजू उतरेजा जी का जिन्होंने मेरा इस कार्य को करने में हमेशा होंसला अफज़ाई की।

मैं आभारी हूँ मेरे सह–शिक्षक श्रीमान ऋषि अग्निहोत्री का जिन्होंने इस शोध ग्रन्थ के दौरान आई कम्प्यूटर सम्बन्धी सभी कार्यों को पूर्ण करने में मेरी मदद की।

अंत में, मैं अपने माता–पिता, भाई–बहन एवं परिवार के सभी सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ , जिन्होंने अपने स्नेह का सहारा देकर मुझे इस कार्य को करने में अपनी शक्ति प्रदान की एवं कार्य में प्रवृत्त होने की प्रेरणा दी।

इस शोध कार्य को करने में मैंने यथासंभव प्रयास किया है कि इसमें त्रुटि न हो परंतु मैं एक साधारण इंसान हूँ अतः मैं इस प्रकार का कोई दावा नहीं करती कि इसमें किसी प्रकार की कोई गलती नहीं है। सावधानियों के बाद भी किसी त्रुटि की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता अतः क्षमा ही एक ऐसा माध्यम है जो भविष्य में भूल सुधारकर उन्नति की राह पर प्रोत्साहित करता है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि विश्वविद्यालयों के तरुण छात्र इस ग्रंथ का लाभ उठा पाएँगे, इसी में मेरी सफलता है।

दिनांक–

**(मीनू मिश्रा)**

सी–8/14 उत्तम नगर गढ़ेपान,
सी.एफ.सी.एल कॉलोनी,
कोटा (राज.)
पिन–325208

# प्रथम अध्याय

## "उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का उद्‌भव व विकास के संदर्भ में"

1. संगीत में घराना
2. भारतीय शास्त्रीय गायकों का विवेचन
3. गायन शोध कार्य की समीक्षा
4 अध्ययन के उद्‌देश्य

# प्रथम अध्याय

## उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का उद्‌भव

संगीत मानव जीवन को मधुर बनाता है और जीवन की शुभ घड़ियों में आनंद बढ़ाता है। संगीत केवल कर्णप्रिय ही नहीं अपितु हृदय को धैर्य तथा आनंद देने वाला होता है। इसका वास्तविक और यथार्थ प्रभाव अनंत होता है। इसके प्रभाव से अनेक आत्माओं को सांसारिक समस्याओं और मानसिक परेशानियों से छुटकारा मिल जाता है। यदि व्यापक दृष्टि से देखा जाए तो संगीत संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त है। भारत के समस्त त्योहारों में ,संस्कारों में संगीत एक अनिवार्य अंग बन गया है। संगीत का मानव जीवन में बड़ा महत्व है। 'आज़ादी की लड़ाई में राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत गीत गाकर परतंत्र भारत को स्वतंत्र कराने में वंदे मातरम् जैसे गीतों को कौन नकार सकता है। संगीत जहाँ हमारे आध्यात्मिक, धार्मिक जीवन का सहयोगी है वहीं संगीत द्वारा हमारे दैनिक जीवन की चिंताएँ दूर होकर हमें संगीत श्रवण से उत्साह प्राप्त होता है। '[1] चिकित्सा के क्षेत्र में भी भारत सहित विश्व के अनेक देशों में संगीत को चिकित्सा का साधन स्वीकारा गया है, इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि संगीत मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है।

संगीत की उत्पत्ति के संबंध में अनेक धारणाएँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि संगीत प्रकृति से प्राप्त है। प्रकृति में पशुओं की विविध बोलियाँ, पक्षियों की चहचहाट तथा वायु की सनसनाहट आदि सम्मिलित हैं। जिस प्रकार संगीत का प्रभाव मनुष्य पर पड़ता है उसी प्रकार प्रकृति भी संगीत के प्रभाव से अछूती नहीं है। सृष्टि के कण–कण में संगीत की धारा सदियों से बहती चली आ रही है अर्थात संपूर्ण जगत ही संगीतमयी है।

---

1. डॉ. उमा शंकर शर्मा – संगीत का योगदान मानव जीवन के विकास में, पृष्ठ 144, संस्करण–2001

संगीत शब्द के अर्थ के संदर्भ में डॉक्टर सुधा श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक ''भारतीय संगीत के मूलाधार'' पृष्ठ संख्या ग्यारह में यह माना है कि संगीत कला में गीत, वाद्य और नृत्य इन तीनों का बोध होता है। इससे यह प्रमाणित होता है कि तीनों विधाओं में अंतर संबंध है और तीनों एक दूसरे पर आश्रित हैं। गायन का अस्तित्व सर्वप्रथम माना गया है क्योंकि स्वर और लय की अभिव्यक्ति मानव कंठ से सबसे पहले हुई। अतः गायन ही वादन और नृत्य का आधार है। वैसे तो संगीत का इतिहास स्वयं मनुष्य का इतिहास माना जाता है, परंतु संगीत की उत्पत्ति के विषय में अनेक विद्वानों के विभिन्न मत प्राप्त होते हैं।

अनेक विद्वानों के मतानुसार संगीत की उत्पत्ति ब्रह्मा से हुई है। हमारे ऋषियों और आचार्यों के अनुसार शिव व ब्रह्मा को संगीत का आदि आचार्य माना गया है। संगीत ही नहीं अन्य कई विद्याओं के भी यही दो आदि आचार्य माने गए हैं। इन दिव्य शक्तियों के अतिरिक्त गंधर्व, स्वर्ग के संगीतकार माने गए हैं। जिनसे मनुष्य को संगीत की प्रेरणा मिली है। संगीत शास्त्र में नारदजी गंधर्वों में से स्मरण किए गए हैं और उनकी कल्पना वीणा पर गाते हुए की गई है। वैदिक मतानुसार सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी ने इस संसार की रचना की है। संगीत की उत्पत्ति सृष्टि के साथ हुई। ब्रह्मा आनन्द स्वरूप हैं, उनके आनंद तत्व से संगीत की उत्पत्ति हुई और उसी आनंदमय तत्व का साकार रूप संगीत है जिसकी अधिष्ठात्री देवी सरस्वती मानी गयीं हैं। ब्रह्मा के चारों मुखों से चारों वेदों की उत्पति मानी गयी है– ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्वेद और सामवेद। वैदिक साहित्य से यह निश्चित होता है कि संगीत शास्त्र भी ज्ञान की ही एक शाखा है और उसका संबंध सामवेद से है। सामवेद के समस्त मंत्र गेय हैं अतः सामवेद से ही संगीत की उत्पत्ति मानी गयी है। सामवेदीय गेय पद उदात्त, अनुदात्त और स्वरित इन तीनों स्वरों में गाए जाते हैं। आचार्य पाणिनि ने कहा है, इन तीनों स्वरों के अंतर्गत सा, रे, ग, म, प, ध, नी सात स्वरों का समावेश है।

इन सब विश्वासों का सार यही है कि संगीत कला दिव्य है और दैवी शक्ति की

प्रेरणा से ही यह भूलोक पर उतरी है यहाँ तक कि भारत में जिन लोगों ने संगीत को कला के रूप में अपनाया है वे गंधर्व कहलाने लगे हैं और उनकी विद्या का नाम गांधर्व वेद और कला का नाम गांधर्व कला पड़ा। गांधर्व कला में गीत सबसे पहले प्रधान रहा है। आदि में गान की उत्पत्ति मानी गयी है, उसके पश्चात् वाद्य का निर्माण हुआ। गीत को प्रधान माना गया है, यही कारण है कि चाहे गीत हो या वाद्य हो, सबका नाम ''संगीत'' पड़ गया। दामोदर पंडित ने सात स्वरों की उत्पत्ति पशु पक्षियों द्वारा इस प्रकार बतायी है– मोर से षड्ज, चातक से ऋषभ, बकरा से गंधार, कौआ से मध्यम, कोयल से पंचम, मेंढक से धैवत, हाथी से निषाद स्वर की उत्पत्ति हुई।

राम अवतार वीर की पुस्तक ''भारतीय संगीत का इतिहास'' पृष्ठ संख्या उन्नीस के अनुसार आर्य लोगों को संगीत का ज्ञान आदि काल से था। वे इसे आत्मा व परमात्मा का संयोग करने वाली श्रृंखला मानते थे उनके धर्म ग्रंथ कवित्त के रूप में थे। उन धर्म ग्रंथों की कविताओं पर परमेश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए नित्य प्रति गायन होता था। जैन और बौद्ध धर्म को मानने वाले भी गायन किया करते थे। इसाई लोग भी संगीत के प्रशंसक हैं, वे गिरिजाघरों में गायन द्वारा ईश वंदना करते हैं। मुस्लिम देशों में भी अनेक संगीतज्ञों ने अपने देश का सामाजिक व सांस्कृतिक स्तर उन्नत किया। यहाँ तक भारत देश में अमीर खुसरो व तानसेन जैसे कलाकारों ने भारतीय संगीत के नभमण्डल पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

भारतीय संगीत के इतिहास को निम्नांकित भागों में बाँटा गया है –

(1) (वैदिक काल) अतिप्राचीन काल – 2000 ईसा पूर्व से 1000 ईसा पूर्व तक

(2) प्राचीन काल – 1000 ईसा पूर्व से सन 800 ई. तक

(3) मध्यकाल (मुस्लिम काल) – 800 ई. से 1800 ई. तक

(4) आधुनिक काल (अंग्रेजी शासन काल) – 1800 ई. से आज तक।

## (1) अति प्राचीन काल (वैदिक काल) –

इस काल में संगीत का प्रचार था, इसके हमें कई प्रमाण मिलते हैं जैसे ऋग्वेद में वीणा, वंशी, डमरू आदि वाद्य यंत्रों का भली प्रकार उल्लेख मिलता है और सामवेद तो संगीतमयी है ही। सामगान में तीन स्वरों का प्रयोग होता था जिनको उदात्त, अनुदात्त और स्वरित कहते थे। इसी काल में एक–एक करके स्वर बढ़ते गए और तीन स्वरों से सप्त स्वरों में बदल गए और सामगान सप्त स्वरों में होने लगा। वैदिक काल में ही गायन के साथ नृत्य कला भी प्रचलित थी इसके प्रमाण हमें कई नृत्य करती प्राचीन मूर्तियों से मिलते हैं। देवताओं द्वारा सोमरस पान करके नृत्य करने की प्रथा से भी संगीत और नृत्य की प्राचीनता के प्रमाण मिलते हैं।

## (2) प्राचीन काल –

' इस काल का पूर्वार्द्ध भाग पौराणिक और बौद्ध काल के अंतर्गत आता है। इस काल में भी संगीत का काफी प्रचार था परंतु इसके सही प्रमाण नहीं मिलते।

महाकवि कालीदास – इसी काल में महाकवि कालिदास (400 ई.) ने संगीत और कविता का चारों ओर प्रचार किया। उन्होंने अपनी रचनाओं में संगीत का पुट देकर आश्चर्यजनक प्रगति की।

### रामायण और महाभारत –

हमारे प्रसिद्ध ग्रंथ रामायण और महाभारत भी इसी काल में लिखे गए। रामायण

में रावण को संगीत शास्त्र का प्रकांड विद्वान बताया गया है। रामायण में ही एक वर्णन के अनुसार जब लक्ष्मण जी सुग्रीव के अंतःपुर में प्रवेश करते हैं, तो वहाँ वीणा वादन के साथ शुद्ध गायन सुनते हैं। इसी प्रकार महाभारत में भी सात स्वरों व गंधार ग्राम का वर्णन मिलता है। भेरी, दुन्दुभी, मृदंग, घट, डिमडिम, शंख, घंटा आदि वाद्य यंत्रों के स्पष्ट नाम महाभारत में मिलते हैं। वीणा, वेणु और मृदंग इन तीनों वाद्यों की संगति का प्रमाण महाभारत में उपलब्ध है। अतः इस काल में इन तीनों वाद्यों को सबसे अधिक लोकप्रिय, प्रसिद्ध तथा प्रमुख वाद्य माना गया है। इन सभी प्रमाणों से यह स्पष्ट होता है कि हमारे दोनों ग्रंथों– रामायण और महाभारत काल में भी संगीत कला प्रचार में रही। '[1]

**पाणिनि का अष्टाध्यायी –** ' पाणिनी की अष्टाध्यायी संस्कृत साहित्य की अमूल्य कृति है, जिसमें वैदिक संगीत के संबंध में निम्न सामग्री प्राप्त होती है। पाणिनी ने समकालीन साहित्य का वर्गीकरण दो विधाओं में किया है– (क) दृष्ट तथा (ख) प्रोक्त। प्रथम के अंतर्गत प्रत्यक्ष सामों का समावेश करते हैं तथा द्वितीय के अंतर्गत साम के चरणों एवं ब्राह्मणों का।'[2] 'काल की दृष्टि से देखा जाए तो पाणिनि का काल लिखित पुराणों के काल से पूर्व का है। अष्टाध्यायी में गीति, गेय, गायन, नर्तक, और परिवादक का उल्लेख आया है। यहाँ संगीत को एक शिल्प माना जाता था प्राचीन समय में कला के स्थान में शिल्प का ही अधिक प्रयोग था। अष्टाध्यायी के नट सूत्रों से पता चलता है कि नाट्य की उस समय तक पर्याप्त उन्नति हो चुकी थी। पाणिनी ने कई नट सूत्रकार गिनाए हैं, किंतु उसमें भरत का नाम नहीं लिया है जिससे प्रतीत होता है कि उस समय तक भरत की नाट्यशास्त्र की रचना नहीं हुई थी। '[3]

**जैन बौद्ध वाङ्मय में संगीत**– ' बौद्ध और जैन संस्कृतियाँ समसामयिक रहीं हैं। उपर्युक्त काल के जैन तथा बौद्ध ग्रंथों से हमें यह सामग्री प्राप्त होती है।

---

1. तुलसीराम देवांगन – भारतीय संगीत शास्त्र, पृष्ठ 81, संस्करण–1997
2. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे – भारतीय संगीत का इतिहास , पृष्ठ 165, संस्करण–1994
3. ठाकुर जयदेव सिंह – भारतीय संगीत का इतिहास , पृष्ठ 228, संस्करण–1994

बौद्ध धर्म का महायान एक प्रसिद्ध ग्रंथ है, जिसमें बौद्ध धर्म में व्याप्त संगीत का विस्तार रूप दिखाई पड़ता है।'[1] जैन ग्रंथों में संगीत संबंधी सामग्री जो उपलब्ध हैं, वे निम्नलिखित हैं –

' स्थानांग सूत्र, रायपसेणइयसुत्त, वसुदेवहिंडि, आयार, सूयगडंग, निसीह, अणुओगदार, कम्प जीवाजीवाभिगम, अंगविज्जा ये सब इसी काल के ग्रंथ हैं। '[2]

इस प्रकार बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म के साहित्यों से हमें यह पता चलता है कि इस काल में संगीत का प्रचुर मात्रा में विकास हुआ तथा संगीत को बौद्ध और जैन दोनों धर्मावलम्बियों ने अपनाया और संगीत का प्रचार–प्रसार किया।

**भरत का नाट्यशास्त्र** –

' प्राचीन काल से नाट्य संगीत का अपना एक विशेष महत्व रहा है। भरतकालीन नाट्य में गांधर्व का अनिवार्य स्थान रहा है अर्थात भरतकालीन नाट्यों में ईश्वर स्तुति में या मंगलाचरण के रूप में संगीतमयी ईश्वर आराधना किए जाने का प्रचलन था। नाट्य की रचना करते समय जिन देवताओं की आराधना की जाती है, उनमें नारद, तम्बूरू, विश्वावसु जैसे गंधर्वाचार्यो का समावेश है, जिनका अभिप्राय यह हो सकता है कि नाट्यान्तर्गत संगीत में सफलता प्राप्त हो। नाट्य की आरंभिक अवस्था से लेकर अंत तक संगीत का प्रयोग बराबर होता रहा है। नाट्य के अंतर्गत ध्रुवा नामक गीतों का विशिष्ट स्थान है। नाट्य में चार गीतियों का प्रयोग विहित है – मागधी, अर्धमागधी, संभाविता, तथा पृथुला। विद्वानों द्वारा इस ग्रंथ की रचना के विषय में विभिन्न मत हैं, किन्तु इसकी रचना को लेकर पाँचवी शताब्दी के समय पर अधिकांश विद्वान सहमत हैं। '[3] 'भरतकालीन समय में नाटक और संगीत को अलग–अलग नहीं माना जाता था, सभी एक दूसरे के पूरक थे तथा इस शास्त्र में गायन पद्धति की अनेक विधाएँ एवं श्रुति, स्वर, जाति राग, अलंकार, मूर्च्छना, आरोह, अवरोह, तिरोभाव गीत, वाद्य आदि का वर्णन मिलता है। नाट्य शास्त्र के छः अध्यायों में निम्नलिखित सामग्री पायी जाती

---

1. ठाकुर जयदेव सिंह – भारतीय संगीत का इतिहास , पृष्ठ 239, संस्करण–1994
2. वही, पृष्ठ 246
3. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे – भारतीय संगीत का इतिहास , पृष्ठ 283, संस्करण–1994

है, ग्राम के आधार पर भरत ने मध्यम और षड़ज ग्राम का ही वर्णन किया है। षड़ज ग्राम की सात और मध्यम ग्राम की ग्यारह कुल अट्ठारह जातियाँ हैं। अट्ठारह जातियों को पुनः दो भागों में विभाजित किया गया है– शुद्ध और विकृत। शुद्ध जातियाँ सात हैं और विकृत जातियाँ ग्यारह हैं।'[1]

'जाति के दस लक्षण माने गए हैं – ग्रह, अंश, ताल, मंद्र, न्यास, अपन्यास, अल्पत्व, बहुत्व, षाड़त्व, औड़त्व। केवल काकली निषाद और अंतर गंधार विकृत स्वर माने गए हैं। वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी का भी वर्णन किया गया है। संवादी स्वरों की दूरी नौ अथवा तेरह श्रुतियों की तथा विवादी स्वरों की दूरी बीस श्रुतियों की मानी गयी है। सा, म और प की चार–चार, ग और नि की दो–दो, रे तथा ध की तीन–तीन श्रुतियाँ मानी गयी हैं।'[2]

नाट्य शास्त्र के बाद दत्तिल, कोहल, विशाखिल आदि के ग्रंथ भी संगीत के विकास को समझने के लिए महत्वपूर्ण माने गए हैं। नाट्यशास्त्र में कुछ अंश जो अधूरे या खंडित हो गए हैं उनकी पूर्ति इन ग्रंथों द्वारा की जा सकती है।

### मतंग का बृहदेशी ग्रंथ –

'भरत के नाट्यशास्त्र के पश्चात् मतंग के बृहदेशी ग्रंथ को महत्वपूर्ण माना गया है। इस ग्रंथ में ग्राम व मूर्च्छना का विस्तृत उल्लेख मिलता है। राग शब्द का सर्वप्रथम विवेचन इसी ग्रंथ में मिलता है और आज राग का कितना महत्व है यह किसी से छिपा नहीं है। इसका एक अन्य महत्व यह है कि इसमें ऐसे अनेक संगीतज्ञों के विचारों का संग्रह है जिनकी कृतियाँ आज उपलब्ध नहीं हैं, जैसे तुम्बरू, दुर्गशक्ति, दत्तिल, कोहल, नन्दिकेश्वर विशाखिल तथा कश्यप।'[3]

### मध्यकाल –

मध्यकाल को हम मुस्लिम काल भी कहते हैं। इस युग को ग्यारहवीं–बारहवीं

---

1. हरीशचंद्र श्रीवास्तव – राग परिचय भाग 3, पृष्ठ 167, संस्करण–1992
2. तुलसीराम देवांगन – भारतीय संगीत शास्त्र, पृष्ठ 100, संस्करण–1997
3. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे – संगीत बोध, पृष्ठ 16, संस्करण–1992

शताब्दी से आँका गया है। मुसलमानों का आगमन ग्यारहवीं शताब्दी में हुआ उस समय भारतवर्ष अनेक छोटे–छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। इसी काल में भारतीय संगीत में परिवर्तन प्रारंभ हुआ। मुसलमानों ने नए–नए रागों का अविष्कार किया व अनेकों प्रकार के संगीत वाद्यों का भी अविष्कार हुआ और मुस्लिम बादशाहों द्वारा संगीतज्ञों एवं वादकों को काफी आदर व सम्मान प्राप्त हुआ।

'अकबर काल को संगीत के इतिहास में स्वर्णयुग कहा जाता है, वहीं औरंगजेब को संगीत के इतिहास में संगीत का शत्रु कहा गया है। विद्वानों के मतानुसार बारहवीं शताब्दी में संगीत की दशा कोई विशेष अच्छी नहीं थी, क्योंकि इसी काल में मुहम्मद गौरी तथा मुसलमानों द्वारा हिंदू राजाओं से युद्ध होता रहा जिसका असर संगीत पर भी पड़ा और संगीत के प्रचार–प्रसार के मार्ग में कई बाधाएँ आयीं।

**राजा भोज –**

राजा भोज का अभ्युदय ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में माना गया है। वे अत्यंत विलक्षण एवं उच्च कोटि के संगीत विद्वान एवं संगीत रसिक थे। उन्होंने सरस्वती कण्ठ भरण व श्रृंगार प्रकाश नामक दो ग्रंथों की रचनाएँ की।

**अभिनव गुप्त –**

अभिनव गुप्त का अभ्युदय ग्यारहवीं शताब्दी के अंत में माना गया है। उन्होंने अलंकार शास्त्र पर लोचन व अभिनव भारती नामक दो ग्रंथों की रचना की।

**सोमेश्वर –**

चालुक्य वंशीय राजा व उच्चकोटि के संगीतज्ञ शास्त्री सोमेश्वर (1127–1137) संभवतः तृतीय सोमेश्वर थे। इन्होंने अभिलाषा चिंतामणि नामक ग्रंथ की रचना की।

## जयदेव –

विश्व विख्यात गायक कवि जयदेव गोस्वामी (बारहवीं शताब्दी) का जन्म भूल जिले के केन्दुला गाँव में हुआ था। उनके द्वारा संस्कृत में रचित पुस्तक गीत गोविन्द, पयार व त्रिपदी (चतुर्दश व आठ अक्षर युक्त) छंद तथा पद विन्यास, अनुपम सौन्दर्य व माधुर्य के लिए जनप्रिय हुई थी।'[1]

## शारंगदेव–

' मध्यकालीन संगीत के सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ संगीत रत्नाकर के लेखक पंडित शारंगदेव के वंशज कश्मीर के याज्ञिक ब्राह्मण थे। मुसलमानों के अत्याचार के कारण वे दक्षिण भारत चले गए। उनके द्वारा रचित संगीत रत्नाकर ग्रंथ, स्वराध्याय, रागाध्याय, प्रकीर्णाध्याय, प्रबंधाध्याय, वाद्याध्याय, तालाध्याय, नृत्याध्याय इन सात परिछेदों में विभक्त हैं। शारंगदेव संगीत के लक्ष्य और लक्षण दोनों में पारंगत थे। संगीत शास्त्र और कला, दोनों में पारंगत होने के कारण इनका ग्रंथ मध्यकालीन भारतीय संगीत के लिए प्रामाणिक ग्रंथ बन गया। आज भारत में प्रचलित हिन्दुस्तानी संगीत तथा दक्षिणात्य संगीत दोनों पद्धतियों में इनको समान रूप से आदर दिया जाता है। '[2]

## पार्श्वदेव–

' तेरहवीं शताब्दी में पार्श्वदेव ने संगीत समयसार की रचना की जो कि प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। पार्श्वदेव के ग्रंथों की यह विशेषता है कि उनमें संगीत की विभिन्न विधाओं के अतिरिक्त विविध मंगलगान, भक्तिगान, हास्यगान तथा अनेक प्रकार की अलाप्तियों का परिचय दिया है। उन्होंने अपने ग्रंथों में एक सौ दो रागों का उल्लेख किया है जिन्होंने संगीत के विकास की धारा को प्रवाहित किया है।

---

1. अमलदाश शर्मा – विश्वसंगीत का इतिहास, पृष्ठ 30, संस्करण–1990
2. वही, पृष्ठ 31

## अमीर खुसरो –

(1253–1324) अमीर खुसरो का जन्म उत्तर काल के इटावा जिले के पटियाली गाँव में हुआ था। खुसरो असाधारण प्रतिभा के धनी थे एवं फारसी, अरबी, तुर्की, बृज भाषा आदि के सुपंडित तथा उच्च कोटि के कलाकार थे। अमीर खुसरो, अलाऊद्दीन खिलजी के दरबारी गायक थे व ईरानी संगीत के आचार्य थे।

ख़्याल पद्धति के अविष्कार का श्रेय भी अमीर खुसरो को ही जाता है। दिल्ली घराने के विख्यात गायक उस्ताद चाँद खाँ ने कई प्रमाण देकर अमीर खुसरो के ख़्याल के अविष्कर्ता होने को सर्वसन्मत माना है।'[1]

## लोचन –

' पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध ग्रंथ राग तरंगिणी का हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में विशेष महत्व है। कुछ विद्वान इनको ईसवी बारह का मानते हैं और कुछ सोलह–सत्रह का मानने के पक्ष में हैं।

इनके दूसरे ग्रंथ राग संगीत में इन्होंने मेल के लिए थाट संज्ञा दी है और भैरवी को शुद्ध थाट माना है। उत्तरी संगीत में प्रचलित स्वरों को कोमल तथा तीव्र जैसी संज्ञाएँ सर्वप्रथम इन्हीं ग्रंथों में पायी जाती हैं। '[2]

## कल्लिनाथ –

'1456 – 1457 ई. के लगभग संगीत के सुप्रसिद्ध पंडित कल्लिनाथ विजयनगर के राजा के दरबारी गायक थे। इन्होंने शारंगदेव द्वारा लिखी हुई संगीत रत्नाकर की टीका को कसौटी पर कसते हुए अपने शब्दों में लिखा।

---

1. डॉ. सुरेश गोपाल श्रीखण्डे– हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा प्रणाली, पृष्ठ 27, संस्करण–1993
2. डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे – संगीत बोध, पृष्ठ 18, संस्करण–1992

**रामामात्य –**

सन् 1550 ई.के लगभग स्वर मेल कलानिधि का लेखन रामामात्य द्वारा किया गया इस ग्रंथ में रामामात्य ने अनेक रागों का वर्णन किया है। विजय नगर के सम्राट राम राज के शाषक थे, उन्हीं की इच्छा के अनुसार रामामात्य ने इस ग्रंथ का निर्माण किया।

**अकबर –**

सोलहवीं शताब्दी को संगीत का स्वर्ण युग माना गया है। यह बादशाह अकबर का समय था उनके दरबार में छत्तीस संगीत कलाकार थे। अपने दरबार के नवरत्नों में संगीतज्ञ तानसेन को शामिल करने से अकबर की संगीत के प्रति अनुरागता व उदारता सिद्ध होती है साथ ही संगीत के गौरव की वृद्धि करती है।

कहा जाता है कि तानसेन के गुरु स्वामी हरिदास का गायन सुनने अकबर साधारण नागरिक की वेशभूषा में उनकी कुटिया तक पहुँच गया। अच्छे कलाकारों को सम्मान देना व उनके मध्य प्रतियोगिताएँ आयोजित करवाना तथा अच्छे संगीतकारों को संगीतमय वातावरण उपलब्ध करवाना, अकबर का संगीत के प्रति श्रद्धा भाव प्रकट करता है।

स्वामी हरिदास के कई शिष्य, जिनमें बैजूबावरा एवं रामदास प्रमुख हैं। संगीत के विकास में कई रागों का अविष्कार करके तानसेन ने अपना विशेष योगदान दिया है। इनके द्वारा बनाई गई नवीन रागों में दरबारी कान्हड़ा, मियाँ मल्हार, मियाँ की सारंग आदि रागों के नाम उल्लेखनीय हैं। "[1]

---

1. डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे – संगीत बोध , पृष्ठ 18, संस्करण–1992

## मानसिंह तोमर –

'अकबर के समय से ही सुप्रसिद्ध ग्वालियर घराना चालू हुआ जिसके प्रणेता ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर को माना जाता है। मानसिंह तोमर के समय में ध्रुपद ने अपना विकास किया। राजा मानसिंह ने युग की आवश्यकता को समझकर ध्रुपद को लोकभाषा दी। ध्रुपद के अंग हैं, स्थायी–अंतरा– संचारी– अभोग। राजा मानसिंह द्वारा ध्रुपद का प्रवर्तन तत्कालीन उस्ताद बक्शू, मच्चु, भानु आदि की सहायता द्वारा किया।'[1]

## सूर, कबीर, तुलसी, मीरा –

'मध्यकाल में संगीत और भक्ति की धारा प्रवाह रूप से बही अर्थात सोलहवीं शताब्दी में सूर, कबीर, तुलसी आदि की पद्यात्मक कृतियों का संगीतमय गायन का प्रचलन बढ़ा। संगीत और भक्ति के समन्वय आमजन के हृदय का केन्द्र बन चुका था। भक्तिभाव से ओत प्रोत सांगीतिक रचनाएँ जनमानस के हृदय को छूने लगी। अतः संगीत के विकास दृष्टि से यह समय अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। '[2]

## पुण्डरीक विठ्ठल (1590) –

'कर्नाटक शैली के प्रसिद्ध संगीत ग्रंथी पंडित पुण्डरीक विठ्ठल का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। वे अधिकतर उत्तर भारत में रहे, परंतु दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत पर नई–नई जानकारियाँ निर्मित करते रहे। उनकी चार कृतियाँ प्रसिद्ध हैं, जो तत्कालीन उत्तर भारतीय संगीत पर प्रकाश डालती हैं – (क) राग माला, (ख) राग मंजरी, (ग) सद्राग–चंद्रोदय, (घ) नर्तन निर्णय। इनमें उत्तर तथा दक्षिण दोनों विचारों का समन्वय है। राग वर्गीकरण के लिए राग रागीनि तथा मेल राग दोनों पद्धतियाँ उन्हें मान्य थीं। दक्षिण का मुखारी मेल उनका शुद्ध स्वर मेल है।

---

1. रवीन्द्र नाथ बहोरे – भारतीय संगीत विमर्श , पृष्ठ 20, संस्करण–2005
2. वही

उनके समय तक कुछ फारसी राग भी भारतीय संगीत में सम्मिलित हो चुके थे। सम्राट अकबर के संपर्क में आने पर उन्होंने नर्तन निर्णय की रचना की।'[1]

### सोमनाथ –

'1605 ई. से 1627 ई. तक जहाँगीर का राज्य रहा। इसी शासन काल में दक्षिण भारत के राजमुन्दी स्थान निवासी पंडित सोमनाथ ने संगीत ग्रंथ राग विबोध लिखा।

### पंडित दामोदर –

जहाँगीर के समय में ही हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति पर 1625 ई. में संगीत दर्पण नामक ग्रंथ का निर्माण पंडित दामोदर ने किया। इसमें संगीत रत्नाकर के भी बहुत से श्लोक कुछ परिवर्तन के साथ मिलते हैं। '[2]

### पंडित व्यंकटमुखी (1620) –

'जिस प्रकार संस्कृत साहित्य के रचनाकार पाणीनि ने संस्कृत व्याकरण को एक व्यवस्थित रूप प्रदान किया उसी प्रकार व्यंकटमुखी ने वर्तमान में प्रचलित रागों एवं भविष्य में उत्पन्न होने वाली नई रागों को व्यवस्थित रूप में बनाए रखने की व्यवस्था प्रदान की। इन्होंने चतुर्दण्डिप्रकाशिका नाम के ग्रंथ की रचना करके बहत्तर मेलों की कल्पना की। इनके अनुसार प्रत्येक सप्तक में बारह स्वर मान लेने के पश्चात् संसार में ऐसा कोई राग सम्भव नहीं है जो इन बहत्तर मेलों में से किसी एक के अंतर्गत न रखा जा सके। '[3]

### अहोबल –

'1650 के लगभग पंडित अहोबल ने संगीत पारिजात नामक ग्रंथ की

---

1. डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे – संगीत बोध, पृष्ठ 18, संस्करण–1992
2. अमल दास शर्मा – विश्व संगीत का इतिहास , पृष्ठ 32, संस्करण–1990
3. वही

रचना की यह ग्रंथ उत्तर भारतीय एवं दक्षिण भारतीय संगीत की दोनों शैलियों के लिए उपयोगी है। तेरहवीं सदी के पूर्व उत्तर और दक्षिण भारत में एक ही शैली का प्रचलन था, यह विभाजन तेरहवीं सदी के बाद ही सामने आया है। अहोबल ने काफी थाट को मुख्य मानते हुए वीणान्तार की लंबाई पर स्वर स्थान निश्चित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। इस ग्रंथ में इन्होंने अनेक रागों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। '[1]

### हृदयनारायण देव –

'संगीत परिजात के पश्चात् स्वरों की स्थापना के आधार पंडित हृदयनारायण देव द्वारा रचित हृदयकौतुक और हृदयप्रकाश ग्रंथों की रचना हुई। इन दोनों ही ग्रंथों का आधार पंडित अहोबल द्वारा रचित संगीत परिजात ग्रंथ था। पंडित अहोबल ने वीणा के तार पर जिस प्रकार काफी थाट को आधार मानकर रागश्री के माध्यम से स्वरों की स्थापना की, उसी की विस्तार पूर्वक व्याख्या करते हुए हृदयनारायण देव ने अपने इन दोनों ग्रंथों की रचना की।

### भावभट्ट –

अहोबल के ही समकालीन ग्रंथकार श्री भावभट्ट ने पूर्ववर्ती ग्रंथों के आधार पर तीन ग्रंथों की रचनाएँ की – (क) अनूपविलास (ख) अनूपसंगीतरत्नाकर (ग) अनूपांकुश। इनके पिता शाहजहाँ की सभा में थे तथा ये स्वयं बीकानेर के राजा अनूपसिंह के दरबार में रहे। '[2]

### सदारंग अदारंग –

'अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मोहम्मद शाह रंगीले के दरबारी गायक सदारंग अदारंग प्रमुख गायक थे। जिनके ख़्याल आज भी प्रचलित हैं। यह स्पष्ट है कि उन्होंने अपने आश्रयदाता के नाम को अमर करने के लिए ऐसी रचनाएँ की जिनमें रचनाकार

---

1. अमल दास शर्मा – विश्व संगीत का इतिहास , पृष्ठ 32–33 , संस्करण–1990
2. वही

का नाम न होकर केवल मोहम्मद शाह रंगीले ही मिलता है तथा अधिकांश रचनाओं में गायकों के नाम के साथ–साथ मोहम्मद शाह सदा रंगीले नाम भी मिलता है। ध्रुपद गायकी इस युग की प्रमुख गायकी मानी जाती थी परंतु इतनी अधिक संख्या में रचित ख़्याल की बंदिशों ने यह सिद्ध कर दिया कि इनके समय में ख़्याल गायन भी अपनी लोकप्रियता प्राप्त कर चुका था।'[1]

### श्रीनिवास –

'अठारहवीं शताब्दी में श्रीनिवास ने अहोबल के समान सात शुद्ध एवं पाँच विकृत स्वरों की वीणा के तार पर स्थापना की। श्रीनिवास ने यह स्वीकार किया कि वीणा के खुले तार से षड़ज स्वर निकलता है उनके स्वरों की स्थापना किए जाने वाले तार की लंबाई छत्तीस इंच थी। यह मुसलमानों का राज्य धीरे–धीरे समाप्त होकर अंग्रेजों का वर्चस्व बढ़ने का काल था। श्रीनिवास ने इस संदर्भ में जो पुस्तक लिखी उसमें विभिन्न रागों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए उनका विस्तार पूर्वक वर्णन किया श्रीनिवास कृत राग तत्व विबोध संगीत के इतिहास एवं स्वरों की स्थापना को समझने का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है।'[2]

### आधुनिक काल –

अंग्रेजी साम्राज्य के प्रारंभ से लेकर आज तक के काल को आधुनिक काल माना जाता है। हम इसे संगीत के विकास की दृष्टि से दो भागों में विभक्त कर सकते हैं–

**(क) ब्रिटिश काल** **(ख) भारतीय स्वाधीनता संग्राम काल**

ब्रिटिश काल में संगीत का विकास न के बराबर हुआ। लोग संगीत को हेय दृष्टि से देखते थे, अच्छे घरों में संगीत का होना ठीक नहीं समझा जाता था। संगीत समाज की बाज़ारू औरतों के घरों में पनपने लगा, जिससे सभ्य समाज ने संगीत से दूरियाँ

---

1. अमल दास शर्मा – विश्व संगीत का इतिहास , पृष्ठ 34 , संस्करण–1990
2. वही

बनाना प्रारंभ कर दिया। इस काल में वैश्याओं का संगीत कला पर व्यावस्यायिक रूप से अधिकार हो चुका था। लोग इनके घरों पर संगीत के मनोरंजन हेतु जाने लगे परंतु अपने बच्चों को संगीत कला से दूर रखने लगे। परंतु इस समय में भी कुछ विद्वान व मनीषी लोगों के कठिन परिश्रम से संगीत अपना वर्चस्व बचाए रखने में समर्थ रह सका। 'इस समय के मनीषियों में पंडित विष्णु नारायण भातखंडे, महाराज गायकवाड़, राजा सर सौरीन्द्रमोन ठाकुर के नाम उल्लेखनीय हैं, जिनके अथक परिश्रम से भारतीय संगीत धीरे–धीरे फिर से जनप्रिय होने लगा। इसी संदर्भ में प्राचीन संगीत के प्रचार–प्रसार के प्रयास हेतु बंगाल व कोलकाता के ठाकुर परिवारों का सहयोग भी नकारा नहीं जा सकता। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में लाहौर पंजाब का प्रमुख संगीत केन्द्र बन गया। जनसाधारण के मनोरंजन का एकमात्र साधन संगीत ही था, लेकिन इसके एकमात्र धारक पेशेवर लोग ही थे। इसी काल में संगीत के उद्धार और प्रचार का श्रेय भारत की दो महान विभूतियों को जाता है। पंडित विष्णु दिगबंर पलुस्कर व पंडित विष्णु नारायण भातखंडे। '[1]

'इनके पूर्व संगीत विभिन्न घरानों की धरोहर बन गया था। उस्ताद लोग केवल अपने पुत्र व निकट संबंधी को ही संगीत शिक्षा देते थे। सामान्य लोगों के लिए संगीत सीखना बहुत कठिन था, दरबारी कलाकारों से तो और भी कठिन था परंतु दोनों ही महानुभावों ने अथक परिश्रम कर जगह–जगह पर्यटन करके संगीत का उद्धार किया। मई 1901 ई. में पंडित विष्णु दिगबंर जी ने लाहौर को अपना कार्य क्षेत्र चुना। पंडित जी ने भक्ति रस के गीतों को अपनाया व अश्लील शब्दों की बंदिशों का परित्याग किया। 5 मई1901 में आपने लाहौर में गंधर्व महाविद्यालय की स्थापना की, कराची में भी संगीत महाविद्यालय की स्थापना हुई, पंजाब में आपके अनेक शिष्य बने। आपने संगीत संबंधि अनेक पुस्तकें प्रकाशित की इस प्रकार संगीत का विकास बड़ी द्रुत गति से होने लगा। '[2] '1942 में पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से संगीत को एक विषय के रूप इसी काल में कुछ गुणीजन ग्रंथकारों ने महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की उनमें से कुछ इस प्रकार हैं –

---

1. डॉ. जोगिन्द्र सिंह 'बावरा' – भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास, पृष्ठ 23, संस्करण–1994
2. वही

1. नगमाने आसफी – रचनाकार मुहम्मद रज़ा
2. संगीत सार – रचनाकार राजा प्रताप सिंह
3. संगीत कल्पद्रुम – रचनाकार कृष्णानन्द व्यास
4. दि.यूनीवर्सल हिस्ट्री ऑफ म्यूज़िक – एस.एम टैगोर
5. गीत सूत्र सागर – कृष्ण धन बैनर्जी '[1]

## स्वतंत्र भारत में संगीत –

स्वतंत्र भारत में संगीत के विकास में आकाशवाणी का अपना एक विशेष महत्व रहा है। आकाशवाणी ने केवल भारतीय शास्त्रीय संगीत को ही नहीं बल्कि लोकसंगीत, भजन, ग़ज़ल आदि को भी पूर्ण प्रोत्साहन दिया। भिन्न–भिन्न केन्द्रों पर विभिन्न कलाकारों के रिकार्ड तैयार किए जाने लगे। '1971 में प्रभात कुमार गोस्वामी का ग्रंथ बंगला नाटकीय गान प्रकाशित हुआ, जिसमें नाट्य संगीत की प्रस्तुति, यात्रा, नाटक एवं गीताभिनय, मंचाश्रयी, कथक व गान और नाटकानुसार गान–गीत–प्रधान नाटक का विवरण है। इस प्रकार हम देखते हैं, कि स्वतंत्र भारत में संगीत ने पुनः अपना सम्मान जनक स्थान पा लिया। वर्तमान में अनेक संगीत संस्थाएँ ऐसी हैं जो समाज के संगीत के प्रति जिज्ञासु लोगों को शिक्षा दे रही हैं, जैसे प्रयाग संगीत समीति इलाहाबाद, भातखण्डे संगीत कॉलेज लखनऊ, गांधर्व महाविद्यालय पूना, स्कूल ऑफ इंडियन म्यूज़िक मुम्बई, म्यूज़िक कॉलेज कोलकाता, शंकर संगीत विद्यालय ग्वालियर आदि। इसके अतिरिक्त क्रियात्मक एवं संगीत शास्त्र संबंधी पुस्तकें भी इस अवधि में बहुत लिखि गई। अंग्रेजी में भी संगीत की कुछ पुस्तकें प्रकाशित हुई। संगीत की कुछ मासिक पत्रिकाएँ इस समय उपलब्ध हैं जो कि संगीत के क्षेत्र में अपनी सेवाएँ दे रही हैं जैसे – संगीत कार्यालय हाथरस से संगीत तथा मुम्बई से संगीत कला विहार।'[2] स्वतंत्र भारत में संगीत की चर्चा करते हुए हम देखते हैं कि आधुनिक समय में संगीत से जुड़े जितने कलाकार हैं, वे किसी न किसी घराने से जुड़े हैं, इसलिए यहाँ घरानों की चर्चा करना आवश्यक हो जाता है।

---

1. डॉ. हुकम चंद – आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत , पृष्ठ 22, संस्करण–1998
2. वही

## संगीत में घराना –

संगीत में घराने का अपना एक विशेष महत्व है। प्रत्येक घराना अपनी अलग –अलग विशेषताएँ लिए हुए है। 'घराना शब्द का मूल घर से बना है, जो संस्कृत के ग्रह शब्द से बना है, जिसका अर्थ वंश, संप्रदाय, परिवार, कुटुम्ब, कुल, वंश परंपरा, घर है। घराना शब्द का साधारण अर्थ केवल वंश या कुल से माना जाता है। भारतीय संगीत में घराना या संप्रदाय गुरु तथा शिष्य के संयोग से बनता है। यह गुरु शिष्य परंपरा शास्त्र तथा कला दोनों के लिए आवश्यक मानी गई है। संगीत कला के संबंध में योग्यता की परख रसिकों के सामने सफल प्रदर्शन में है।'[1] 'संगीत शास्त्र में योग्यता की कसौटी विद्वानों के परितोष में है। शास्त्र अथवा काल के सूक्ष्म अंगों को ग्रहण करना तब तक संभव नहीं जब तक योग्य आचार्य से शिक्षा न ली जाए। विद्या वही सफल होती है, जो सही रूप से सीखी जाती है।'[2]

घराना का तात्पर्य है कुछ विशेषताओं का पीढ़ी दर पीढ़ी चले आना अर्थात गुरु शिष्य परंपरा को घराना कहा जाता है। गायकी से घराने का निर्माण माना है जैसे एक गायक ने कुछ शिष्य बनाए और उन्होंने कुछ और शिष्य तैयार किए, इस तरह शिष्यों की पीढ़ी चलती गई, जिसे घराना कहा गया।

' मध्यकाल से पूर्व घराने का कहीं ज़िक्र नहीं मिलता। तानसेन के वंशजों से घराने का निर्माण माना गया है। तानसेन के पुत्रों के वंशज सेनिए कहलाए,जो ध्रुपद गाते थे व बीन बजाते थे। तानसेन की पुत्री के वंशज बानिए कहलाए, जो ध्रुपद गाते थे व रबाब बजाते थे। डॉ. सुधा श्रीवास्तव की पुस्तक भारतीय संगीत के मूलाधार के अनुसार घरानों के संदर्भ में हमारी सांगीतिक परंपरा के सह अस्तित्व के गुण को भी कलात्मक महत्व मिला। हमारी परंपरा की विशेषताएँ है कि कुछ घरानों का मिश्रण सामान्तार रूप में हुआ और कुछ परस्पर प्रभावित होने के उदाहरण मिलते हैं परंतु

---

1. डॉ. सुरेश गोपाल श्रीखण्डे – हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा प्रणाली , पृष्ठ 2, संस्करण–1993
2. डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे – संगीत बोध , पृष्ठ 180–81, संस्करण–1992

व्यापक रूप में देखें तो एक ही समय में अलग–अलग स्थानों में घरानों का विकास हुआ और सामानान्तर रूप में विभिन्न स्थानों से जुड़े इन घरानों की विशिष्ट भूमिका रही। प्रत्येक घराने का एक मुख्य गुरु होता था, जो अपने घराने की शिक्षा का भार अपने ऊपर लेता था व घराने के होनहार सदस्यों की संगीत शिक्षा का भी आयोजन करता था। प्रत्येक घराने की अपनी अलग विशेषता व विशिष्टता होती थी और वह अपनी परंपरा का ही सच्चा अनुयायी होता था।'[1] प्रत्येक घराने का आवाज़ लगाने का ढंग, उतार–चढ़ाव का अपना अलग ही ढंग होता है, आवाज़ का फैलाव भी विशेष ढंग का ही होता है। ख़्याल गायन के कुछ प्रमुख घरानों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है –

## ग्वालियर घराना –

'ग्वालियर घराने का आंरभ नत्थन पीरबख्श (ई.18) से माना जाता है। यह घराना, जो ख़्याल का सर्वप्रसिद्ध घराना है, वास्तव में लखनऊ घराने से निकला हुआ है। लखनऊ की जलवायु में पोषण न मिलने पर यह ग्वालियर में आकर स्थिर हुआ। लखनऊ के गुलाम रसूल इस परम्परा के मूल पुरूष हैं। नत्थन खाँ के तीन पुत्र थे हद्दू खां, हस्सू खां, तथा नत्थू खां। इन तीनों ने संगीत के जगत में खूब नाम कमाया। हद्दू खां को ग्वालियर नरेश महाराजा सिंधिया ने अपना दरबारी गायक नियुक्त किया था। अपने समय में तानरस खां और मुबारक अली ही उनके मुकाबले के गायक थे। इनके पुत्र व शिष्य मुहम्मद खां और रहमत खां व इनके भतीजे निसार हुसैन खां ने संगीत की शिक्षा इन्हीं से प्राप्त की व संगीत जगत में खूब नाम कमाया। इनके अन्य शिष्यों में मेंहदी हुसैन खां, पंडित दीक्षित, पंडित बालागुरु, पंडित जोशी, बालकृष्ण बुआ इचलंकरजीकर, बन्ने खां पंजाबी, इनायत हुसैन खां आदि के नाम आते हैं जिन्होंने हद्दू खां से संगीत शिक्षा प्राप्त की और प्रतिभाशाली व नामी गायक बन गए।

---

1. सुधा श्रीवास्तव – भारतीय संगीत के मूलाधार , पृष्ठ 169, संस्करण–2002

हद्दू खां के दूसरे भाई हस्सू खां ने भी अपने पिता व चाचा से संगीत शिक्षा ली थी। यह भी अपने भाई हद्दू खां के साथ ग्वालियर के दरबारी गायक थे। इसलिए इन दोनों भाइयों के नाम एक साथ ही लिए जाते हैं। हद्दू खां के तीसरे भाई नत्थू खां ख़्याल गायकी के विशेषज्ञ थे और तराना केवल शौक से ही गाते थे परंतु जब वह तराना गाते थे तो गायकी के नियमों का पूर्ण पालन करते हुए ही गाते थे। ग्वालियर नरेश ने इन्हें एक हवेली और एक बाग इनाम में दिया था। ग्वालियर का माधव संगीत महाविद्यालय,शंकर गंधर्व महाविद्यालय तथा चतुर संगीत महाविद्यालय इसी घराने की शिक्षा देने वाली प्रमुख संस्थाएँ हैं। पंडित विष्णु दिगबंर के द्वारा स्थापित गांधर्व महाविद्यालय देश के विभिन्न प्रदेशों में इसी घराने का प्रचार–प्रसार कर रहा है।'[1]

## इस घराने की विशेषताएँ –

ध्रुपद अंग के ख़्याल, गमक का प्रयोग, ज़ोरदार तथा खुली आवाज़, सीधी तथा सपाट तानों का प्रयोग, लयकारी, ठुमरी के स्थान पर तराना गायन, तैयारी पर विशेष बल।

## आगरा घराना –

' यह घराना भारत के प्रसिद्ध और प्रमुख ख़्याल शैली के घरानों में से माना जाता है। यह घराना मूलतः ध्रुपद तथा धमार गायकों का रहा। इसलिए इसके ख़्याल गायन पर भी ध्रुपद धमार की तरह नोमतोम व लयकारी का प्रभाव स्पष्ट नज़र आता है। आगरा घराने की उत्पत्ति अलख दास तथा मलूक दास द्वारा मानी जाती है। आगरा घराने की गायकी के प्रर्वतक हाजी सुजान खां को माना जाता है, जो अलख दास के पुत्र थे व अच्छे ध्रुपद–धमार गायक थे। हाजी सुजान खां को ध्रुपद–धमार शैलियों का विशेषज्ञ माना गया है। इन्हीं के वंश में श्यामरंग व सरसरंग दो भाई हुए जो अति गुणी संगीतज्ञ थे तथा काशी के नरेश आगरा निवासी वीरभद्र सिंह के दरबार में नियुक्त थे।

---

1. डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे – संगीत बोध , पृष्ठ 188–189, संस्करण–1992

श्यामरंग के छोटे पुत्र का नाम घघ्घे खुदाबख्श था, इनका जन्म आगरा में सन् 1800 ई. में हुआ। इन्होंने अपने घराने की शैली की उत्तम शिक्षा पाई थी। परंतु इनकी आवाज़ दोषपूर्ण थी जिससे घराने के लोग विशेष ध्यान नहीं देते थे। फिर उन्होंने ग्वालियर के नत्थन पीरबख्श से शिक्षा प्राप्त की और अभ्यास में लगे रहे जिसके परिणाम स्वरूप इनकी आवाज़ का दोष जाता रहा। आगरा घराना की गायकी का संबंध ग्वालियर घराने से है।"[1] आज भी दोनों घरानों में कई समानताएँ पाई जाती हैं। इस प्रकार घघ्घे खुदाबख्श को भी हम आगरा घराने का प्रर्वतक व मार्गदर्शक मानते हैं। आगरा घराने के कुछ सर्वश्रेष्ठ गायकों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

### ' गुलाम अब्बास खां –

यह घघ्घे खुदाबख्श के बड़े पुत्र थे इन्होंने आगरा घराने की गायकी को ऊँचाई तक पहुँचाने में बड़ा योगदान दिया। इन्हें आगरा घराने का मार्गदर्शक माना जाता है।

### कल्लन खां –

यह घघ्घे खुदाबख्श के छोटे पुत्र थे इन्होंने अपनी संगीत शिक्षा अपने बड़े भाई गुलाम अब्बास खां से प्राप्त की थी। घघ्घे खुदा बख्श की शिष्य परंपरा में उनके चचेरे भाई शेर खां भी प्रसिद्ध गायक हुए। कल्लन खां एक अच्छे गायक होने के साथ–साथ अच्छे शिक्षक भी थे।

### नत्थन खां –

नत्थन खां, घघ्घे खुदाबख्श के भतीजे थे और विलायत हुसैन खां के पिता थे। नत्थन खां ने अपनी शिक्षा अपने चाचा घघ्घे खुदाबख्श से ली व उन्होंने ही इन्हें एक

---

1. अमलदाश शर्मा – विश्व संगीत का इतिहास , पृष्ठ 59, संस्करण–1990

सुयोग्य गायक बनाया। नत्थन खां के गाने में कई विशेषताएँ थीं, जैसे उनका ताल ज्ञान अनोखा था, वे विलंबित लय तानों की बौछार करते हुए बड़ी ही सरलता से सम पर आ जाते थे। विलायत हुसैन खां के अलावा नत्थनखां के दो पुत्र और थे – मुहम्मद खां व अब्दुला खां। दोनों भाई प्रसिद्ध गायक थे व दोनों ने ही संगीत की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की।

## फैयाज खां –

आगरा घराने का वर्णन अधूरा माना जाएगा यदि हम उसके सर्वश्रेष्ठ गायक फैयाज खां का ज़िक्र न करें। फैयाज खां का जन्म अपने ननिहाल में हुआ व इन्होंने अपनी संगीत शिक्षा अपने नाना गुलाम अब्बास से ली। उनकी गायकी में जो खूबियाँ थीं वे अनोखी थीं, जो और गायकों में नहीं पायी जाती। आपका गायन से पूर्व नोम–तोम का आलाप श्रोताओं को चकित कर देता था। धमार गाने के वे सिद्ध हस्त थे वह अपने जमाने के युग पुरुष माने जाते हैं। 1911 में मैसूर दरबार से आफताब–ए मौसीकी की उपाधि प्राप्त हुई, 1935 में अखिल बंगाल संगीत परिषद तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा प्रशंसा पत्र प्रदान किए गए, बड़ौदा सरकार द्वारा ज्ञानरत्न की उपाधि प्राप्त हुई। प्रेम पिया उपनाम से आपने अनेक बंदिशें तैयार की जो बहुत लोकप्रिय हुई। रिकार्डिंग कंपनी ने आपके कई रिकार्ड तैयार किए जिनमें से तोड़ी,काफी,नट बिहाग, भैरवी, सूहा सुघरई, पूर्वी, ललित बड़े प्रसिद्ध हैं।'[1]

## आगरा घराने की विशेषताएँ –

खुली किंतु जवारीदार आवाज़, ध्रुपद के समान ख़्याल में भी नोम–तोम का आलाप, जबड़े का अधिक प्रयोग, बंदिशदार चीजें, ख़्याल के अतिरिक्त ध्रुपद–धमार में प्रवीणता, बोलतानों की विशेषता, लय–ताल पर विशेष अधिकार।

---

1. डॉ. जोगिन्द्र सिंह 'बावरा'– भारतीय संगीत की उत्पति एवं विकास , पृष्ठ 179, संस्करण–1994

## दिल्ली घराना –

'ख़्याल गायकी का दिल्ली घराना एक प्राचीन घराना है। दिल्ली के बादशाह मोहम्मद शाह रंगीले (1719 ई.) के दरबार में ख़्याल गायकी का प्रचार हुआ। इनके दरबार में नियामत खां (सदारंग) तथा फिरोज़ खां (अदारंग) ख़्याल गीतों व गायकी के निर्माता रहे हैं। मोहम्मद शाह रंगीले के नाम से जितने भी ख़्याल गीत पाए जाते हैं वे इन्हीं दोनों गायकों की कृतियाँ हैं।'[1]

'मियाँ अचपल के शिष्य तानरस खाँ दिल्ली घराने के सर्वश्रेष्ठ कलाकार रहे हैं। ये कुछ वर्ष दिल्ली दरबार में रहने के पश्चात् ग्वालियर दरबार तथा बाद में हैदराबाद गए। उनकी शिष्य परंपरा में अलिया तथा फत्तू, पंचम खां, मस्तू खाँ हैं। दिल्ली घराने की गायकी को बढ़ाने वाले अन्य कलाकारों में मियाँ अल्ला बख्श तथा उनके भाई उमर खाँ, नन्हें खां, संगी खां, सम्मन खां तथा प्रसिद्ध सारंगी वादक स्वर्गीय. बुन्दू खाँ के नाम प्रमुखता से लिए जा सकते हैं। इस घराने की गायकी को जीवित रखने में वर्तमान समय में स्वर्गीय. मम्मन खां के वंशज अपना सक्रीय योगदान दे रहे हैं।

## दिल्ली घराने की विशेषताएँ –

यह घराना अन्य घरानों की तुलना में अपनी एक अलग विशेषता लिए हुए है। इस घराने के कलाकारों का संबंध सारंगी से है अतः यहाँ की गायकी में विलंबित लय की बंदिशों में सूत, मीड़, गमक और लहक का काम विशेष रूप से दिखाई पड़ता है, इसके अतिरिक्त मध्यलय में इस घराने की मुख्य विशेषता यह है कि स्वरों का आपसी लड़–गुंधाव तथा जोड़–तोड़ होता है। तानों की विविधता और उनकी वक्रोक्ति ही इस घराने को अन्य घरानों से पृथक करती है। '[2]

---

1. रमेश मिश्रा – दिल्ली घराने का संगीत में योगदान, पृष्ठ 47 , संस्करण–2001
2. डॉ. सुरेश गोपाल श्रीखण्डे –हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा प्रणाली, पृष्ठ 124, संस्करण–1993

## किराना घराना –

' यह घराना अधिक पुराना न होते हुए भी बहुत प्रसिद्ध हुआ है। इस घराने का उद्‌गम प्रसिद्ध बीनकार उस्ताद बंदे अली खां से माना जाता है जो अच्छे ध्रुपद गायक व ग्वालियर के प्रसिद्ध ख़्याल गायक उस्ताद हद्‌दू खां के दामाद थे। इस घराने का विस्तार कर उसका प्रचार–प्रसार उस्ताद बेहेरे वहीद खां तथा मुख्यतः उस्ताद अब्दुल करीम खां ने किया। उस्ताद अब्दुल करीम खां ने अपनी विलक्षण प्रतिभा से स्वतंत्र गायकी का निर्माण किया, इनकी गायकी पर बीन का प्रभाव था इनकी आवाज़ पतली, सुरीली तथा नोकदार थी, इनकी गायकी स्वर प्रधान थी इसलिए किराना घराने की गायकी में स्वर की सूक्ष्मता व सच्चाई साफ दिखाई देती है। इस घराने के प्रतिनिधि गायकों में स्वर्गीय. उस्ताद अब्दुल करीम खां, उस्ताद हैदर खां, पद्‌मश्री हीराबाई बड़ोदकर, सुरेश बाबू माने, रोशन आरा बेगम, उस्ताद रज्जब अली खां, पंडित सवाई गंधर्व, गंगुबाई हंगल, पंडित वासवराज राजगुरु, श्रीकांत देशपांडे, स्वर्गीय. पंडित भीमसेन जोशी, स्वर्गीय.उस्ताद अमीर खां आदि हैं।

## किराना घराना की विशेषताएँ –

इस घराने की गायकी मुख्यतः तंत अंग की अर्थात बीन अंग की है। इस घराने में स्वर स्थान का विशेष महत्व है। गायकी चैनदार मानी जाती है। किराना घराने की गायकी में तानक्रिया अत्यंत कृत्रिम होती है। इस घराने में ठुमरी गायकी का विशेष स्थान है। आधुनिक गायक जो किराना घराना से प्रभावित हैं अपनी महफिल में ठुमरी को भी महत्वपूर्ण स्थान देते हैं।'[1]

## अल्लादिया खां का घराना –

'आधुनिक काल में हम देखते हैं कि अलादिया खां का भी घराना है जिसके मार्गदर्शक व प्रथम अन्वेषक स्वयं अल्लादिया खां थे। खां साहब पहले ध्रुपद ही गाते

---

1.डॉ. सुरेश गोपाल श्रीखण्डे – हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा प्रणाली, पृष्ठ116–117, संस्करण–1993

थे बाद में उन्होंने ख़्याल गायन शैली को अपनाया और एक नई गायकी का निर्माण किया जो उन्हीं के नाम से मशहूर है। खां साहब ने संगीत शिक्षा अपने चाचा जहांगीर खां से ली। मंजी खां और भुर्जी खां अपने समय के उच्च कोटि के कलाकार थे, दोनों भाइयों ने संगीत की शिक्षा अपने पिता अल्लादिया खां से प्राप्त की थी। वर्तमान में इस घराने का प्रतिनिधित्व केसरबाई केरकर, मोधूबाई कुर्डीकर तथा शंकरराव सरनाइक आदि कर रहे हैं। इस गायकी में एक प्रकार का मानसिक संयम है, इस गायकी में बौद्धिक भावना की प्रधानता एवं प्रबलता है, इसकी बढ़त और इसके राग–विस्तार में भी इस प्रकार का बौद्धिक विकास है कि गायक की प्रखर बुद्धि ही इसमें काम करती है। इस घराने गायकी का आनंद इसकी जटिलता और इसके पेचीदेपन में है।

## इस घराने की विशेषताएँ –

इस घराने की गायकी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें स्वर और लय का बड़ा ही सुंदर मिलन है। बुद्धि प्रधान, जटिल एवं पेंचदार गायकी भी इसकी विशेषता है। भाव भावुकता से इस घराने की गायकी का विशेष संबंध नहीं है। अप्रचलित रागों की ओर इस घराने की गायकी का विशेष झुकाव रहता है। '[1]

## जयपुर घराना –

'जयपुर घराने की ख़्याल शैली लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुरानी मानी जाती है। जयपुर दरबार में भारतवर्ष के मशहूर गायक एवं वादक नियुक्त थे। संगीत की गायन एवं वादन दोनों विधाओं को इस घराने से प्रेरणा मिली। ध्रुपद शैली, कव्वाली शैली, एवं वीणा वादन की वाद्य शैलियों एवं सितार वादन की शैली इन सबका मिश्रित रूप जयपुर घराने की छटा को निखारता है, जितनी मधुर यहाँ की वादन

---

1. सुशील कुमार चौबे –हमारा आधुनिक संगीत , पृष्ठ 244 , संस्करण–1983

शैली है उतना ही सुरीला यहाँ का कंठ संगीत है। जयपुर नरेश माधोसिंह के दरबार में सावल खां नामक प्रसिद्ध बीनकार थे। रजब अली खां के बाद उनकी शिष्य परंपरा में मुशर्रफ खां भी अच्छे वीणा वादक थे यद्यपि जयपुर में वीणा वादकों की एक संपन्न परंपरा में मुशर्रफ खां, मुहासिन खां, जमालुद्दीन खां ,अब्दुल अज़ीज खां इत्यादि कलाकार थे तथापि जयपुर की गायन परंपरा भी संपन्न रही है। करामत अली तथा मुबारक अली को जयपुर घराने का प्रवर्तक माना जाता है। वर्तमान युग में जयपुर घराना अतरौली या अल्लादिया खाँ का घराना माना जाता है, कुछ लोग इसे जयपुर घराने की उपशाखा मानते हैं, परंतु अधिकांश विद्वानों का मानना है कि यह जयपुर घराने का ही दूसरा नाम है।'[1]

## गायकी की विशेषता –

'स्वर्गीय. अल्लादिया खां का मानना था कि गायन कला एक स्वाभाविक कला है, उसमें किसी प्रकार की कृत्रिमता या बनावटी पन नहीं होना चाहिए। इस कारण से अल्लादिया खां साहब की गायकी बहुत ही स्वाभाविक थी। जयपुर घराने की बंदिशों में रचना के बोल, कोमलता व कलात्मकता से लिए जाते हैं।जयपुर घराने में साधारण रागों में भी वक्र तानें ली जाती हैं जो कि इस घराने की गायकी को सौंदर्यपूर्ण बनाती है। वर्तमान में किशोरी अमोनकर, पंडित.मल्लिकार्जुन मन्सूर, और मोधू बाई कुर्डीकर इत्यादि इस घराने की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।'[2]

## पटियाला घराना –

'पटियाला घराने में सारंगी वादन बड़े गुलाब अली खां के पूर्वजों से चला आ रहा था स्वयं बड़े गुलाम अली खां प्रारंभ में सारंगी वादक ही रहे हैं, परंतु बाद में इन्होंने उच्च श्रेणी के ख़्याल गायक के रूप में संगीत जगत में ख्याति अर्जित की। पटियाला घराने के प्रवर्तक के रूप में अलीबख्श और फतह अली को माना जाता

---

1. डॉ. सुरेश गोपाल श्रीखण्डे–हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा प्रणाली, पृष्ठ 118, संस्करण–1993
2. वही

है। पटियाला घराना वास्तव में दिल्ली घराना ही रहा है, पंजाब की स्थानीय शैलियों से प्रभावित होने के कारण यह पंजाब का घराना बन गया और पटियाला रियासत में पनपने के कारण यही पटियाला घराना कहलाया। यह घराना अपनी तैयारी और विविधतापूर्ण गायकी के लिए प्रसिद्ध है। पटियाला घराने की ठुमरियाँ अपनी कोमलता, रसीलेपन, टप्पे वाली तानों के कारण श्रोताओं के मन पर एक अनिवर्चनीय प्रभाव डालती हैं। इस घराने की गायकी अनेक घरानों से पोषित होकर एक नई रंगीनी से गर्भित है।'[1]

## गायकी की विशेषताएँ –

' इस घराने की गायकी में लय तथा स्वर को समान महत्व दिया जाता है। पटियाला घराने की गायकी मुलायम होते हुए भी गायकी में आवाज़ा खुली एवं वज़नदार होती है। ग्वालियर तथा आगरा घराने की लयकारी प्रसिद्ध है किन्तु इस घराने की गायकी की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह मानवीय भावों को भावनात्मक रूप से अभिव्यक्त करने में यह सक्षम है। '[2]

## बनारस घराना –

'संगीत के क्षेत्र में काशी की समृद्धता जग प्रसिद्ध है। काशी नगरी के जीवनकाल में एक समय ऐसा भी था जब घरानेदार संगीतज्ञों के गढ़ के रूप में काशी को संपूर्ण चार भागों में विभाजित किया गया। इनमें से एक घराना तेलियाना घराना (बीनकार, सितारवादक उस्ताद आशिकअली खां) दूसरा पियरी घराना (प्रसिद्धू – मनोहर मिश्र), तीसरा रामपुरा मुहल्ले का घराना शिवदास प्रयाग मिश्र (जो बाद में कबीर चौरा मुहल्ले में आ बसे), चौथा सबसे विराट घराने के रूप में संपूर्ण कबीर चौरा मुहल्ला, जहाँ के पग–पग पर पूरी काशी के लब्ध प्रतिष्ठित, विश्व विश्रुत गुणी गंधर्वो का दो तिहाई से अधिक समुदाय निवास करता था।

---

1. डॉ. सुरेश गोपाल श्रीखण्डे – हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा प्रणाली, पृष्ठ 126,संस्करण–1993
2. डॉ. जोगिन्द्र सिंह 'बावरा' – भारतीय संगीत उत्पत्ति एवं विकास, पृष्ठ 147,संस्करण–1994

पंडित गोपाल मिश्र को बनारस घराने के प्रवर्तक के रूप में माना जाता है। आपने जीवन पर्यन्त संगीत की साधना करते हुए गायकी में विशिष्ट विशेषताओं का समावेश करके बनारस घराने को जन्म दिया, आपने गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों द्वारा छोटी–छोटी हरकतों के अलावा खटके, मुर्कियों, स्वर के संकोच तथा विस्तार की प्रचलित शैलियों में प्रयत्न करके बनारस घराने के रूप में संगीत के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई। वर्तमान समय में पंडित राजन साजन मिश्र, श्रीमती गिरिजा देवी आदि इस घराने के प्रतिनिधि कलाकार हैं। बनारस घराना एक ऐसा घराना है, जिसमें ख़्याल, टप्पा, ठुमरी, ध्रुपद, धमार, तराने आदि संगीत के सभी अंगों के रूपों का समावेश पाया जाता है।'[1]

## बनारस घराने की विशेषताएँ –

इस घराने की गायकी में भाव व भावपूर्ण गायकी का समावेश पाया जाता है। ख़्याल की बंदिशों में शब्दों के उच्चारण पर विशेष बल दिया जाता है। स्वर के साथ लय पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। बनारस घराने की गायकी में खटका, मुर्की, व हरकतों का विशेषकर प्रयोग किया जाता है।

## भारतीय शास्त्रीय संगीत के अग्रणी विभिन्न गायक कलाकार

## पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर –

'भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में सर्वप्रथम पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर का नाम अग्रणित है, जिन्होंने अथक परिश्रम से शास्त्रीय संगीत की रुचि जन–मन में जगाई। सारे देश में विभिन्न अवसरों पर अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन आयोजित होने लगे और बड़ी संख्या में लोग संगीत का आनंद लेने लगे। पंडित जी ने अपनी संगीत शिक्षा ग्वालियर घराने के प्रसिद्ध गायक वासुदेव राज दीक्षित के शिष्य इचलंकरजीकर से ली, पंडित जी ने संगीत के प्रचार–प्रसार के लिए लाहौर और मुंबई

---

1. http:// www. Banaras gharana. com

में गांधर्व महाविद्यालय की स्थापाना की, जो आज भी कई स्थानों पर कार्यरत हैं। पंडित जी का व्यक्तित्व बड़ा ही सरल व प्रभावशाली था, ज़रूरतमंदों के लिए उनके मन में अपार सहानुभूति थी। संगीत विद्यालय में छात्रों से वे शुल्क नहीं लेते थे, और उनके भोजन व रहने की व्यवस्था भी निशुल्क ही करवा देते थे। पंडित जी की गायकी में दुर्लभ विशेषताएँ थीं, गायन प्रस्तुत करते समय पंडित जी की मुद्रा एकदम शांत व सरल होती थी, वाणी की शुद्धता पर वे विशेष बल देते थे व संगत करने वाले के साथ समरसता बनाए रखते थे, पंडित जी अधिकतर सूर, कबीर, मीरा आदि भक्त कवियों के पद गाते थे व श्रोतागण उनके गायन से भक्ति रस में डूब जाते थे। पंडित जी के विभिन्न शिष्यों में उनके पुत्र डी.वी. पलुस्कर, पंडित ओंकार नाथ ठाकुर, विनायक राव पटवर्धन तथा नारायण राव व्यास जैसे महान गायकों ने अपने गायन से न केवल अपने देश में बल्कि संपूर्ण विश्व में शास्त्रीय संगीत को प्रतिष्ठा दिलाई और अपने देश को गौरवान्वित किया। "[1]

'पंडित जी का जन्म 19 अगस्त 1872 ई. को करून्दवाड़ रियासत में एक साधारण से ब्राह्मण परिवार में हुआ था। 21 अगस्त 1931 ई. को उनका देहान्त हो गया। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन को जन–जन तक पहुँचाने वाले ऐसे महान् गायक के रूप में वे हमेशा याद किए जाएंगे। "[2]

## बड़े गुलाम अली खां –

'खां साहब का जन्म 2 अप्रेल 1902 ई. में लाहौर में हुआ। इनके दादा–परदादा सभी संगीत साधक थे। बड़े गुलाब अली खां ने अपनी संगीत शिक्षा अपने पिता अली बख्श व अपने चाचा काले खां से प्राप्त की थी। रियाज़ को वे पूजा मानते थे, उनके लिए यह सरस्वती माता की देन थी, खां साहब प्रारंभ में सारंगी बजाते थे, व एक कुशल सारंगी वादक थे। सारंगी सीखने का परामर्श उन्हें अपनी माँ से मिला था परंतु उनका अधिक रुझान गायन की तरफ था, गाने का रियाज़ वे नियमित रूप से करते रहे अपनी

---

1. सुशील कुमार चौबे –हमारा आधुनिक संगीत , पृष्ठ 165 , संस्करण–1983
2. नारायण भक्त – हमारे संगीतकार, पृष्ठ 66, संस्करण–2008

सुरीली मीठी आवाज़ से खां साहब ने ख़्याल गायकी को अत्यंत सरल व लोकप्रिय बना दिया। आवाज़ पर नियंत्रण रखने में तो उनका मुकाबला ही नहीं था उनका गायन भावपूर्ण था। राग के भाव के अनुसार वे रस का ऐसा संचार करते थे कि श्रोता रसविभोर हो जाते थे। खां साहब पठान हैं, उनका व्यक्त्वि देखकर कोई भी आसानी से यह कह सकता था बड़ी–बड़ी मूछें, भारी भरकम शरीर उस पर ढीला–ढाला कुर्ता, सफेद सलवार और सिर पर गोल काली टोपी। खां साहब का घराना था वसूल का घराना। 1925 में अपने पिता के साथ मंच पर अपना गायन प्रस्तुत किया, इसके बाद 1939 में कोलकाता में आयोजित अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन और फिर 1934 ई. में गया में आयोजित दो संगीत सम्मेलनों में अपना गायन प्रस्तुत किया। पटना में कला मंच पर उनका गायन स्मरणीय है। जब उन्होंने अपने स्वर मंडल पर उंगली रखी, तो माहौल में निस्तब्धता छा गई और फिर उनकी मधुर स्वर लहरी में गूंजने लगे, ''का करूं सजनी आए ना बालम।'' श्रोताओं की फरमाइश पर वे गाते रहे– ''तिरछी नजरिया के बान'', ''पलक तीर मारो न सैयां'', ''बाजू बंध खुल–खुल जाए'' आदि श्रोता मंत्रमुग्ध होकर सुनते रहे। खां साहब की गायकी विलक्षण थी उनकी गायकी में कई दुर्लभ विशेषताएँ थीं, जैसे वे तेज़ से तेज़ तानों में भी श्रुति बनाए रखते थे। सरगम के बाद प्रत्येक स्वर में कण लगाते थे। दरबारी कान्हड़ा, बागेश्वरी, कालकौंस, भैरवी, केदार, यमन और बिहाग जैसे राग खां साहब के प्रिय राग थे। जीवन के अंतिम चरण में लकवाग्रस्त हो गए थे और 66 वर्ष की उम्र में 23 अप्रेल 1960 को उनका स्वर्गवास हो गया। ''[1]

## पंडित ओंकारनाथ ठाकुर –

' पंडित जी का जन्म 24 जून 1897 को बड़ौदा के जहाज नामक गाँव में गौरी शंकर ठाकुर के यहाँ हुआ। ओम का उपासक होने के कारण पिता ने इनका नाम ओंकार नाथ रखा। पंडित जी को मधुर कंठ ईश्वर से मिला और शिक्षा महान गुरु पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर से मिली जो ग्वालियर घराने से संबंध रखते थे। आपने ठुमरी के ढंग पर भजन गाने की नई शैली प्रारंभ की– ''जोगी मत जा'', ''मैया मैं नहीं

---

1. नारायण भक्त – हमारे संगीतकार, पृष्ठ 68, संस्करण–2008

माखन खायो'', ''रे दिन कैसे काटे है'' आदि भजन आज भी उतने ही लोकप्रिय माने जाते हैं। पंडित जी जब भजन गाते थे तब ऐसा प्रतीत होता था मानो साक्षात ईश्वर के दर्शन हो रहे हों। पंडित जी की संगीत साधना बेमिसाल थी एक ही आसन में बैठकर वे नौ घंटे रियाज़ करते थे। इसी साधना के कारण उच्च कोटि के गायक होने के साथ–साथ वे संगीत शास्त्र के विद्वान व एक कुशल व्याख्याता भी सिद्ध हुए हैं। 1916 में वे लाहौर के प्रधानाचार्य नियुक्त हुए आपने प्रणव नाम से कई रचनाएँ भी की हैं कोई भी संगीत सम्मेलन कार्यक्रम तब तक सफल नहीं माना जाता था, जब तक उसमें पंडित ओंकर नाथ ठाकुर शामिल न होते थे। पंडित जी को संगीत के क्षेत्र में अनेक उपाधियाँ प्राप्त हुई। भारत सरकार ने 1955 में पद्मश्री द्वारा विभूषित किया, 1930 में नेपाल नरेश द्वारा संगीत महामहोदय, 1940 में कलकत्ता में संगीत मार्तण्ड, 1943 में विश्वविद्यालय काशी द्वारा संगीत सम्राट, 1946 में हिन्दु विश्वविद्यालय ने डी.लिट से अलंकृत किया। लंबी बीमारी के बाद 28 दिसंबर 1967 को पंडित जी संसार को हमेशा के लिए अलविदा कह गए। ''[1]

## उस्ताद अमीर खां –

'किराना घराने से संबंध रखने वाले उस्ताद अमीर खां का जन्म अप्रेल 1912 में अकोला में हुआ। खां साहब के पिता उस्ताद शाहमीर खां प्रमुख रूप से सारंगीवादक थे व बीन भी बजाते थे उन्होंने अपने पुत्र को सारंगी की ही शिक्षा दी परंतु उस्ताद अमीर खां का रुझान गायकी की तरफ अधिक था, उन्होंने सारंगी छोड़कर गायन को अपनाया। बहुत छोटी सी आयु में ही वे पिता के साथ इंदौर आ गए, जहाँ सुप्रसिद्ध गायकों का इनके घर पर आना जाना था ऐसे महान् संगीतज्ञों के सानिध्य में आपकी स्वर साधना दिन–प्रतिदिन निखरती गई। बीस वर्ष की अल्पायु में उन्होंने रेडियो कार्यक्रमों में गाना शुरू किया। अमीर खां साहब ने अपनी गायन शैली में स्वर की परिष्कृतता को अधिक महत्व दिया। उनकी गायकी स्वर प्रधान थी, जिसके कारण श्रोताओं को वशीभूत कर शांत, गंभीर बना देने वाला

---

1. डॉ. जोगिन्द्र सिंह 'बावरा' – भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास , पृष्ठ 174, संस्करण–1994

प्रभाव उत्पन्न होता था। गले की बारीक हरकतें जैसे– खटका, मुर्की, गिटकारी इत्यादि उनकी आवाज़ में अत्यधिक प्रभावशाली ढंग से निकलती थी। मुलतानी, दरबारी कान्हड़ा, शुद्ध कल्याण, मियां मल्हार, भटियार, मारवा, तोड़ी, आभोगी, और ललित उनके प्रिय राग थे। उस्ताद अमीर खां ने आम जनता तक संगीत को पहुँचाने वाले एक माध्यम के रूप में फिल्मों के योगदान अथवा महत्व को स्वीकारा है। फिल्म ''बैजू बावरा'' में उन्होंने पार्श्व संगीत दिया है, फिल्म ''झनक–झनक पायल बाजे'' में उस्ताद अमीर खां का गायन भी समाविष्ट है। 1974 को वे कोलकाता में किसी प्रीतिभोज से लौट रहे थे और कार दुर्घटना में उनका निधन हो गया न किसी रोग का कष्ट झेला और न किसी की सेवा ली। जीवन के अंत तक क्रियाशील रहे, गाते रहे, तथा उनके होठों पर रागों के ही नाम थे।'[1]

## गंगूबाई हंगल –

'कर्नाटक के धारवाड़ शहर में जन्मी श्रीमती गंगूबाई हंगल भारतीय संगीत की सिद्ध स्वर साधिका हैं। उनकी माँ अम्बाबाई व नानी कमला बाई अपने समय की कर्नाटक संगीत की प्रसिद्ध गायिकाएँ थीं वे गंगूबाई को शास्त्रीय संगीत की महान् गायिका के रूप में देखना चाहती थीं। संगीत की शिक्षा लेने के लिए वे अपनी माँ के साथ हुबली चली गईं, जहाँ उन्होंने अब्दुल करीम खां के शिष्य उद्गर कृष्णाचार्या से संगीत शिक्षा ली। गंगूबाई ने राजस्थान के दो भाइयों , श्यामलाल और प्रतापलाल से कत्थक के साथ ठुमरी, दादरा की भी शिक्षा ली। संगीत में गहरी रुचि उन्हें हुबली ले आई और वहाँ रहकर उन्होंने सवाई गंधर्व से विधिवत संगीत की शिक्षा ली जहाँ उन्होंने संगीत की सभी बारीकियाँ सीखीं। कुछ दिनों तक उन्होंने गाना छोड़ दिया जब 1932 में उनकी माँ अम्बाबाई की मृत्यु हुई उनके मामा ने पुनः उनके अंदर संगीत की रुचि को उजागर किया। 1933 में मुंबई के एक म्यूज़िकल हाल में उन्होंने श्रोताओं के सामने अपना प्रथम शास्त्रीय गायन प्रस्तुत किया। गायन में तानों बोलतानों की प्रभावकारी प्रस्तुति से प्रभावित होकर त्रिपुरा के महाराजा ने उन्हें स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया। 1942 में बेलगाँव के कांग्रेस अधिवेशन में गंगूबाई ने स्वागत गान गाया था। कालांतर में वे आकाशवाणी पर भी कार्यक्रम देने लगीं।

1. इब्राहिम अली – भारतीय संगीतकीर उस्ताद अमीर खां , पृष्ठ 264, संस्करण–2000

पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित गंगूबाई को संगीत नाटक अकादमी की ओर से भी सम्मानित किया गया था। 1995 में त्यागराज ट्रस्ट की ओर से सप्तगिरि संगीत विद्वान मणि और 1966 में शंकर देव सम्मान से भी उन्हें विभूषित किया गया। गंगूबाई की गायन गरिमा उनकी तानों, आलाप, और बोलतानों में स्पष्ट झलकती है। संगीत साधना के विषय में गंगूबाई हंगल का विचार है कि गायन के लिए मानसिक शांति अति आवश्यक है। संगीत साधकों में सीखने की लगन, कठोर परिश्रम की क्षमता और इच्छा होनी चाहिए।'[1]

## उस्ताद फैय्याज़ खां –

' फैय्याज़ खां का जन्म 1886 में आगरा में अपने ननिहाल में हुआ। इनके पिता की मृत्यु इनके जन्म के तीन–चार माह पहले ही हो चुकी थी। आपको अपने पिता का स्नेह व छत्रछाया प्राप्त नहीं हो पाया। फैय्याज़ खां का लालन पालन उनके नाना गुलाम अब्बास खां साहिब ने किया। आपने अपने नाना से लगभग बीस वर्षो तक शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली व किशोरावस्था में वे एक निपुण गायक के रूप में पहचाने जाने लगे। आप ख़्याल, ठुमरी, धमार, ध्रुपद, ग़ज़ल, दादरा आदि शैलियों में निपुण थे। फैय्याज़ खां आगरा घराने के प्रसिद्ध गायक रहे। ख़्याल के पूर्व नोम–तोम का आलाप श्रोताओं को चकित कर देता था। आगरा घराना मुख्यतः ध्रुपद, धमार गायकों का रहा है इसलिए इनके ख़्याल गायन पर भी ध्रुपद तथा धमार की नोमतोल और लयकारी का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता था। 1911 में मैसूर दरबार से आफताब–ए–मौसीकी की उपाधि प्राप्त हुई, 1935 में अखिल बंगला संगीत परिषद तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा प्रशंसा पत्र प्रदान किए गए, बड़ौदा सरकार द्वारा ज्ञानरत्न की उपाधि प्राप्त हुई। आपने ''प्रेमपिया'' नाम से अनेकों बंदिशें तैयार की जो बहुत लोकप्रिय हुई। रिकार्डिंग कंपनियों ने आपके कई रिकार्ड तैयार किए जिनमें से तोड़ी, काफी, नट, बिहाग, भैरवी, सूहा, सुघरई, पूर्वी, ललित बड़े प्रसिद्ध हैं। आपने हिन्दुस्तान भर के सभी प्रमुख संगीत सम्मेलनों में भाग लेकर जालन्धर में भी अपनी कला द्वारा संगीत प्रेमियों को मुग्ध किया। 5 नवम्बर 1950 में बड़ौदा में आप ने अपने प्राण त्याग दिए। आपकी स्मृति में प्रतिवर्ष 5

---

**1. नारायण भक्त – हमारे संगीतकार, पृष्ठ 77, संस्करण–2008**

नवम्बर को आकाशवाणी बड़ौदा एक विशेष संगीत कार्यक्रम का आयोजन करता है, जालंधर से आप के शिष्य सोहन सिंह उस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किए जाते थे। बड़ौदा में एक सड़क का नाम उस्ताद फैय्याज़ खां रोड़ रखा गया है।' [1]

## कुमार गंधर्व –

' कुमार गंधर्व का जन्म 8 अप्रैल 1924 को बेलगाँव के जिले सुलेभावी ग्राम में हुआ। आपके पिता स्वयं एक अच्छे गायक थे। आपकी सांगीतिक प्रतिभा बचपन से ही झलकती थी। पाँच वर्ष की आयु में एक बार कुमार गंधर्व सवाई गंधर्व के गायन कार्यक्रम में गए वहाँ से लौटकर जब वे घर आए तो सवाई गंधर्व द्वारा गाई बसंत राग की बंदिश को तान और आलापों के साथ ज्यों का त्यों नकल करके गाने लगे यह देखकर उनके पिता आश्चर्यकित रह गए और फिर कुमार की संगीत शिक्षा विधिवत रूप से प्रारंभ हुई। नौ वर्ष की उम्र में कुमार गंधर्व का सर्वप्रथम गायन जलसा बेलगाँव में हुआ इसके पश्चात् मुम्बई के प्रोफेसर देवधर ने कुमार को अपने संगीत विद्यालय में रख लिया। फरवरी सन् 1936 में मुम्बई में एक संगीत गोष्ठी हुई उसमें गंधर्व की कला का सफल प्रदर्शन हुआ जिसमें श्रोतागण मंत्र मुग्ध हो गए और इनका नाम संगीतज्ञों तथा संगीत कला प्रेमियों में प्रसिद्ध हो गया। अनेक पत्र–पत्रिकाओं ने उन दिनों कुमार गंधर्व के संगीत की प्रशंसा की, कुमार गंधर्व की गायकी देशभर में विख्यात है, उन्होंने कई बंदिशों की रचनाएँ की। कुमार जी के बंदिशों के मुख्य विषय ईश प्रार्थना, भगवान शंकर की स्तुति, सरस्वती वंदना, गुरु महिमा, संगीत का विवरण, ऋतु वर्णन, श्रृंगार, विरहिणी की व्यथा और श्याम सुंदर की बंसी आदि हैं। कुमार गंधर्व ने अपने क्षेत्र के लोक संगीत की सादगी, रूप और विषय का अध्ययन तथा विश्लेषण किया तथा तीन सौ से अधिक लोकगीतों का संग्रह किया। उन्होंने उनकी स्वरलिपि तैयार की और इस तरह धुनों को लगातार गुनगुनाते रहे इसके फलस्वरूप विविध धुनें और उगम

---

1. डॉ. जोगिन्द्र सिंह 'बावरा' – भारतीय संगीत उत्पत्ति एवं विकास, पृष्ठ 179, संस्करण–1994

राग, जो अब प्रसिद्ध हैं, निर्मित हुए। ये राग कुमार गंधर्व के महान ग्रंथ अनूप राग विलास में संकलित हैं।'[1]

**पंडित भीमसेन जोशी –**

' पंडित भीमसेन जोशी का जन्म 4 फरवरी 1922 में कर्नाटक राज्य के धारवाड़ जिले में हुआ। पंडित जी को बचपन में ही घर में संगीत का भरपूर वातावरण मिला, पंडित जी को संगीत से लगाव अपनी माँ के कारण हुआ जो अकसर भजन गाया करती थीं, पंडित जी ने संगीत की शिक्षा किराना घराने के संस्थापक सवाई गंधर्व से ली व अन्य कई गुरुओं से भी सीखा, वे एक ऐसे गायक के रूप में माने जाते हैं जिन्होंने गत बीस–तीस वर्षों तक संगीत प्रेमी जनता के मन में वास किया है। आपने देश–विदेश में अनेक संगीत सम्मेलन में अपनी कला का प्रदर्शन किया। विदेशों में अपने गायन कला के प्रदर्शन से आपने विदेशियों को प्रभावित किया व शास्त्रीय संगीत के प्रति रुचि उत्पन्न की। आपने युग की माँग को देखते हुए ठुमरी गायन में भी प्रवीणता प्राप्त की। पार्श्व गायिका लता मंगेश्कर के साथ गाए गए भजन एक अनमोल देन कहे जा सकते हैं। दूरदर्शन पर गाई गई धुन ''मिले सुर मेरा तुम्हारा'' जो एकता का प्रतीक है, प्रत्येक मनुष्य के दिलों दिमाग में घर कर गई। पंडित जी को अनेक कलाकारों ने प्रभावित किया, जैसे उस्ताद अमीर खां, केसरबाई केरकर, अमान अली, उस्ताद बड़े गुलाम अली खां इत्यादि। अपने गुरु सवाई गंधर्व के प्रति अपार श्रद्धा का ही ये प्रमाण है कि आर्य–संगीत प्रसारक मण्डल की ओर से वे प्रत्येक वर्ष सवाई गांधर्व महोत्सव का अयोजन गत कई वर्षों से करते आ रहे थे जो लगातार तीन रात्री तक चलता है, देश के उच्च कोटि के कलाकारों और उभरते कलाकारों के प्रदर्शन से श्रोतागण आनंद विभोर हो जाते हैं। कार्यक्रम का समापन अंतिम रात्रि को पंडित भीमसेन जोशी जी के गायन से होता था। आपके शिष्यों में माधव गुड़ी, उपेन्द्र भाट, श्रीकान्त देशपाण्डे, अनन्त तेरदान, श्रीपति पडिगार आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। पंडित जी को भारत सरकार से पद्मश्री, पद्मविभूषण व भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया।

---

1.डॉ. कविता चक्रवर्ती –भारतीय संगीत को महान संगीतज्ञों की देन , पृष्ठ 27 ,संस्करण–2004

पंडित जी का देहान्त 24 जनवरी 2011 को पूना में हुआ।'[1] आज के सर्वाधिक लोकप्रिय गायकों में आपका नाम सदा उल्लेखनीय रहेगा।

### पंडित जसराज –

'पंडित जसराज का जन्म 20 जनवरी 1930 को हिसार में हुआ था। इनके पिता का नाम मोती राम था, जो कश्मीर राज्य के दरबारी गायक थे। सर्वप्रथम पंडित जी की संगीत शिक्षा तबला वादन से प्रारंभ हुई, पंडित जी के दो बड़े भाई थे, प्रताप नारायण जिनसे इन्होंने तबले की शिक्षा प्रारंभ की व दूसरे भाई पंडित मणिराम, जो एक कुशल गायक थे। पंडित जसराज अपने भ्राता पंडित मणिराम के साथ तबले पर संगत करते थे परंतु धीरे–धीरे इनकी रुचि तबले से हटती गई और इन्हें तबले पर संगत करना अच्छा नहीं लगता था उनका मन हीनता का अनुभव करने लगा उनके मन में एक कुशल गायक बनने की इच्छा जाग्रत हुई और उन्होंने अपने बड़े भ्राता पंडित मणिराम से नियमपूर्वक गायन सीखना आरंभ किया उनका प्रशिक्षण लगभग दस वर्षो तक चला। वर्तमान समय में पंडित जसराज मेवाती घराने का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। अपनी मेहनत व लगन से धीरे–धीरे पंडित जी अच्छे गायकों में अपना स्थान बनाने लगे थे। इनका प्रथम सार्वजनिक कार्यक्रम सन् 1952 में नेपाल में महाराजा त्रिभुवन विक्रम के समक्ष हुआ। भारत में 1954 में मुम्बई में स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन में इन्होंने भाग लिया। इसके बाद वे विभिन्न संगीत के कार्यक्रमों में आमंत्रित किए जाने लगे। प्रारंभ में वे कई वर्षो तक अपने बड़े भाई पंडित मणिराम के साथ जुगलबंदी कार्यक्रम पेश करते रहे। सन 1963 में पंडित जसराज स्थायी रूप से मुम्बई में रहने लगे। आकाशवाणी पर तीन–चार राष्ट्रीय कार्यक्रमों के अंतर्गत दोनों भाइयों ने युगलबंदी में काफी प्रसिद्धि प्राप्त की। सन 1963 से पंडित जसराज ने युगलबंदी गाना छोड़कर एकल गायन प्रस्तुत करना प्रारंभ किया और भारतवर्ष में अपनी कला को प्रतिष्ठित किया। इनके गाए हुए रागों के विभिन्न रिकार्ड कैसेट बनकर तैयार हो चुके हैं। सन् 1974 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री अलंकरण से विभूषित किया।'[2]

---

1. डॉ. हुकम चंद – आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत , पृष्ठ 59, संस्करण–1998
2. कविता चक्रवर्ती – भारतीय संगीत को महान संगीतज्ञों की देन, पृष्ठ 28, संस्करण–2004

## बेगम अख्तर –

'बेगम अख्तर का जन्म 7 अक्टूबर सन् 1914 में उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले में एक मुस्लिम परिवार में हुआ। बचपन से ही इनका संगीत की तरफ रुझान था, परंतु इनके पिता नहीं चाहते थे कि उनकी बेटी संगीत सीखकर एक गायिका बने किंतु माँ की इच्छा ने उन्हें संगीत में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। पिछले कुछ वर्षों में ग़ज़ल गायन की लोकप्रियता में काफी वृद्धि हुई है जिन्होंने ग़ज़ल गायकी को परवान चढ़ाया उनमें मुख्यतः कुंदन लाल सहगल, तलत महमूद, बेगम अख्तर, मेंहदी हसन, गुलाम अली व जगजीत सिंह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। सहगल के बाद बेगम अख़्तर ने ग़ज़ल की अपने ढंग की मौलिक अदायगी के लिए सर्वाधिक लोकप्रियता अर्जित की है। उनकी चैनदार गायकी व आवाज़ की खनक अब सुनने को नहीं मिलती। उन्हें ''मलिका–ए–ग़ज़ल'' कह कर नवाजा गया।

बेगम अख़्तर की प्रसिद्धि एक ग़ज़ल गायिका के रूप में हुई, किंतु उन्होंने बकायदा संगीत की शिक्षा ली जिसके कारण वे ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी जैसी उपशास्त्रीय गायन शैलियों को बखूबी अदा करती थीं। प्रांरभ में इन्होंने अपनी शिक्षा पटना के सुप्रसिद्ध सारंगी वादक उस्ताद इमदाद खां व उस्ताद गुलाम मुहम्मद खां से पाई। बाद में वे पटियाला के उस्ताद अली मुहम्मद खां की शिष्या बन गई। वे अपनी माँ के साथ कोलकाता चली आई। उनका पहला रिकार्ड काफी लोकप्रिय हुआ और धीरे–धीरे संगीत के क्षेत्र में उन्हें लोकप्रियता हासिल होने लगी। '[1]

'इनके जीवन में एक ऐसा मोड़ आया जब इनका निकाह बैरिस्टर इश्तियाक अहमद अब्बासी से होने के बाद पति की इच्छा का सम्मान करते हुए बेगम ने गाना ही छोड़ दिया। संगीत बेगम की रग–रग में समाया था किंतु उस पर अंकुश लग जाने से वे बीमार रहने लगी। डॉक्टरों की राय थी कि उन्हें गाने की इज़ाजत मिलनी चाहिए। इन्हीं दिनों उनकी माँ का देहान्त हो गया, जिसका गहरा सदमा लगा । अंततः अब्बासी साहब ने बेगम को सार्वजनिक स्थानों पर भी गाने की इज़ाजत दे दी। '[2]

---

1. रामलाल माथुर – भारतीय संगीत और संगीतज्ञ, पृष्ठ 143 , संस्करण–1997
2. वही

' वैसे तो उनके गाए कई गाने लोकप्रिय हुए हैं, किंतु उनकी गाई ये ग़ज़लें अपना असर छोड़ गई हैं – ''दिल की बात कही नहीं जाती'', ''ऐ मोहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया'', ''कुछ तो दुनिया की इनायत ने दिल तोड़ दिया'' तथा ''मोहब्बत करने वाले कम न होंगे।'' इसके अतिरिक्त इन रचनाओं ने भी मन मोहा है–''कोयलिया मत कर पुकार'', ''हमरी अटरिया पे आओ सांवरिया'', ''हम परदेसी लोग'' तथा ''ना जा बलमा परदेसी'' आदि। बेगम अख़्तर का सारा जीवन गाने में ही गुज़रा और उन्होंने लगभग गाते–गाते ही मृत्यु का आलिंगन किया। अक्टूबर 1974 के आखिरी सप्ताह में वे रेडियो संगीत सम्मेलन में भाग लेने के बाद अहमदाबाद गई वहीं अचानक बीमार हो गई और तीस अक्टूबर को अंतिम सांस ली। बेगम को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जिनमें पद्मश्री एवं मरणोपरांत पद्मभूषण मुख्य थे।'[1]

### केसरबाई केरकर –

' केसरबाई का जन्म 1892 में गोआ के केर नामक गाँव में हुआ। प्रारंभ में आठ वर्ष की आयु में कोल्हापुर में एक वर्ष रहकर उन्होंने करीम खां से गायन की शिक्षा ली। एक वर्ष बाद वे गोआ लौट आई। एक साल में ही आपको अलंकार का अच्छा ज्ञान हो गया व कई बंदिशों को भी सीखा परंतु गोआ आने पर उनका अभ्यास छूट गया, लेकिन संगीत सीखने की तीव्र इच्छा बनी रही फिर उन्होंने गोआ के निकट पंडित रामकृष्ण बझे से संगीत सीखना प्रारंभ किया लगभग तीन वर्षों तक उन्होंने पंडित रामकृष्ण बझे से संगीत सीखा। सन 1908 में केसर बाई मुम्बई चली गयीं वहाँ उन्हें बरकत उल्ला खां और भास्कर बुआ से संगीत सीखने का अवसर प्राप्त हुआ लेकिन उनकी शिक्षा वर्षों तक नियमित नहीं रह पाई इसलिए वे काफी परेशान रहीं, परंतु संगीत सीखने की इच्छा बराबर बनी रही। बचपन से ही अल्लादिया खां से संगीत सीखने की उनकी इच्छा रही, लेकिन अल्लादिया खां केसरबाई को सिखाने के लिए तैयार नहीं हुए, आप इतनी दुखी रहने लगीं कि इसका प्रभाव आपके स्वास्थ्य पर पड़ने लगा उनकी ऐसी दशा देखकर मुम्बई के सेठ विट्ठलदास ने उन्हें विश्वास दिलाया

---

1. रामलाल माथुर – भारतीय संगीत और संगीतज्ञ, पृष्ठ 143–144, संस्करण–1997

कि वे अल्लादिया खां साहब को मना लेंगे और ऐसा ही हुआ। अल्लादिया खां साहब ने अपनी कुछ शर्तो के साथ केसरबाई को शिक्षा देना स्वीकार किया। खां साहब उन्हें नौ–नौ घंटे तक अभ्यास कराते, जिससे केसरबाई का गला साफ–साफ चलने लगा, केसरबाई ने खां साहब से लगभग बारह वर्षो तक संगीत सीखा। धीरे–धीरे केसरबाई ने विभिन्न शहरों में अपने गायन कार्यक्रम प्रस्तुत करने प्रारम्भ कर दिये। निर्दोष तथा खुली आवाज़ निकालना तथा उसे सुविधानुसार ऊँचाई–नीचाई तक बारीक तथा मोटी करते हुए मंद्र पंचम से तार मध्यम या पंचम तक आसानी से पहुँचाना केसरबाई का विशेष गुण था। गले की दानेदार तानें आपकी विशेषता थी वैसे तो केसरबाई कई रागों का गायन प्रस्तुत करती थीं लेकिन बसंत–बहार, मियाँमल्हार, गुणकली, जयजयवन्ती, गौड़मल्हार, शुद्ध नट, मारूबिहाग, तोड़ी इत्यादि राग आपको विशेष प्रिय थे। भारतीय संगीत की सेवाओं के लिए भारत सरकार ने 1939 में आपको पद्मभूषण के अलंकरण से विभूषित किया, इसके पहले आपको संगीत नाटक अकादमी की ओर से हिन्दुस्तानी संगीत के लिए पुरस्कार मिला, 1975 में सुरसिंगार संसद की ओर से उन्हें सारंगदेव फैलोशिप प्रदान की गई। अंत में इस महान् गायिका की मृत्यु 16 सितंबर सन् 1977 को मुम्बई में हुई।'[1]

### उस्ताद चांद खां –

'उस्ताद मम्मन खाँ के सबसे बड़े पुत्र उस्ताद चांद खां ने अपना पूरा जीवन संगीत को समर्पित कर दिया। दिल्ली घराने के उस्ताद चांद खां ऐसे कलाकारों में से एक थे जिन्हें श्रोतागण आज भी याद करते हैं। सात वर्ष की अल्पायु में ही वे गायन समारोहों में भाग लेने लगे थे। जितना प्रभावशाली उनका विलंबित गायन था उतना ही प्रभावशाली उनका द्रुत गायन भी था।

---

1.डॉ. कविता चक्रवर्ती –भारतीय संगीत को महान संगीतज्ञों की देन , पृष्ठ 20 , संस्करण–2004

1911 में आपको ऑल इंडिया रेडियो द्वारा उस्ताद की उपाधि दी गई, 1963 में भारतीय संगीत कला विद्यापीठ द्वारा संगीत मार्तड की उपाधि दी गई, 1975 में संगीत संस्थाओं द्वारा संगीत रत्न, संगीत प्रवीण व गायनाचार्य की उपाधि, 1969 में खां साहब को दिल्ली सरकार द्वारा साहित्य कला परिषद प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आप गायन प्रस्तुतीकरण में शब्दों व उसके भावों को बड़ा महत्व देते थे, आपके द्रुत लयों की चीज़ों के प्रस्तुतीकरण में भाव के अंदाज़ के साथ लय और ताल पर गज़ब का अधिकार देखने को मिलता था। यूं तो चांद खां साहब प्रचलित सभी रागों को भली भांति गाते थे, किंतु कुछ राग जैसे –ललित, रामकली, भटियार, चंद्रकौंस, दरबारी, केदार, पूरिया, मारूबिहाग आदि राग बड़ी तन्मयता से गाते थे। आप स्वयं एक सफल रचनाकार थे, जिसके अंतर्गत इन्होंने बहुत सी अनूठी बंदिशें बनाई व अपना उपनाम ''चांदपिया'' दिया। आपने बहुत सी पुस्तकें लिखकर युवा पीढ़ी को नई दिशा दी। उस्ताद चांद खां साहब ने प्रशिक्षण देने में अपने पिता के समान ही विशाल हृदयता और उदारता का परिचय दिया है। आपका 26 दिसम्बर 1980 को दिल्ली में स्वर्गवास हो गया। आपके देहावसान से हुई सांगीतिक हानि को पूरा करना संभव नहीं है। '[1]

### श्रीमती गिरिजा देवी –

'बनारस घराने से संबंध रखने वाली भारतीय संगीत की सुप्रसिद्ध आचार्या व ख़्याल, ठुमरी, दादरा, टप्पा, कजरी, चैती जैसे विभिन्न आंचलिक लोकगीत की गायन शैली और भजन में प्रवीणता हासिल करने वाली श्रीमती गिरिजा देवी के स्वर की तुलना बाँसुरी व शहनाई से की जा सकती है। इन्होंने संगीत का प्रथम पाठ पाँच वर्ष की आयु में अपने दादाजी पंडित सरयू प्रसाद मिश्र से हासिल किया, इनके दूसरे गुरु थे पंडित श्रीचंद्र मिश्र जिन्होंने इन्हें ध्रुपद–धमार की शिक्षा दी। गिरिजा देवी को लोग आपाजी के नाम से भी जानते हैं इनकी बोली में शुद्ध बनारसी पन झलकता है, इनका स्वभाव बिल्कुल सरल, सहज व मिलनसार है। इन्हें कई पुरस्कारों जैसे पद्मभूषण व पद्मश्री से सम्मानित किया गया है एवं संगीत नाटक

---

1. नारायण भक्त – हमारे संगीतकार ,पृष्ठ 99, संस्करण–2008

अकादमी से भी उनको सम्मानित किया गया है। इनका संबंध एक बहुत ही साधारण ग्रामीण परिवार से है इनके पिता एक किसान थे और थोड़ा बहुत हारमोनियम भी बजाना जानते थे। बचपन से ही उन्हें संगीत से लगाव रहा वे राग और स्वर से अनभिज्ञ थीं परंतु जो गीत वे गाती थीं वे शुद्ध होते थे। उनका मानना है कि संगीत एक साधना है, जिसकी बुनियाद मजबूत होनी चाहिए उन्होंने अपने अथक परिश्रम व सच्ची लगन से संगीत जगत में अपनी पहचान बनाई है, वे संगीत जगत की एक विभूति हैं।'[1]

## उस्ताद अब्दुल करीम खां –

'उस्ताद अब्दुल करीम खां का जन्म सन् 1872 में हुआ। किराना घराना इस महान् कलाकार अब्दुल करीम खां के नाम से प्रसिद्ध है, अब्दुल करीम खां और किराना एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं। एक संगीतज्ञ परिवार में जन्म लेने के कारण अब्दुल करीम खां को गायन के साथ–साथ सारंगी, तबला, तथा जलतरंग आदि वाद्यों की शिक्षा सहज ही प्राप्त हो गई थी। बहुत कम आयु में बड़ौदा में उन्होंने दरबारी संगीतज्ञ के रूप में तीन वर्ष गुज़ारे फिर वे पूना पहुँचे, वहाँ उन्होंने आर्य संगीत विद्यालय की स्थापना की। बाद में मिरज को उन्होंने अपना निवास स्थान बनाया। उनकी गायन शैली तथा उनका तार षड़ज पर ठहराव का अन्दाज़ बड़ा मार्मिक होता था, उनका तार षड़ज अलग ही चमकता था। अब्दुल करीम खां का स्वाभाविक स्वर भी थोड़ा ऊँचा ही था जो उनके घराने की विशेषता बन गई, वे ख़्याल व ठुमरी गायन के विशेषज्ञ थे। महाराष्ट्र में बस जाने के कारण मराठी नाट्य संगीत ने भी उन्हें प्रभावित किया। आनंद भैरवी राग में उनका गाया नाट्य गीत उगिच का कांता तथा अन्य गीत काफी लोकप्रिय हुए। उनको अमर बनाने वाले रिकार्डों में उनकी गाई ठुमरी ''पिया बिन नाहीं आवत चैन'' सर्वाधिक लोकप्रिय हुई। सन् 1937 में मद्रास में खां साहब को सम्मानित करने के लिए एक विशेष जलसा हुआ। पांडिचेरी व अन्य स्थानों पर कार्यक्रम देने के पश्चात् खां साहब ट्रेन से जब मिरज लौट रहे थे तो रास्ते में उनकी तबियत खराब हो गई।

---

**1. http:// www. Girija devi. com**

साथ वाले मित्रों व कलाकारों ने अगले स्टेशन पर खां साहब को ट्रेन से उतार लिया, खां साहब ने प्लेटफार्म पर ही दरी बिछा कर दरबारी में गाते हुए इबादत की फिर वहीं लेट गए और खुदा को प्यारे हो गए। खां साहब के पार्थिव शरीर को मिरज ले जाया गया जहाँ उनको अंतिम विदाई दी गई। '[1]

## किशोरी अमोणकर –

'किशोरी अमोणकर का जन्म 10 अप्रेल 1931को हुआ। उन्होंने अपनी प्रारंभिक संगीत शिक्षा अपनी माता श्रीमती मोधूबाई कुर्डीकर से ली, जो खुद अल्लादिया खां की शिष्या थी। घर में संगीत का वातावरण होने की वजह से इनका संगीत शिक्षण व अभ्यास अच्छा चला बाद में किशोरी जी ने बालकृष्ण बुआ पर्वतकर और श्री मोहन राव पालेकर से भी गायन शिक्षा ली। किशोरी अमोणकर ने संगीत का बहुत रियाज़ किया और संगीत की साधना की, उनका मानना है कि ज़रूरी नहीं है कि आपकी आवाज़ में माधुर्य हो तभी आप अच्छे गायक बन सकते हैं आपको बस स्वर साधना करनी है। केसरबाई तो तीसरे काले से गाती थीं फिर भी केसरबाई क्या चीज़ थीं ये सब जानते हैं। अगर स्वर सही लगता है तो संगीतात्मकता है, वहाँ सबकुछ है। सही स्वर लगाने के लिए किन–किन चीज़ों की आवश्यकता है उसे जानना ज़रूरी है। किशोरी जी बच्चों को शिक्षा देते समय सबसे पहले अलंकार सिखाती हैं। उन्होंने अपने जीवन में कार्यक्रम देने की शुरूआत सन् 1947 से की, आपने देश के विभिन्न संगीत सम्मेलनों में भी अपना गायन प्रस्तुत किया है, किशोरी जी का मानना है कि गुरु तो केवल रास्ता दिखाता है आपको चलना खुद पड़ता है। गायन के अलावा संगीत शास्त्र का अध्ययन तथा मनन करना भी आपका ध्येय है। आपने कई हिन्दी फिल्मों में भी पार्श्व गायन किया है जैसे ''गीत गाया पत्थरों ने'', ''दृष्टि'' आदि। इसके अलावा मराठी सुगम संगीत तथा आप मीराबाई के भजन भी बड़ी ही कुशलतापूर्वक प्रस्तुत करती हैं। किशोरी अमोणकर का स्वर लगाव बड़ा ही भावपूर्ण व वज़नदार है। आपको पद्मभूषण, व पद्मविभूषण जैसे पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। '[2]

---

1. रामलाल माथुर – भारतीय संगीत और संगीतज्ञ, पृष्ठं 109, संस्करण–1997

**2. http:// www. Kishori amonkar. com**

## प्रभा अत्रे –

' किराना घराने से संबंध रखने वाली सुप्रसिद्ध गायिका प्रभा अत्रे का जन्म 13 सितम्बर 1932 में हुआ। वर्तमान समय में प्रभा अत्रे का महिला गायिकाओं में अपना एक अलग ही स्थान है। इनके परिवार में पहले संगीत के लिए कोई स्थान नहीं था। इनकी माताजी ने थोड़ा बहुत गाना सीखा था जिसका लाभ प्रभा अत्रे जी को हुआ। उन्होंने अपनी माताजी से कुछ धुनें सीखीं। श्री विजय करदीकर द्वारा उनकी प्रारंभिक संगीत शिक्षा आरंभ हुई इसके बाद उन्होंने किराना घराने के विख्यात गायक स्वर्गीय सुरेश बाबू माने से संगीत सीखा, उन्होंने प्रभा अत्रे को पूरे एक साल तक राग यमन सिखाया, जिसके फलस्वरूप अन्य रागों पर भी उनकी अच्छी पकड़ बनने लगी। अपने गुरु सुरेश बाबू के निधन के बाद आपने हीराबाई बड़ोदकर से गायन सीखा। गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत संगीत सीखने के साथ–साथ आपने स्कूल व कॉलेज की शिक्षा को भी महत्व दिया। आपने गांधर्व महाविद्यालय से संगीत अलंकार एवं संगीत प्रवीण किया व संगीत में पी.एच.डी. की उपाधि भी हासिल की है। इनको अपने जीवन में छात्रवृत्ति तथा अवार्ड भी मिलते रहे। 1955 में केन्द्रीय सरकार से उन्हें छात्रवृत्ति मिली, सन् 1975 में जगद्गुरु श्री शंकराचार्य ने इन्हें गानप्रभा और आचार्यक्षेत्र अवार्ड प्रदान किए, इसी वर्ष 11 अक्टूबर को संगीत नाटक अकादमी ने प्रभा अत्रे को पुरस्कार और फेलोशिप के लिए चुना। उन्होंने ब्रिटेन, अमरीका, कनाडा, हांगकांग, बैंकाक, सिंगापुर, ईरान, दुबई, और मास्को आदि स्थानों पर अनेक कार्यक्रम तथा भाषण प्रस्तुत किये हैं। आप एक संगीत अध्यापिका रह चुकी हैं व रेडियो की टॉप ग्रेड कलाकारा भी रह चुकी हैं। इन्होंने दो सौ से अधिक बंदिशें बनाई हैं। गायन के साथ–साथ आपकी पढ़ने में भी रुचि है, आपने विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में संगीत विषय पर लेख भी लिखे हैं। '[1]

## पंडित राजन साजन मिश्र –

'राजन मिश्र का जन्म 1951 व साजन मिश्र का जन्म 1956 में हुआ। दोनों भाइयों को संगीत विरासत में मिला, इनके पिता पंडित हनुमान मिश्र व चाचा गोपाल मिश्र सारंगी वादक थे। दोनों भाइयों ने अपने चाचा पंडित गोपाल मिश्र से संगीत की शिक्षा

---

1.डॉ. कविता चक्रवर्ती –भारतीय संगीत को महान संगीतज्ञों की देन , पृष्ठ 37 , संस्करण–2004

ली। आरंभ में गोपाल मिश्र इन्हें सितार वादन की शिक्षा देने लगे, परंतु दोनों भाइयों का रुझान गायन की तरफ रहा। पिजाती व चाचाजी ने इन्हें गायन की तरफ अग्रसर किया व महारत हासिल करने की तरफ आगे बढ़ाया, दोनों भाइयों ने फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। शास्त्रीय गायन में युगलबंदी की जब भी चर्चा होती है तब ध्रुपद गायक डागर बंधु, अहमद बंधु, अमानत अली, फतेह अली, और सिंह बंधु के नाम लिए जाते हैं। ख़्याल गायन में युगलबंदी की शुरूआत सदारंग–अदारंग से मानी गयी है। इसी क्रम में बनारस घराने के पंडित राजन साजन मिश्र का भी नाम जुड़ गया है। आप के गायन में कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो बहुत कम गायकों में पायी जाती हैं जैसे शब्दों का सही उच्चारण, जो श्रोतागण को आसानी से समझ आ सके, रागों का अलग– अलग ढंग से प्रस्तुतीकरण। राजन मिश्र का मंद्र सप्तक में ठहराव व साजन मिश्र की तार सप्तक की चपल तानें श्रोताओं को मंत्र–मुध कर देती हैं। मिश्र बंधु की गायकी में उस्ताद अमीर खां, बड़े गुलाम खां और ओंकारनाथ ठाकुर की गायकी की झलक दिखाई पड़ती है। सन् 1973 में दोनों भाई अपने चाचा पंडित गोपाल मिश्र के यहाँ दिल्ली आ गए और अब यहीं रह रहे हैं। दोनों भाइयों को अनेकों उपाधियों से सम्मानित किया जा चुका है – जैसे संगीत रत्न, संगीत भूषण , पद्मभूषण आदि।'[1]

### पन्ना लाल मिश्र –

' स्वर साधक श्री पन्नालाल मिश्र का जन्म 8 अगस्त 1930 को कलाकारों के गढ़ ग्राम हरिहरपुर, जिला आज़मगढ़ में हुआ। आपके दादा परदादा भी अच्छे संगीतकार थे। आपकी वंश परंपरा बनारस घराने से संबंधित है। बनारसी अंग की ठुमरी, दादरा, पूर्वी, होली, कजरी आदि गायन तथा ख़्याल गायन में आपका कोई मुकाबला नहीं था। आपके पिता पंडित वासुदेव मिश्र अपने समय के श्रेष्ठ गायक थे व आपकी माता श्रीमती ज्वाला देवी भी संगीत साधिका के रूप में प्रसिद्ध थीं। छह वर्ष की अल्पायु में ही आपने अपने पिता व चाचा जी से गायन की शिक्षा लेना प्रारंभ कर दिया। 1967 में हुए प्रयाग संगीत समीति के वार्षिक समारोह में जहाँ बड़े–बड़े संगीतज्ञ उपस्थित थे, वहाँ पन्नालाल जी ने अपनी भावपूर्ण गायकी से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। तभी से आपको लगभग सभी

---

**1. http:// www. Rajan Sajan mishra. com**

उच्चस्तरीय संगीत सम्मेलनों में निमंत्रण जाने लगे। आप दूरदर्शन व आकाशवाणी पर उच्च श्रेणी के कलाकार के पद पर रह चुके हैं। आपने कोलकाता को अपनी कर्मभूमि बनाया व अपने अंत समय तक वहीं रहे। आपके प्रिय रागों में मालकौंस, दुर्गा, गौड़ सारंग, बागेश्री, राजेश्वरी व मेघ आदि थे। आपको कई उपाधियों से सम्मानित किया गया जैसे – संगीतरत्न, सुरमणि, संगीत शिरोमणि, स्वर साधक आदि। '[1]

## शुभा मुद्गल

' शुभा मुद्गल का जन्म 1959 में इलाहाबाद में हुआ। उनके माता–पिता इलाहाबाद में अग्रेंजी के अध्यापक थे। प्रारंभ में शुभा मुद्गल ने इलाहाबाद में ही कथक सीखना प्रारंभ किया परंतु इनका रुझान गायन की तरफ देखकर माता–पिता ने गायन शिक्षा प्रारंभ करवाई। इन्होंने पहले इलाहाबाद में ही रामाश्रय झा से प्रारंभिक गायन शिक्षा प्रारंभ की इसके बाद वे दिल्ली चली आयीं और दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने लगीं, उन्होंने अपनी गायन शिक्षा को आगे बढ़ाया और पंडित विनय चंद्र मुद्गल से संगीत सीखने लगीं। अपनी शिक्षा पूरी कर उन्होंने दिल्ली के ही पंडित वसंत ठाकुर से अपनी गायन शिक्षा को आगे बढ़ाया। कुमार गंधर्व उनकी प्रेरणा स्त्रोत थे उनकी गायकी में कुमार गंधर्व की गायन शैली का प्रभाव दिखाई पड़ता है। शुभा जी भारत की एक प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, ख़्याल, ठुमरी, दादरा और पॉप संगीत गायिका के रूप में प्रचलित हैं। इन्हें 1996 में सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म संगीत निर्देशन का नेशनल अवार्ड अमृत बीज के लिए मिला था, 1998 में संगीत में विशेष योगदान हेतु गोल्ड प्लाक अवार्ड, इसके अलावा इन्हें सन 2000 में पद्मश्री भी मिल चुका है। शुभा जी ने शास्त्रीय संगीत से हटकर जो गीत गाए हैं वे भी लोगों ने काफी पसंद किए हैं, जैसे – ''प्यार के गीत सुना जा रे'', ''आलि मोरे अंगना'', ''सीखो ना नैनो की भाषा पिया'' इत्यादि। '[2]

---

**1. http:// www. Pannalal mishra. com**

**2. http:// www. shubhamudgal. com**

**उमा गर्ग –**

उमा जी का जन्म एक सांगीतिक वातावरण में हुआ। उन्होंने अपनी प्रारंभिक गायन शिक्षा अपनी माता श्रीमती आशा लता दास से ली बाद में उन्होंने स्वर्गीय एस. डी. आप्टे, स्वर्गीय डॉ. प्रेम प्रकाश जौहरी, स्वर्गीय उस्ताद हफीज़ अहमद खां, मणि प्रसाद जी, एवं पंडित भीमसेन जोशी जैसे महान संगीतज्ञों से अपनी विधिवत शिक्षा ली। आज आकाशवाणी व दूरदर्शन पर उमा जी का नाम लोकप्रिय गायिकाओं में से एक है उनकी गायन की एक खास विशेषता है, वे मंद्र सप्तक के गंधार से तार सप्तक के पंचम तक कुछ भी बड़ी सरलता से गा लेती हैं। वे ख़्याल गायन के साथ–साथ ठुमरी, दादरा, भजन, गज़ल व सूफी गायन पर भी समान अधिकार रखती हैं। उन्होंने सितार वादक देबू चौधरी जी के कुशल निर्देशन में दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी फिल्मी गीतों के संगीत में सौंदर्यबोध विषय पर शोध किया। उमा जी को उत्तर प्रदेश जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा 1984 में सर्वश्रेष्ठ पार्श्वगायिका का पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। एक श्रेष्ठ गुरु के रूप में बहुत कम समय में आपने अच्छी पहचान बनाई है। उमा जी दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं।

---

**1. http:// www. umma garg. com**

# गायन शोध कार्य की समीक्षा

पंडित दीनानाथ जी मिश्र के गायन पर शोध कार्य में जहाँ उनकी गायकी की अनेक विशेषताओं का यहाँ उल्लेख हुआ है वहीं उनका व्यक्तित्व भी पूर्ण रूप से उभर कर सामने आया है। आपकी गायकी में जहाँ पंडित जसराज जी की गायकी के समान मधुरता की अनुभूति होती है वहीं पंडित भीमसेन जोशी की गायकी की गम्भीरता का आभास होता है। पंडित दीनानाथ मिश्र की गायकी में बनारस तथा पटियाला दो घरानों का समावेश है इसका प्रमुख कारण है, संगीत शिक्षा का प्रारंभ बनारस घराने के सुप्रसिद्ध गायक पंडित राखाल मिश्र के सानिध्य में प्राप्त होना इससे आपकी गायकी में बनारसी अंग की ठुमरी, दादरा, पूर्वी, होली, कजरी, आदि के गाायन के साथ–साथ शास्त्रीय गायन में भी आपकी अच्छी पकड़ सम्भव हो पाई, आप जिस लोच, बोल–बनाव व सुन्दर ढंग से ठुमरी प्रस्तुत करते हैं वही बनारसी अंग की विशेषता बन गई। तत्पश्चात् पटियाला घराने के संपर्क में रहने के कारण आपकी गायन शैली में बनारस के साथ–साथ पटियाला घराना स्पष्ट रूप से झलकने लगा। गायकी में भावपूर्ण प्रदर्शन आपकी अपनी विशेषता है। आपकी गायकी में अलंकारिक, वक्र तथा फिरत तानों का प्रभाव पाया जाता है साथ ही तानों की तैयारी और उनका अधिकाधिक प्रयोग इनकी गायन शैली की विशेषता को दर्शाता है। जहाँ पंडित दीनानाथ मिश्र वैचारिक स्तर पर नवीन प्रयोगवादी कलाकार हैं उनके गायन में मौलिकता व प्रतिबद्धता पाई जाती है जितना प्रभावशाली आपका विलंबित लय का गायन है उतना ही प्रभावशाली द्रुतलय का गायन भी है, वहीं पंडित जी शिल्प एवं सृजन की दृष्टि से कुछ विशेष तानों जैसे सपाट तान, मुर्की तान, लहक तान, फैलाव तान आदि का प्रयोग करके अपनी गायकी की अद्‌भुत क्षमता का प्रदर्शन कर उसे शास्त्रीय बंधनों में रहते हुए लोकोन्मुखी बनाने का सफल प्रयास करते हैं। आपकी गायकी में नये रंग हैं, गति है और भविष्य का उजाला है। पश्चिमी संस्कृति से रंगे वर्तमान परिवेश की विषमताओं में उसकी कालिमा को चीरकर नव प्रकाश फैलाने की आपकी यह सहज प्रक्रिया है, श्रोताओं की आकांक्षा के अनुकूल अपनी कला के आयामों के सजीव

चित्रण की भांति गायन को ढालने का आप सार्थक प्रयास करते हैं।

पंडित दीनानाथ जी मिश्र ने जैसा कि पूर्व में भी बताया गया है कि जहाँ से भी कोई अच्छी बात जो आपके गायन में चार चाँद लगा सके उसे आप ग्रहण करते रहे हैं। वे किसी एक घराने में बंधकर रहना ठीक नहीं समझते । उनका मानना है कि सभी घरानों की अपनी कई विशेषताएँ व अच्छाइयाँ होती हैं, उन्हें ग्रहण करके अपनी गायकी को अधिक से अधिक प्रभावशाली बनाना चाहिए। आपके इन्हीं विचारों के कारण आपकी गायकी में अन्य घरानों का प्रभाव भी दिखाई देता है परंतु विधिवत शिक्षा बनारस और पटियाला घराने के गायकों से ग्रहण करने के कारण मूल गायकी इन्हीं दोनों घरानों से संबंधित रही है।

जयपुर घराना गायन तथा वादन के लिए लगभग डेढ़ सौ सालों से विश्वप्रसिद्ध है। यहाँ की ख़्याल गायकी की बंदिशों में बोल–बनाव, कोमलता, व कलात्मकता के लिए वक्र तानों के प्रयोग से गायकी को सौंदर्यपूर्ण बनाती है ।इसी प्रकार पंडित जी की गायकी में भी ये सभी अंग दिखाई पड़ते हैं। अतः पंडित जी की गायकी का घराना पटियाला व बनारस होते हुए भी इन सभी बातों के पाए जाने से जयपुर घराने से उनकी समानता पायी जाती है।

किराना घराना की गायकी मुख्यतः तंत्र तथा बीन अंग की है। इस घराने में स्वर स्थान का विशेष महत्व है, गायकी चैनदार मानी जाती है। इस घराने में तानकिया अत्यंत कृत्रिम होती है जबकि पंडित जी की सभी तान कियाएँ स्वाभाविक होती हैं, उनमें किसी प्रकार का ठहराव नहीं पाया जाता, उनकी चंचल प्रकृति होती है। अतः आपकी गायकी किराने घराने की गायकी से जहाँ भिन्न है वहीं पेंचदार गायकी के आधार पर इस घराने से समानान्तर भी है।

ग्वालियर घराना ख़्याल का सर्वप्रसिद्ध घराना है वास्तव में यह घराना लखनऊ घराने से निकला हुआ है लखनऊ की जलवायु में पोषण न मिलने के कारण यह

घराना ग्वालियर में आकर स्थिर हुआ। इस घराने में ध्रुपद अंग के ख़्याल तथा सीधी व सपाट तानों का प्रयोग अधिक देखने को मिलती है साथ ही ठुमरी के स्थान पर तराना गायन प्रस्तुत किया जाता है । इस घराने में लयकारी व तैयारी पर विशेष बल दिया है। पंडित जी की गायकी में भी लयकारी का अधिकाधिक प्रयोग रखने को मिलता है साथ ही उनका गायकी से उनकी तैयारी स्पष्ट झलकती है।

ख़्याल गायन की शैली में आगरा घराना प्रसिद्ध व प्रमुख माना जाता है। यह घराना मूलतः ध्रुपद–धमार का रहा इसलिए इसके ख़्याल गायन पर भी ध्रुपद–धमार की तरह नोम–तोम व लयकारी का प्रभाव स्पष्ट नज़र आता है। इस घराने के कलाकार मुख्यतः जबड़े का प्रयोग करते हैं साथ ही ख़्याल गायन में नोम–तोम का आलाप भी करते हैं। इस घराने में बोलतान व लय–ताल पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसी प्रकार पंडित जी भी अपनी गायकी में नोम–तोम के आलाप किया करते हैं व बोलतानों का अधिकाधिक प्रयोग करते हैं।

ख़्याल गायकी में दिल्ली एक प्राचीन घराना है। यह घराना अन्य घरानों की अपेक्षा अपनी एक अलग ही विशेषता लिए हुए है। इस घराने के कलाकारों का संबंध मुख्यतः सारंगी से रहा है अतः ख़्याल की बंदिशों में सूत, मीड़, गमक और लहक का प्रयोग होता है। पंडित दीनानाथ मिश्र जी की गायकी में भी मुख्य रूप से मीड़, गमक व लहक का विशेष प्रयोग दिखाई देता है तथा तानों की विविधता भी स्पष्ट झलकती है जो कि दिल्ली घराने की मुख्य विशेषताएँ हैं।

पंडित दीनानाथ मिश्र जी ने अलग–अलग घरानों की अच्छाइयों को अपनी गायकी में उतारने का सफल प्रयास किया जिससे कि आपकी गायकी और भी प्रभावशाली बन सके। आपने विभिन्न घरानों की विशेषताओं को अपनी गायकी में अपनाकर उसे और भी विविध बना दिया है। पंडित जी के यही विचार उन्हें और कलाकारों से भिन्न बना देते हैं।

# अध्ययन के उद्देश्य

संगीत कला में गायन, वादन एवं नर्तन तीनों कलाओं का समावेश माना गया है। ये सभी कलाएँ अपने आप में एक दूसरे से भिन्न हैं किन्तु गायन के अधीन वादन तथा वादन के अधीन नृत्य है। इन तीनों में गीत प्रमुख होने के कारण गायन को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। प्राचीन समय से मनुष्य सौन्दर्य की खोज में लीन रहा है। सौन्दर्य तथा आनन्द की अभिव्यक्ति एवं अनुभूति ही कला है। बनारस एवं पटियाला घराने के गायक पंडित दीनानाथ मिश्र चहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं, आपकी गायकी न केवल गायन की प्रस्तुती है अपितु संगीत दर्शन का साक्षात्कार भी है। संगीत प्रेमियों को संगीत का रसास्वादन करवाना तथा अपनी क्लिष्ट रचनाओं को सहज रूप से प्रस्तुत कर आनन्द प्रदान करना आपकी गायन कला की समयानुसार आधुनिक शास्त्रीय संगीत में होने वाले परिवर्तनों को व्यवहारिक रूप देकर संगीत की शास्त्रीयता बनाए रखना एवं उसे लोकप्रिय संगीत की शैली में ढालना आपके लिए एक सहज प्रक्रिया है, कहने का अभिप्राय यह है कि आपने ख़्याल एवं ठुमरी को एक ऐसा स्वरूप प्रदान किया जो अत्यन्त ही लोकप्रिय एवं प्रभावशाली सिद्ध हुआ। वैसे तो बनारस की ठुमरी का प्रादुर्भाव अत्यंत प्राचीन काल से हुआ किंतु ज्यों–ज्यों समय गुजरता गया त्यों–त्यों इसका स्वरूप और अधिक विकसित होता गया। इसमें बनारस में उत्पन्न हुए कलाकारों की विशेष भूमिका रही है। पंडित दीनानाथ मिश्र ने यहाँ की गायन परंपरा को जब सीखा और उसे अपने जीवन में उतारा उसी के साथ–साथ कुछ नवीन प्रयोगों द्वारा बनारस घराने की गायकी को बुलंदियों पर ले जाने का प्रयास किया। आपको इस कार्य में सफलता इसलिए प्राप्त हुई क्योंकि आप जितने शास्त्रीय संगीत के प्रति समर्पित हैं उतनी ही श्रद्धा से लोकगीतों को महत्व देते हैं। शास्त्रीय संगीत के बहुत से रागों का उद्गम स्थल यहाँ के लोकगीतों में विद्यमान है जिन्हें आपने हृदय की गहराई से सुना, समझा तथा अपनी योग्यता के आधार पर उन्हें नया रूप प्रदान करने की कोशिश की जिसमें आपको पूर्णतया सफलता प्राप्त हुई।

आपने चैती, कजरी सावन एवं बनारस क्षेत्र के लोकगीतों एवं लोक साहित्य का अध्ययन करके अपनी गायकी में यहाँ के जनमानस की प्रतिध्वनि को सुदृढ़ रूप देकर अपनी गायकी में ढालने का प्रयास किया।

पण्डित दीनानाथ मिश्र के प्रयासों से आज ठुमरी का जो विस्तृत रूप हमें दिखाई देता है वो हमारी भारतीय शास्त्रीय संगीत की सांस्कृतिक धरोहर है। आप अपने शिष्यों के माध्यम से इस धरोहर के चहुमुखी विकास का प्रयास कर रहे हैं। आपकी मिश्रित शैली के विकास की परंपरा जो आपने शुरू की है वह निरंतर अपने शिष्यों के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी विकास करती जाएगी। इस क्षेत्र में आपने एक ऐसा रास्ता तैयार किया है जिस पर चलकर आपके शार्गिद इसी परंपरा को कायम रखते हुए बनारस व पटियाला घराने की गायकी को निरंतर उसका विकास करते हुए भावी पीढ़ी को सौंप पाएंगे। आपने संगीत के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं एवं उनके समाधान पर गहराई से ध्यान दिया व उस पर विचार करके जो सुझाव प्रस्तुत किए हैं वे आने वाली पीढ़ी का सदैव मार्गदर्शन करते रहेंगे इसलिए आपके संगीत का सामाजिक स्तर पर क्या स्थान है यह एक अध्ययन का विषय बन जाता है। पण्डित दीनानाथ मिश्र के व्यवहारिक संगीत का संबंध समाज, परंपरा, शैली और संस्कृति से गहरा रहा है। इस प्रकार जो कुछ विचार आपके संबंध में यहाँ प्रकट किए गए हैं वे व्यवहारिक संगीत के प्रमुख पक्षों पर अधिक केन्द्रित हैं। आप भारतीय संगीत के बनारस घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ के रूप में एक विश्व प्रसिद्ध कलाकार हैं। वर्तमान में अपने शिष्यों को संगीत शिक्षा में पारंगत करके एवं आकाशवाणी व दूरदर्शन के माध्यम से संगीत कार्यक्रमों का प्रसारण तथा विभिन्न संगीत सम्मेलनों के द्वारा संगीत के व्यापक प्रचार–प्रसार में अपनी सक्रीय भूमिका निभा रहे हैं। आपकी संगीत साधना एवं उसके प्रति निष्ठा इतनी गहरी है कि आपने अपना संपूर्ण जीवन संगीत को समर्पित कर दिया तथा नित नए प्रयोगों के माध्यम से भारतीय संगीत को आधुनिकता प्रदान की।

पण्डित दीनानाथ मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समझने के लिए तथा आपके

मौलिक चिंतन एवं मान्यताओं को जानने के लिए भावी पीढ़ी को सहायता मिल सकेगी। इस ग्रंथ के माध्यम से मेरा मानना है कि संगीत रत्न पण्डित दीनानाथ मिश्र जी एवं उनकी कला के बारे हम पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

हिन्दुस्तानी संगीत के क्षेत्र में अधिकतर उच्च कोटि के संगीतकार ऐसे हैं जो परंपरावादी हैं तथा समझ बूझ कर ही घरानों का समर्थन करते हैं। संगीत की प्राचीन घरानों की जगह यदि हम किसी आधुनिक परंपरा को स्थापित करें तो यह असम्भव है क्योंकि आधुनिकरण पुरानी परंपराओं के तोड़कर कुछ नए मापदण्ड तय करता है तो हमें अपनी सीमाओं को लाघंकर उन संगीत परंपराओं की अनदेखी करनी होगी जो कि किसी भी दशा में उचित नहीं है। अतः परंपरावाद का विरोध या तिरस्कार नहीं कर सकते। पंडित दीनानाथ मिश्र ने भी अपने बाल्यकाल से ही इन घरानों के माध्यम से अपनी संगीत शिक्षा प्रारंभ करते हुए अपने आप को इस स्तर पर पहुँचाया कि संगीत के क्षेत्र में आज वे उच्च कोटि के कलाकार के रूप में अपने आपको स्थापित कर पाएँ हैं।

# द्वितीय अध्याय

## "संगीत रत्न पंडित दीनानथ मिश्र"

1. जन्म एवं बाल्यकाल
2. वंश परिचय
3. प्रारंभिक जीवन
4. पारिवारिक स्थिति और संगीतात्मक पर्यावरण
5. स्वभाव, रहन–सहन एवं जीवन दर्शन
6. अन्य रुचियाँ

# द्वितीय अध्याय

## संगीत रत्न पंडित दीनानाथ मिश्र

संगीत रत्न पंडित दीनानाथ मिश्र बाल्यकाल से ही एक मेधावी छात्र के रूप में उभरकर सामने आए। परिवार में गुणीजनों के मध्य आपकी संगीत शिक्षा प्रारंभ हुई जो निरंतर अपने नए आयामों को छूती हुई सदैव अग्रसर होती रही। संगीतमय पारिवारिक वातावरण एवं स्वयं की सीखने की प्रवृति के कारण अच्छे गुरुओं के सानिध्य में आपने संगीत को गहराई से जाना। आपका सादा जीवन एवं उच्च विचारों से प्रेरित होकर कई शिक्षार्थियों ने संगीत के प्रति आपके जीवन दर्शन को अपनाया।

### जन्म एवं बाल्यकाल –

पंडित दीनानाथ जी मिश्र का जन्म 1943 में कलाकारों के गढ़ ग्राम हरिहरपुर जिला आज़मगढ़ (उत्तर प्रदेश) में हुआ। आपने ऐसे परिवार में जन्म लिया जहाँ संगीतमय वातावरण पहले से विद्यमान था। अतः आपको संगीत संपदा विरासत में प्राप्त हुई। पंडित जी की वंश परंपरा बनारस घराने के गायकों–वादकों से संबंधित है, आपके पूर्वजों में पिताश्री पंडित राखाल जी मिश्र एवं दादाजी श्रीमान् शिवा मिश्र भी अच्छे संगीतकार थे। पंडित जी अपने छः भाइयों में सबसे बड़े हैं। बाल्यकाल से ही आपकी रुचि संगीत में रही। होश संभालते ही पाँच वर्ष की आयु में माताजी श्रीमती चंद्रावती देवी ने इनकी गायन शिक्षा प्रारंभ की। पंडित जी ने अपनी गायन शिक्षा अपने गुरु व पिताजी पंडित राखाल मिश्र से ली, जो अपने समय के निपुण गायकों में से एक थे। पंडित राखाल मिश्र जी ने अपनी गायन शिक्षा श्री मोहन जी मिश्रा जो हरिहरपुर के ही थे व अपने चचेरे भाई पंडित नवरत्न मिश्र जी, दोनों के सानिध्य में प्राप्त की। आगे चलकर उन्हें संगीताचार्य सुखदेव महाराज का शिष्यत्व प्राप्त हुआ। आपने अल्पआयु में ही अपने समय के अच्छे गायकों के साथ मंच पर कार्यक्रम देना प्रारंभ कर दिया। घर का सांगीतिक वातावरण होने के कारण बचपन से पंडित दीनानाथ मिश्र जी को बड़े–बड़े गुरुओं और गुणीजन कलाकारों को सुनने का तथा कार्यक्रम प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

## वंश परिचय–

' पंडित दीनानाथ मिश्र जी की वंश परंपरा बनारस घराने के गायकों वादकों से संबंधित रही है। आपके पूर्वज भी अच्छे संगीतकार थे, जिनमें सर्वप्रथम आपके दादा जी श्री शिवा मिश्र का नाम आता है ,आप एक महान संगीतकार थे। पंडित शिवा मिश्र ने गायन की शिक्षा अपने पिता श्री राम जी मिश्र से प्राप्त की, रामजी मिश्र के तीन पुत्र– श्री लालता मिश्र, शिवा मिश्र व ज्वाला मिश्र थे। इन तीनों भाइयों में शिवा मिश्र संगीत कला में सबसे अधिक निपुण थे, शिवा मिश्र ने अपने चचेरे भाई नवरत्न मिश्र से संगीत की शिक्षा ग्रहण की। नवरत्न मिश्र जितने अच्छे गायक थे उतने ही अच्छे सारंगी वादक भी थे।शिवा मिश्र के सुपुत्र पंडित राखाल मिश्र एक अच्छे गायक कलाकार थे, ये 1936 के आकाशवाणी के 'ए' ग्रेड के कलाकार थे, आपके रिकार्ड बनारस विश्वविद्यालय में आज भी उपलब्ध हैं। पंडित राखाल मिश्र ने प्रसिद्ध गायक पंडित ओंकारनाथ ठाकुर के साथ विभिन्न संगीत समारोहों में प्रभावशाली प्रस्तुतियाँ दीं। '[1] 'इसी संदर्भ में एक बार राँची में पंडित ओंकारनाथ ठाकुर राग निलाम्बरी पेश कर रहे थे, पंडित राखाल मिश्र इस राग से अनभिज्ञ थे, किन्तु वे पंडित ओंकारनाथ ठाकुर के साथ इस राग को इस तरह गाने लगे जैसे यह उनकी पूर्व परिचित रागों में से हो जबकि इस राग को उन्होंने उसी समय सीखकर पंडित ओंकारनाथ ठाकुर के साथ प्रस्तुत किया। 1935–40 तक राखाल मिश्र ने कोलकाता के ऑल इंडिया रेडियो से गायन के कार्यक्रम प्रस्तुत किए। उस समय के प्रमुख कलाकारों के मध्य पंडित जी की अपनी एक अलग पहचान थी, जैसे पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, दिल्ली के उस्ताद नासिर खाँ, पंडित वासुदेव मिश्रा, पंडित संजीवन जी मिश्रा, पंडित सूरज मिश्रा व चंद्रमा मिश्रा, बनारस के पंडित रामदेव जी मिश्रा, पंडित हनुमान जी मिश्रा, बड़े रामदास जी व छोटे रामदास जी, पंडित रामो जी मिश्रा। '[2]

' पंडित राखाल मिश्र की तानों की तैयारी,आलाप लेने का ढंग और उनके सरगम की तैयारी सुनने योग्य होती थी इसके अतिरिक्त बड़ा ख़्याल एवं छोटा ख़्याल तथा बनारस घराने की ठुमरी, टप्पा, दादरा, भजन, चैती, कजरी व ग़ज़ल गायन में उनकी कहीं सानी नहीं थी। उनके अच्छे मित्रों में लच्छू महाराज, अच्छन

---

1. पंडित जी से चर्चा दिनांक: 20/05/2012, स्थान– कोलकाता (पंडित जी के निवास स्थान पर)
2. श्री शम्भूनाथ मिश्रा से चर्चा प्रत्यक्ष ,दिनांक:18/06/2013,स्थान: आज़मगढ़ (उनके निवास स्थान पर)

महाराज, शम्भू महाराज, बड़े गुलामअली खाँ साहब, उस्ताद आमिर खाँ साहब के नाम आते हैं। 1950 से 1969 तक पंडित राखाल मिश्र जी ने हिन्दुस्तान के कई बड़े–बड़े मंचों पर प्रभावपूर्ण प्रस्तुतियाँ दीं। वाद्य यंत्रों में पंडित राखाल मिश्र जी को सारंगी सर्वाधिक प्रिय थी, वे कई बार सारंगी बजाया करते थे। उनके कई शिष्य ऐसे हुए जिन्होंने उनके बाद देश–विदेश में अपनी पहचान बनाई। उनकी इस वंश परंपरा को उनके छः पुत्र आगे बढ़ा रहे हैं, जिनमें तीन संगीत के व्याख्याता हैं – श्री शम्भूनाथ मिश्र, श्री सारनाथ मिश्र, श्री पशुपति नाथ मिश्र व तीन पुत्र अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कलाकार हैं – (1) संगीत रत्न पंडित दीनानाथ मिश्र, (2) पंडित भोलानाथ मिश्र, (3) तबला वादक पंडित काली नाथ मिश्र। पंडित भोलानाथ मिश्र दिल्ली में संगीत के क्षेत्र में कार्यरत हैं व दिल्ली रेडियो स्टेशन के उच्च श्रेणी के कलाकार हैं। पंडित कालीनाथ मिश्र जो मुम्बई में कला के क्षेत्र में अपना नाम कमाते हुए अपने बुजुर्गो का नाम रोशन कर रहे हैं व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी कला का प्रदर्शन कर अपनी संगीतमयी वंश की कसौटी पर खरे उतर रहे हैं।'[1]

## प्रारंभिक जीवन –

'पंडित दीनानाथ मिश्र का जन्म 1943 में ग्राम हरिहरपुर जिला आज़मगढ़ (उत्तर प्रदेश) में हुआ। इन्होंने अपना बचपन अपने पैतृक गाँव में बिताया व प्रारंभिक शिक्षा भी वहीं ली। पंडितजी का जन्म समृद्ध परिवार में हुआ। इनके पूर्वजों का संबंध रजवाड़ों से रहा। 1959 –60 में सोलह वर्ष की आयु में आपके पिता पंडित राखाल मिश्र आपको कोलकाता ले आए, जहाँ आपने अपनी शिक्षा के साथ संगीत की शिक्षा भी जारी रखी। सन् 1960 में 17 वर्ष की आयु में आपने कोलकाता रेडियो स्टेशन से गायन शुरू किया। छोटी उम्र में वे रेडियो के बी हाई ग्रेड के कलाकार बन गए। 1960–61 में ही आपने संगीत के अखिल भारतीय कार्यक्रम में हिस्सा लिया और अल्पआयु में ही आपने न केवल बड़े–बड़े मंचों पर प्रस्तुतियाँ दीं बल्कि कई उपलब्धियाँ भी हासिल कीं।'[2]

---

1.श्री शम्भूनाथ मिश्रा से चर्चा प्रत्यक्ष ,दिनांक:18/06/2013,स्थानः आज़मगढ़ (उनके निवास स्थान पर)
2. पंडित जी से चर्चा , दिनांकः 20/05/202 ,स्थान– दिल्ली

## पारिवारिक स्थिति और संगीतात्मक पर्यावरण –

'पंडित जी की पारिवारिक स्थिति प्रारंभ से ही समृद्ध एवं संपन्न रही, संगीत तो उन्हें विरासत में ही मिला। होश संभालते ही पंडित दीनानाथ मिश्र ने पाँच वर्ष की आयु में अपनी माता श्रीमती चंद्रावती देवी से संगीत की शिक्षा लेना प्रारंभ किया। संगीत के प्रति इनकी गहरी रुचि देखते हुए इनके गुरु व पिताजी स्व. पंडित राखाल मिश्र ने इनकी संगीत शिक्षा को आगे बढ़ाया। इनका बचपन इनके पैतृक गाँव हरिहरपुर में ही बीता। अपने भाइयों में सबसे बड़े होने के कारण सभी से इन्हें मान सम्मान व आदर मिला और सभी भाइयों को इनका सदैव स्नेह व आशीर्वाद मिला।'[1]

' परिवार में अपार धन संपदा होते हुए इन्होंने अपने सभी भाइयों के मध्य स्नेहपूर्ण वातावरण में सामंजस्य बिठाते हुए संपत्ति का इस तरह बंटवारा किया कि किसी के मन में कटुता पैदा न हो, इन भाइयों का आपसी प्रेम आज भी कायम है। आज भी पारिवारिक कार्यक्रम के अंतर्गत छहों भाई एक साथ स्नेह के साथ उपस्थित होते हैं। सोलह वर्ष की आयु में जब पंडित दीनानाथ मिश्र को उनके पिता कोलकाता लाए तब उन्होंने अपनी संगीत शिक्षा को निरंतर आगे बढ़ाया। कुछ समय बाद वे लखनऊ के संगीताचार्य चिन्मय लाहिड़ी जी के गायन से इतने प्रभावित हुए कि उनके शिष्य बन गए। चिन्मय लाहिड़ी जी पटियाला घराने की गायकी से संबंध रखते थे। पंडित दीनानाथ मिश्र ने उनसे कई वर्षों तक ख़्याल व ठुमरी गायन की शिक्षा प्राप्त की । 1960 में आपका विवाह श्रीमती माया देवी से हुआ। आपकी धर्मपत्नी ने आपके जीवन में हर प्रकार से सहयोग दिया व हमेशा आपका साथ निभाया, आपका दाम्पत्य जीवन बड़ा ही खुशहाल है। पंडित जी के दो पुत्र व एक पुत्री हैं, उनकी पुत्री स्नेहलता मिश्रा भी संगीत के क्षेत्र में दिल्ली में कार्यरत हैं व उनके छोटे पुत्र श्री मंगल मिश्रा टी. वी. व फिल्म जगत में अपना नाम कमा रहे हैं। वर्तमान में कई टी.वी. धारावाहिकों में वे अपना पार्श्व गायन कर रहे हैं। अतः पंडित जी की इस गायन परंपरा को उनके छोटे पुत्र आगे बढ़ा रहे हैं।'[2]

इस प्रकार हम देखते हैं कि पंडित जी का पूरा परिवार संगीत की सेवा में लगा है। आपके भाई, आपके पुत्र एवं आपके भाइयों के पुत्र सभी अपनी योग्यता के अनुसार

1. श्री सारनाथ मिश्र से चर्चा , दिनांकः 18/03/2011,स्थान– दिल्ली
2. वही

गायन एवं वादन के क्षेत्र में भारतीय संगीत के विकास व प्रचार–प्रसार में अपना–अपना योगदान दे रहे हैं।

## स्वभाव, रहन–सहन व जीवन दर्शन –

'पंडित जी स्वभाव के बड़े सरल व मिलनसार हैं। उनका स्वभाव ऐसा है कि छोटा–बड़ा कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार उनसे संपर्क रख सकता है। वे सदैव अपने स्वयं के द्वारा बनाई गई स्वनिर्मित सांगीतिक दुनिया में खोए रहते हैं। सहनशीलता, दया और स्नेहपूर्ण व्यक्तित्व के धनी पंडित जी का सहज गुण विनम्रता है। बातचीत के दौरान वे सामने वाले व्यक्ति को सुनना अधिक पंसद करते हैं अतः उनके व्यक्तित्व की यह एक खास विशेषता है कि वे मृदुभाषी होते हुए भी मितभाषी हैं। अपने शिष्यों के प्रति आपके व्यवहार की विशेषताएँ भी आपके स्वभाव के संदर्भ में उल्लेखनीय हैं।'[1]

'आपके पुत्र मंगल मिश्र इस बात को इस प्रकार बताते हैं कि स्वभाव बहुत शांत और गंभीर है किंतु साथ ही साथ मूडी भी हैं, सबके सामने शिष्यों का प्रश्न पूछना उन्हें नापसंद है अकेले में विनम्रमता से कुछ पूछते, तो समझा देते हैं।

पंडित जी अपनी दिनचर्या में रियाज़ का विशेष ध्यान रखते हैं, प्रायः प्रातः पाँच बजे उठकर वे रियाज़ करते हैं, रियाज़ करते समय वे राजनीतिक व अन्य पारिवारिक बातें करना बिल्कुल पसंद नहीं करते। अगर कोई भी व्यक्ति पंडित जी का रियाज़ सुनना चाहता है तो इससे उन्हें कोई आपत्ति नहीं बशर्ते वह व्यक्ति उनके रियाज़ में व्यवधान पैदा न करे।'[2]

आपका सुवर्ण चेहरा, उन्नत ललाट एवं गहन मुद्रा आपके विचारशील व्यक्तित्व के लक्षण को प्रकट करते हैं। आपकी आवाज़ जितनी सुरीली व लचीली है आपका व्यक्तित्व भी उतना ही सुंदर है। आपका रहन–सहन बिल्कुल सादा व सरल है इसमें कोई बनावटीपन नहीं है, यही आपके चरित्र की महानता को दर्शाता है। पंडित जी का गांभीर्य इस बात से झलकता है कि वे बात करते समय आवश्यकता

---

**1.श्री सारनाथ मिश्र से चर्चा , दिनांक: 20/03/2011,स्थान– दिल्ली**
**2.श्री मंगल मिश्र से चर्चा , दिनांक: 20/12/2012, स्थान– मुम्बई**

अनुसार ही बोलते हैं, और हर वाक्य में उनका अनुभव बोलता है। संगीत संबंधी चर्चा के समय तो उनका एक–एक वाक्य अमूल्य व शिक्षाप्रद होता है। विभिन्न पुरस्कार, उपाधियाँ अथवा लोकप्रियता उनकी सरलता को भंग नहीं कर पाते हैं।

आपके स्वभाव में न तो घमंड है और न ही कठोरता, किंतु अपने शिष्यों को शिक्षा देते समय कभी–कभी उनकी थोड़ी सी कठोरता झलकती है, पंडित जी संगीत शिक्षा देते समय किसी बिंदु को स्पष्ट करने के लिए स्वयं गाकर समझाते हैं जिससे बातों–बातों में ही उनके शिष्यों को कई नई–नई चीज़ें सीखने को मिल जाती हैं। वे अपने शिष्यों को बहुत प्रोत्साहित करते हैं साथ ही समय–समय पर अच्छा प्रदर्शन करने पर उनकी प्रशंसा भी करते हैं।

'आपने संगीत को पूजा अर्चना समझकर इसकी आराधना की है। अपने शिष्यों को शिक्षा देने के संबंध में आपका मानना है कि स्वरज्ञान के लिए रियाज़ सबसे पहला चरण है। स्वर ज्ञान के साथ–साथ लय ज्ञान भी उतना ही ज़रूरी है, इसके पश्चात् गले की तैयारी के लिए स्वराभ्यास के साथ–साथ लय की आदत डालना ज़रूरी है। आपका मानना है कि विलम्बित ख़्याल से गले का अच्छा रियाज़ होता है। अतः शिक्षा के आरंभ से ही विद्यार्थी की आवाज़ और स्वर लगाव पर ध्यान देना आवश्यक है। संगीत में सफलता के लिए वे रियाज़ को महत्वपूर्ण मानते हैं, वे कहते हैं कि जैसा उस्ताद आमिर खान ने कहा है कि जब आदमी बच्चा होता है तब से लेकर अठ्ठारह–उन्नीस साल की उम्र तक जल्दी–जल्दी बढ़ता है, उसके बाद की उम्र तक उसका कद बढ़ता ज़रूर है पर बहुत धीरे–धीरे, यही बात गाने की भी है शुरू में तरक्की का साफ पता चलता है बाद में कम पर तरक्की होती ज़रूर है, रियाज़ करते रहना चाहिए।'[1]

'आज पंडित जी के विद्यार्थी संसार के अलग–अलग कोनों में अपना नाम कमा रहे हैं। पंडित जी के अनुसार गाने के तीन दर्जे होते हैं – पहला सुर–ताल पर काबू पाने का, दूसरा अपने गुरु की गायकी की नकल का व तीसरा उस गायकी की झलक लेते हुए अपनी एक नई शैली का, जो व्यक्ति तीसरे दर्जे तक पहुँच जाता है वही सही मायने में कलाकार है।'[2]

---

**1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांकः 21/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)**
**2. वही**

'पंडित जी को पान खाने का शौक रहा है परंतु अपनी किसी भी गायन प्रस्तुती के पहले वे पान नहीं खाते हैं। किसी मंच पर जब वह अपनी प्रस्तुती देते हैं, उस समय उनके चेहरे पर अलग तेज नज़र आता है। कढ़ा हुआ कुर्ता–पायजामा, माथे पर लाल गोल टीका, हाथ में तानपूरा लिए पंडित जी छवि अलग ही नज़र आती है।'[1] 'पंडित जी शास्त्रीय संगीत की उपेक्षा से आहत हैं, उनका कहना है कि संगीत कला की यह विद्या अपना अस्तित्व बचाने के संकट से जूझ रही है, भौतिकता की चकाचौंध में उदयीमान कलाकार दिशाहीन हो गए हैं। कला प्रेमियों के लिए देश की इस विरासत को बचाना अहम हो गया है। पंडित दीनानाथ मिश्र कहते हैं कि संगीत नाद ब्रह्म है, इसके बिना जीवन मूल्य बिखर जाएँगे। संगीत को पैसे से नहीं तोला जा सकता लेकिन आज इस पर पश्चिम का भूत सवार हो गया है, जो कि इसकी मूल संरचना को तोड़ने का प्रयास कर रहा है, यह भारतीय संगीत के लिए खतरनाक है। आपने अफसोस जाते हुए कहा है कि आज की युवा पीढ़ी इसमें रुचि नहीं ले रही है, इससे अधिक से अधिक धन लाभ कमाने के कारण बतौर पेशा अपनाने की प्रवृति का प्रचलन होने से भारतीय संगीत को इसका खामियाजा उठाना पड़ रहा है। उदयीमान कलाकारों का अकाल पड़ता जा रहा है फिल्मों व एलबमों के ग्लैमर से युवा पीढ़ी गुमराह हो रही है। आपका यह भी कहना है कि भुखमरी व बेरोजगारी ने लोगों की कमर तोड़ दी है, हुनरमंद हाथ, जिन्हें विविध कलाओं की मर्मज्ञता बूझनी चाहिए, वे जिंदा रहने के लिए संघर्षरत हैं। जन सामान्य के साथ–साथ शासन प्रशासन को भी कलाओं के लिए उचित परिवेश निर्मित करने में भागीदारी निभानी चाहिए। आपने इस ओर भी लोगों व सरकार का ध्यान आकर्षित किया है कि आज़मगढ़ हरिहरपुर गाँव संगीत की दुनिया में प्रख्यात है लेकिन इसका संरक्षण नहीं हो पा रहा आपने इच्छा जताई है कि यहाँ गुरुकुल परंपरा के आधार पर शास्त्रीय संगीत सिखाने का आश्रम बनाना चाहिए। इसके लिए हरिहरपुर वासी ज़मीन देने को भी तैयार हैं, बस पहल करने की ज़रूरत है।'[2]

## अन्य रुचियाँ –

प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में विभिन्न अभिरुचियों को अपनाता है जो उसके जीवन के विभिन्न अंग हुआ करते हैं। इसी संदर्भ के आधार पर पंडित दीनानाथ मिश्र

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 21/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)
2. वही

की यदि हम चर्चा करें तो पाएंगे कि उनमें एक बहुत बड़ा संगीत कलाकार तो है ही साथ ही साथ वे आध्यात्मिक सांसारिक एवं भौतिक वातावरण के भी उतने ही संपर्क में हैं जितना एक आम इंसान होता है। उनकी विभिन्न अभिरुचियों में निम्नलिखित बातें पायीं जाती हैं–

## प्रकृति प्रेम –

'पंडित दीनानाथ मिश्र प्राकृतिक दृश्यों के अवलोकन में अपनी विशेष रुचि रखते हैं। इन्हें विभिन्न पर्वतीय स्थलों, उद्यानों, नर्सरी स्थानों का भ्रमण करने में विशेष आनंद की प्राप्ति होती है। आप समय–समय पर अपनी पारिवारिक यात्राएँ करके अपनी इस रुचि की पूर्ति करते हैं, इससे इनका चित्त एवं मन प्रसन्न रहता है। आप प्राकृतिक दृश्यों को बड़ी गंभीरता से देखते हैं और प्रकृति द्वारा प्रदत्त इस अनोखी विरासत का शांत चित्त से अवलोकन करते हैं।

## अध्यात्म से लगाव –

पंडित दीनानाथ मिश्र का आध्यात्मिक जीवन एक साधारण जीवन के रूप में हैं उन्हें ईश्वर भक्ति, ध्यान, साधना एवं योग प्राणायाम आदि से लगाव है। अपने जीवन में वे नियमित रूप से अपनी इन रुचियों का पूरा ख़याल रखते हैं, वे अपने सादा जीवन में विश्वास रखते हुए नियमित रूप से माँ दुर्गा व साँई बाबा की उपासना करते हैं एवं आत्म शुद्धि हेतु प्रतिदिन अपने द्वारा किए गए प्रत्येक क्रियाकलापों का ध्यान करके उन पर विचार करते हैं। संगीत साधना के अंतर्गत वे इतने लीन हो जाते हैं कि उनका इस भौतिक संसार से उस समय कोई जुड़ाव नहीं रहता। वे अपने शिष्यों से भी यही अपेक्षा करते हैं कि संगीत साधना करते समय उसमें इतने डूब जाओ कि देश दुनिया की कोई खबर ही न रहे। "[1]

## दूरदर्शन कार्यक्रमों में रुचि –

' पंडित दीनानाथ मिश्र वैसे तो दूरदर्शन के कार्यक्रमों में विशेष रुचि नहीं लेते किंतु कुछ कार्यक्रम ऐसे हैं जिन्हें वे नियमित रूप से देखते हैं जैसे शास्त्रीय संगीत से

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 21/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)

संबंधित कार्यक्रमों में वे विशेष रूप से रुचि लेते हैं एवं संगीत संबंधित परिचर्चाओं को भी वे ध्यान पूर्वक सुनने में रुचि रखते हैं, देश–दुनिया से जुड़े रहने के लिए वे हमेशा लगभग आधा घंटा दूरदर्शन से प्रसारित समाचार अवश्य सुनते हैं, इसके अतिरिक्त पंडित जी क्रिकेट मैच को बड़े चाव से देखते हैं। वे हमेशा मैच के स्कोर के अतिरिक्त प्रत्येक खिलाड़ी के खेल, उसके खेलने की तकनीक, गेंदबाजों की गेंदबाजी, खिलाड़ियों का क्षेत्र रक्षण आदि सभी पहलुओं पर ध्यान देते हुए क्रिकेट मैच का आनंद लेते हैं। साथ ही मैच पर आधारित बातों पर पारिवारिक सदस्यों के साथ बीच–बीच में चर्चा करते रहते हैं। प्रत्येक मैच में यदि भारतीय टीम के खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन कर रही होती है तो उनके चेहरे का खुशनुमा मिज़ाज देखते ही बनता है। वे सपरिवार बैठकर क्रिकेट के मैच को देखना पसंद करते हैं, व उस मैच पर अपनी प्रतिक्रिया देते और लेते हैं। कोलकाता के ईडन गार्डन में यदि अंतर्राष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट का मैच हो तो उसे स्टेडियम में प्रत्यक्ष देखने अवश्य जाते हैं। दूरदर्शन के अन्य कार्यक्रमों में पंडित जी धार्मिक धारावाहिकों को भी रुचि लेकर देखते हैं। '[1]

## दर्शनीय स्थलों की यात्राओं के प्रति लगाव –

'पंडित दीनानाथ मिश्र अपने निजी जीवन में दर्शनीय स्थलों की यात्राओं में भी विशेष रुचि लेते हैं वे अपने पारिवारिक सदस्यों के साथ समय–समय पर विभिन्न यात्राओं पर जाते हैं जिनमें नैनीताल, कुल्लु मनाली, कश्मीर, दार्जलिंग एवं विभिन्न ऐतिहासिक स्थल प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त यदि दर्शनीय स्थलों के साथ कोई स्थान अपनी धार्मिक मान्यताओं से जुड़ा हो तब उस स्थान के भ्रमण का आनंद इनके लिए कई गुना अधिक बढ़ जाता है। धार्मिक स्थलों के भ्रमण में आपकी आस्था शिरडी के सांई बाबा में विशेष रूप से है, इनका प्रयास रहता है कि कम से कम प्रति वर्ष एक बार सांई के दरबार में जाकर अपनी हाजिरी अवश्य लगाएँ, इस प्रयास में वे अधिकाशंतः सफल भी रहते हैं। '[2]

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांकः 21/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)
2. वही

मनुष्य का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि वह किस परिवार में जन्म ले रहा है तथा उस घर में उसे किस–किस प्रकार का वातावरण मिल रहा है। परंपरागत तरीके से आए संस्कार या पूर्वजों के गुणों का बच्चों में संचय होना एवं उन संस्कारों का धीरे–धीरे पल्लवित होकर उनमें विभिन्न योग्यताओं का समावेश होना तथा इन विशेषताओं को अगली पीढ़ी को सौंपना ही वंशक्रम है। पंडित जी की गायन शिक्षा पर भी इस वंश परंपरा का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।

# तृतीय अध्याय

## "गायन शिक्षा"

1. प्रारम्भिक गायन शिक्षा
2. पंडित जी पर अन्य कलाकारों का प्रभाव

# तृतीय अध्याय

## गायन शिक्षा

प्रत्येक व्यक्ति की अपनी क्षमताएँ एवं सीमाएँ होती हैं। किसी भी कार्य में सफलता प्राप्ति के लिए उसमें निहित योग्यता तथा उसको मिलने वाले परिवेश का विशेष स्थान होता है। मानसिक रूप से व्यक्ति भिन्न–भिन्न होते हैं, इसी का परिणाम है कि कुछ व्यक्ति अपने कार्यों को साकार रूप दे पाते हैं एवं कुछ विफल हो जाते हैं। मनोविज्ञान में वंशानुक्रम एवं पर्यावरण की उन सब विशेषताओं का समावेश होता है जो व्यक्ति को अपने माता–पिता, पारिवारिक सदस्य एवं अपने सहपाठियों से प्राप्त होते हैं। बाल्यकाल में प्राप्त हुए ये सभी संस्कार धीरे–धीरे अंकुरित होते हुए एक विशाल वृक्ष का निर्माण करते हैं। पंडित दीनानाथ मिश्र भी इन सभी पहलुओं से अछूते नहीं रहे, उन्हें जो प्रारंभ में संगीत शिक्षा प्राप्त हुई या यूँ कहें कि माता जी ने जो बीजारोपण किया वह ऐसा था कि पंडित जी को निरंतर ऊँचाइयों पर ले जाता गया जो पारिवारिक वातावरण एवं अपने गुरुजनों से प्राप्त संगीत शिक्षा का ही यह परिणाम है कि आज वे एक विश्व प्रसिद्ध कलाकार के रूप में जाने जाते हैं।

' पंडित दीनानाथ मिश्र ने ऐसे परिवार में जन्म लिया जहाँ के वातावरण में संगीत पहले से विद्यमान था, अतः विरासत के रूप में यह संगीत संपदा इन्हें प्राप्त हुई। पंडित जी का परिवार बनारस घराने के गायकों–वादकों से संबंधित है, आपके पूर्वजों में पिताश्री पंडित राखाल मिश्र एवं दादाजी श्रीमान् शिवा मिश्र भी अच्छे संगीतकार थे। बाल्यकाल से ही आपकी रुचि संगीत में रही। होश संभालते ही पाँच वर्ष की आयु में माता जी श्रीमती चंद्रावती देवी ने इनकी गायन शिक्षा प्रारंभ की। उन्होंने इनके मन मस्तिष्क में संगीत का ऐसा बीजारोपण किया जो सतत् अग्रसर होते हुए विशाल वृट वृक्ष के रूप में फल फूल रहा है। '[1]

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 22/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान

## प्रारंभिक गायन शिक्षा

'माताजी श्रीमती चंद्रावती देवी से अपनी गायन शिक्षा को प्रारंभ करने के पश्चात् पंडित जी ने विधिवत रूप संगीत शिक्षा अपने गुरु व पिताजी पंडित राखाल मिश्र के सानिध्य में प्रारंभ की जो कि अपने समय के निपुण गायकों में से एक थे। घर का संगीतमय वातावरण होने के कारण बचपन से पंडित दीनानाथ मिश्र को बड़े–बड़े गुरुओं और गुणीजन कलाकारों को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पिताजी के साथ–साथ, संगीत का औपचारिक प्रशिक्षण बनारस घराने के संगीताचार्य पंडित सुखदेव महाराज से अनुशासन में रहते हुए ग्रहण किया। आपसे प्राप्त शिक्षा के द्वारा कोलकाता में एक मंच पर देश की महान् संगीत हस्तियों के संपर्क में आने का विशेषाधिकार मिला निरंतर इनके संपर्क से आपने अपने गायन को विकसित कर अनेक गुणिजनों को प्रभावित किया। लखनऊ के संगीताचार्य चिन्मय लाहिड़ि जी से वे इतने प्रभावित हुए कि उन्हें अपने गुरु के रूप में अपनाकर उनकी ख़्याल, शैली और ठुमरी का कई वर्षो तक प्रशिक्षण प्राप्त किया।'[1]

## पंडित जी अन्य कलाकारों का प्रभाव

'पंडित दीनानाथ मिश्र की गायकी वैसे तो पूर्ण रूप से मौलिकता लिए हुए है साथ ही अपने नवीन प्रयोगों से अन्य गायकों से पृथक करती है परंतु आपकी गायकी में ऐसे कुछ महान् कलाकारों की छाया नज़र आती है जिन्हें बचपन से आपने खूब सुना है। इन प्रमुख कलाकारों में मुख्य रूप से जिन–जिन संगीतज्ञों का आप पर प्रभाव दिखाई देता है उनमें से प्रमुख रूप से उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ, उस्ताद अमीर खाँ, संगीताचार्य चिन्मय लाहिड़ि, उस्ताद नज़ाकत अली, सलामत अली, पंडित भीम सेन जोशी, गिरिजा देवी, सितार वादक उस्ताद विलायत खां, सितार वादक पंडित रविशंकर , सरोद वादक अली अकबर खां थे। '[2]

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 22/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)
2. वही

## उस्ताद बड़े गुलाम अली खां का प्रभाव

' पटियाला घराने के सुप्रसिद्ध गायक पंडित दीनानाथ मिश्र की गायकी में उस्ताद बड़े गुलाम अली खां की गायकी का विशेष प्रभाव दिखाई देता है। उस्ताद बड़े गुलाम अली खां की तरह आपने अपनी बेहद सुरीली व लोचदार आवाज़ तथा अभिनव शैली के बूते पर ठुमरी को एकदम नए अंदाज़ में ढाला, जिसमें लोक संगीत की मिठास और ताज़गी दोनों मौजूद है। संगीत समीक्षकों के अनुसार उस्ताद बड़े गुलाम अली खां साहब ने अपने प्रयोग धर्मी संगीत की बदौलत ठुमरी की बोल–बनाव शैली से परे जाकर उसमें एक नई ताज़गी भर दी। गायकी की इसी शैली को अपनाकर पंडित जी ने इसे अपने चिंतन के अनुसार ढालकर एक नया रूप प्रदान किया। '[1]

## उस्ताद अमीर खां का प्रभाव

'किराना घराने के सुप्रसिद्ध गायक उस्तादअमीर खां की गायकी से भी पंडित जी अत्यधिक प्रभावित हुए हैं। खां साहब की गायकी स्वर प्रधान थी जो कि पंडित दीनानाथ मिश्र को वशीभूत कर उनमें शांत व गंभीर बना देने वाला प्रभाव उत्पन्न करती थी। खां साहब के गले की बारीक हरकतें जैसे खटका, मुर्की, गिटकारी, इत्यादि उनकी आवाज़ में अत्यधिक प्रभावशाली ढंग से निकलती थी जिनका पंडित जी पर गहरा प्रभाव पड़ा। अतः जाने अनजाने में पंडित जी की गायकी में उस्ताद अमीर खां के गायन की छाप भी दिखाई पड़ती है। मुलतानी, दरबारी कान्हड़ा, शुद्ध कल्याण, मियां मल्हार, आभोगी और ललित राग उस्ताद अमीर की तरह पंडित जी के भी प्रिय राग हैं।'[2]

## संगीताचार्य चिन्मय लाहिड़ि जी का प्रभाव

गायन शैली में कुछ विशेषताएँ पीढ़ी दर पीढ़ी चली आती हैं। शिष्य की गायकी में सबसे अधिक प्रभाव अपने गुरु का पड़ता है। ' पंडित दीनानाथ मिश्र में जो अद्‌भुत रेंज

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांकः 23/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)
2. वही

व असीमित मिठास दिखाई पड़ती है वह उन्हें अपने गुरु चिन्मय लाहिड़ि से प्राप्त हुई साथ ही मधुर आवाज़ के धनी पंडित दीनानाथ मिश्र की गायकी में बढ़त, खटका, मुर्की और सुंदर तानों की शानदार लोच के साथ किसी राग का विकास करना आदि गुण उनके गुरु चिन्मय लाहिड़ि जी की ही गायकी के अंग हैं। पंडित जी भी अपने गुरु के समान सदैव नवीन तकनीय एवं बौद्धिक रचनात्मकता के लिए तत्पर रहते हैं। पंडित जी की गायकी में अपने गुरु की पूर्ण झलक प्रकट होती है।'[1]

## उस्ताद नजाकत अली सलामत अली का प्रभाव

पंडित दीनानाथ मिश्र बाल्यकाल से ही जिज्ञासु प्रवृति के हैं वे किसी एक शैली में बंधकर गाने के पक्षधर नहीं रहे जहाँ से जो भी अच्छी बात मिली उसे अपनी गायकी में उतारने का सदैव प्रयास किया है। 'महान संगीतकार उस्ताद नजाकत अली एवं सलामत अली खां की गायकी सुनने के बाद उनसे प्रभावित हुए बिना पंडित जी भी नहीं रह सके। दोनों की युगल गायकी की आलाप तानें, मुर्कियाँ जमजमा, बढ़त व मूर्च्छना आदि असमान्य प्रयोगों को सुनकर पंडित जी इतने प्रभावित हुए कि उनकी गायकी के विभिन्न अंगों को अपनी गायकी के साथ एक नवीन अंदाज़ में आत्मसात करने लगे। पंडित जी ने कभी भी किसी कलाकार की नकल नहीं की परंतु यदि किसी कलाकार में अच्छी बात नज़र आई तो उसे अनदेखा भी नहीं किया। वे सदैव अच्छे कलाकारों को सुनकर अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपनी गायकी में प्रयोग करते हुए अपनी मौलिकता का विशेष ध्यान रखते हैं।'[2]

## भारत रत्न स्वर्गीय पंडित भीमसेन जोशी का प्रभाव

'पंडित दीनानाथ मिश्र प्रयोगवादी कलाकार हैं, वे अपनी गायकी में हमेशा नवीन प्रयोग करते हुए सराहनीय प्रयासरत रहते हैं, उनमें यह गुण पंडित भीमसेन जोशी की ही देन है क्योंकि पंडित भीमसेन जोशी किसी घराने के पीछे बुरी तरह पड़े हों ऐसा नहीं है उनकी सोच के अनुसार घराना एक आधार है किंतु अन्य घरानों में पायी जाने वाली ऐसी बातें जो गायकी को एक नवीन स्वरूप प्रदान करे, इसको ग्रहण करने के पक्षधर

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 23/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)
2. वही

हैं। पंडित भीमसेन जोशी का मानना है कि सभी बातें किसी एक घराने की गायकी में संभव नहीं है। अतः किसी एक घराने से बंधकर रहना अच्छे गायक का स्वभाव नहीं होना चाहिए। इन सब बातों का पंडित दीनानाथ मिश्र पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे बनारस घराने का प्रतिनिधित्व करते हुए गायन के क्षेत्र में अपनी गायकी को अनोखा एवं सुंदर स्वरूप दे पाए। बनारस घराने से बाहरी बातों को उन्होंने अपनी गायकी में इस ढंग से प्रयोग किया कि वह उनकी नवीन एवं मौलिक कृति बन जाती है।'[1]

## सितार वादक उस्ताद विलायत खां का प्रभाव

पंडित दीनानाथ मिश्र ने अपने आदर्श के रूप में जिन लोगों को रखा उनमें न केवल सभी गायक थे अपितु विभिन्न संगीत विधाओं जैसे नर्तन एवं वादन आदि के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त कलाकारों को अपना प्रेरणा स्त्रोत मान निरंतर उनके संपर्क में रहने तथा उन्हें अनेकों बार सुनने का उनकी गायकी पर प्रभाव पड़ा, इसी श्रेणी में प्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद विलायत खां के सितार वादन ने उनके गायन पर अमिट छाप छोड़ी क्योंकि ' उस्ताद विलायत खां ने अपने पिता उस्ताद इनायत खां के पारंपरिक सितार वादन को न अपनाते हुए अपनी खुद की एक नई शैली कायम की ऐसे ही नवीन प्रयोग पंडित दीनानाथ मिश्र किया करते हैं। उस्ताद विलायत खां ने सितार में नए–नए शोध करके एक नई शैली को जन्म दिया जिसे सितार वादन की नई पीढ़ी विलासखानी बाज के नाम से जानती है। इनका यह बाज पारंपारिक सितार वादन से अधिक आकर्षक है। शास्त्रीय बंधनों में रहकर इस नए प्रयोग ने उस्ताद विलायत खां को सितार के क्षेत्र में विश्व प्रसिद्ध कलाकार के रूप में प्रस्तुत किया।'[2] इसी प्रकार पंडित जी भी नित नूतन प्रयोगों पर बल देते रहे। इसी का परिणाम है कि आज आप संगीत जगत में मूर्धन्य कलाकार के रूप में स्थान पा सके।

## पंडित रवि शंकर जी का प्रभाव

'पंडित दीनानाथ मिश्र अपने समय के प्रसिद्ध पुरस्कार एवं उपाधियों से सम्मानित कलाकारों की कला के नज़दीक पहुँचकर एक शिक्षार्थी की तरह जो ग्रहण

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांकः 23/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)
2. वही

करने योग्य महत्वपूर्ण बातें हैं उन्हें अपनी गायकी में उतारने का प्रयास करते हैं। भारत रत्न, कालीदास सम्मान तथा अंतर्राष्ट्रीय मैगसेसे पुरस्कार आदि अनेक पुरस्कारों और उपलब्धियों से सम्मानित पंडित परिशंकर के वादन से भी प्रभावित हुए बिना पंडित दीनानाथ मिश्र नहीं रह सके क्योंकि पंडित रविशंकर के सितार वादन की शैली उनकी अपनी शैली है, उसमें सितार पर बीन अंग का आलाप, दो–दो, तीन–तीन, छोटी–बड़ी मीड़ों के साथ मिज़राफ का प्रयोग, विलंबित से अति द्रुत लय उनके दोनों हाथों की उंगलियों का अद्‌भूत तालमेल उनके सितार वादन की अन्यतम विशेषता है। सितार वादन क्रम में वे राग विशेष के मार्मिक तत्वों को उबराते हैं और उन तत्वों को लय ताल के कलात्मक संयोजन में पिरोते हैं।'[1] ऐसी ही विशेषताओं का प्रयोग करके पंडित दीनानाथ मिश्र ने अपनी गायकी में समाहित करके उसे और अधि ाक चमत्कारिक बनाने का प्रयास किया।

## सरोद वादक उस्ताद अली अकबर खां साहब का प्रभाव

' प्रसिद्ध संगीतज्ञ स्वर साधक उस्ताद अलाऊद्‌दीन खां के सुपुत्र उस्ताद अली अकबर खां बड़े ही कठोर अभ्यास एवं अनुशासित ढंग से पिता के संरक्षण में निरंतर अभ्यास करते हुए सिद्ध स्वर साधक के रूप में संगीत प्रेमी जनता के बीच अत्यंत लोकप्रिय हो गए। इनकी लोकप्रियता से पंडित दीनानाथ मिश्र भी अनछुए नहीं रहे। आप निरंतर इसी प्रयास में रहते हैं कि जहाँ से भी कोई अच्छी बात सीखने लायक मिले, उसे ग्रहण कर सकें तथा इस कोशिश में आप कामयाब भी रहते हैं। पंडित दीनानाथ मिश्र ने उस्ताद अली अकबर खां को बहुत बार सुना है व उनके बाज की जो बारीकियाँ हैं उन्हें अपनी गायकी में उतारने की आपने कोशिश की है। संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत उस्ताद अली अकबर खां साहब अनुशासन और अनवरत साधना के द्वारा महान् स्वरसाधक के रूप में संपूर्ण विश्व द्वारा समादृत हैं, उनके सरोदवादन की अपनी मौलिक विशेषताएँ हैं। वे स्वर में नई–नई रचनाओं की सृष्टि करते हैं व उनकी लयकारी तो

---

1. नारायण भक्त : हमारे संगीत कलाकार पृष्ठ. 140 संस्करण 2008

अतुलनीय है। थाप और ध्वनि से जिस संगीत का सृजन होता है उसे श्रव्य करने से अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति होती है। उस्ताद. अली अकबर खां का सरोद वादन हमें ऐसे भाव जगत में ले जाता है, जहाँ पहुँचकर हम आत्मविस्मृत हो जाते हैं।'[1] इसी प्रकार पंडित दीनानाथ मिश्र के गायन से श्रोतागण मंत्र मुग्ध व भाव विभोर हो जाते हैं।

## गिरिजा देवी का प्रभाव

पंडित जी के समान ही बनारस घराने की सुप्रसिद्ध हस्ती श्रीमती गिरिजा देवी भी भारतीय शास्त्रीय संगीत की दुनिया में लोकप्रिय हैं। 'बाल्यकाल से ही संगीत के प्रति अभिन्न रुचि के कारण आपका शिक्षा के प्रति रुझान नहीं बन सका परंतु संगीत के प्रति इतनी गहरी आस्था देखकर परिवार जनों ने इन्हें पंडित श्री चंद्र मिश्र एवं पंडित सरयू प्रसाद मिश्र के सानिध्य में संगीत शिक्षा ग्रहण करने की आज्ञा प्रदान की। गिरिजा देवी ने गायकी के क्षेत्र में अनेक सफलताएँ हासिल कीं इनकी लोकप्रियता धीरे–धीरे संगीत जगत में बढ़ने लगी। इनकी गायकी का जादू हर तरफ छाने लगा। दादरा, होरी, ठुमरी पर जिस तरह की इनकी पकड़ थी उसे सुनकर श्रोता मंत्र–मुग्ध हो जाते थे। अतः पंडित दीनानाथ मिश्र भी इन्हें निरंतर सुनने लगे धीरे–धीरे पंडित जी की गायकी में भी गिरिजा देवी के गायन का प्रभाव दिखाई देना लगा। पंडित जी गिरिजा देवी के ठुमरी गायन से इतने प्रभावित हुए कि आज उनकी पुत्री श्रीमती स्नेहलता मिश्रा नियमित रूप से ठुमरी गायन की शिक्षा श्रीमती गिरिजा देवी से ले रहीं हैं।'[2]

प्राचीन समय से यह परंपरा चली आ रही है कि कोई भी संगीतज्ञ किसी कुशल गुरु के पास जाकर व्यक्तिगत रूप से संगीत शिक्षा प्राप्त करता है और उसमें एक शिष्य का सच्चा सेवा भाव रहता है। इसके अतिरिक्त संगीतज्ञ अपने गुरु से संगीत में व्याप्त उन गहरे तत्वों की जानकारी प्राप्त करता है जिनमें संगीत कला के रहस्यों की गहराई छिपी होती है। यह सब उसे किसी विद्वान गुरु से ही प्राप्त हो सकती है और

---

1. नारायण भक्त : हमारे संगीत कलाकार पृष्ठ. 68, संस्करण 2008
2. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 23/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)

समाज में उस संगीतज्ञ को विशेष स्थान प्राप्त होता है। गुरु के सानिध्य में रहकर जिन विशेषताओं को वह अपनी गायकी में उतारता है और अपनी एक निजि शैली बनाता है वही व्यक्ति विशेष की गायन शैली बन जाती है।

# चतुर्थ अध्याय

## “गायन शैली की परंपरा”

### 1. गायन शैली की परंपरा में बनारस व पटियाला घराना

# चतुर्थ अध्याय

संगीत के क्षेत्र में पीढ़ी दर पीढ़ी कुछ विशेषताओं का चले आना अर्थात गुरु शिष्य परंपरा ही गायन शैली की परंपरा कहलाती है। ' मध्यकाल में देशी रियासतें बन गयीं जहाँ घरानों का जन्म और विकास हुआ। मुगलों के पतन और ब्रिटिश राज्यों की स्थापना से छोटी–छोटी देशी रियासतों की स्थापना हुई। प्रत्येक रियासत में जो गायक होते थे उन्हें राजा को अपना गायन सुनाकर खुश करना होता था और बदले में उन्हें राजा से पूर्ण आश्रय मिलता था।'[1] जब कोई शिष्य उस कलाकार से सीखने आता तो काफी दिनों तक अभ्यास करते रहने के बाद थोड़ा बहुत सीख पाता था। शिष्य पर उस्ताद की कड़ी निगरानी रहती थी न तो उसे अन्य कलाकारों को सुनने की आज्ञा रहती और न ही सीखने की। वह उस्ताद की आज्ञा के बिना कहीं गा भी नहीं सकता था। इस नियंत्रण का परिणाम अच्छा भी था और बुरा भी। अच्छा इस दृष्टि से कि शिष्य पर बाहरी प्रभाव नहीं पड़ता था और उसके बहकने की गुंजाइश नहीं रहती थी और बुरा इस दृष्टि से कि वह गुरु के पंजों में फंसकर अपने आपको नष्ट कर देता। इस प्रकार गुरु के सानिध्य में रहकर जो शिष्य तैयार होते थे उनमें अपने गुरु की गायकी के समस्त प्रमुख अंगों का समावेश होता था और अपने गुरु की गायन शैली की स्पष्ट झलक नज़र आती थी। यही गायन शैली की परंपरा है जो पीढ़ी दर पीढ़ी शिष्य अपने गुरु से प्राप्त करता है।

## गायन शैली की परंपरा

गायन शैली के आधार पर पंडित दीनानाथ मिश्र ने गुरु शिष्य परंपरा को अपनाते हुए अपनी गायन शैली में अपने गुरु की विशेषताओं को पारंपरिक रूप से अपनाया। अपने गुरु संगीताचार्य चिन्मय लाहिड़ी एवं पिता पंडित राखाल मिश्र की गायन शैली की परंपराओं को अपनी गायकी में हूबहू उतारने के साथ–साथ नवीन प्रयोगों द्वारा नयी गायन परंपरा का अविष्कार किया। आप भी गुरु शिष्य परंपरा के

---

1. प्रो. हरीशचन्द्र श्रीवास्तव – राग परिचय –3, पृष्ठ 223, संस्करण–1992

आधार पर नवीन शिष्य तैयार कर संगीत जगत में अपनी गायन शैली का विकास एवं संचार का काम कर रहे हैं। आप अपनी गायकी को परंपरागत तरीके से भावपूर्ण बंदिशों, अलंकारिक वक्र तथा फिरत तानों का प्रयोग, तानों की तैयारी और उनका अधिकाधिक प्रयोग एवं गले की तैयारी आदि विशेषताओं को जैसा आपने गुरु से प्राप्त किया वैसा ही अपने शिष्यों को दे रहे हैं।

'गायन की विभिन्न शैलियों का जो परंपरागत प्रादुर्भाव हुआ है, उन्हीं को घराने के नाम से पुकारा जाता है। अनेक घरानों के राग समान हुआ करते हैं परंतु गाने का ढंग अलग–अलग है राग के गाने के ढंग को शैली कहते हैं, और यही शैली अलग–अलग घरानों में अलग–अलग हुआ करती है। शैली में निम्नलिखित बातों को समझना चाहिए – 1) गीत की बंदिश, 2) आवाज़ लगाने का ढंग 3) राग विस्तार अथवा आलापचारी 4) तानों तथा बोलतानों का प्रयोग 5) ताल एवं लयकारी 6) रागों की पसंदगी।'[1]

शैली निर्माण में उक्त समस्त तत्व यद्यपि सभी घरानों में पाए जाते हैं किंतु इनके प्रयोग का अपना ढंग ही घराने को अलग पहचान देता है। गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत शिक्षण की परंपरा भारतीय संगीत में प्राचीनकाल से चली आ रही है। परंपरागत रूप से ख़्याल गायकी के कुछ मुख्य घराने इस प्रकार माने गए हैं –

1) ग्वालियर 2) आगरा 3) पटियाला 4) जयपुर
5) किराना 6) बनारस 7) दिल्ली 8) अतरौली घराना

गायन की एक ही विधा को प्रस्तुत करने की भिन्न–भिन्न शैलियाँ विकसित हो जाती हैं और इन शैलियों का अनुसरण करने वाले अलग–अलग संप्रदाय बन जाते हैं। कुछ मुख्य गायन शैलियों का संक्षिप्त विविरण इस प्रकार है–

---

1. सुश्री शांति गोवर्धन – संगीत शास्त्र दर्पण भाग – 2, पृष्ठ 74, संस्करण–2008

## ध्रुपद गायन –

'ध्रुपद गायन का अविष्कार पंद्रहवीं शताब्दी में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर द्वारा हुआ था। वर्तमान समय में भी ध्रुपद एक गंभीर और ज़ोरदार गाना माना जाता है। यह मर्दानी आवाज़ का गायन है। इसमें वीर, श्रृंगार और शांत रस प्रधान है। ध्रुपद में स्थायी, अंतरा, संचारी और आभोग ऐसे चार भाग होते हैं। अधिकतर यह चौताल, झंपा, तीव्रा, ब्रह्मताल, रुद्रताल इत्यादि तालों में गाए जाते हैं। ध्रुपद में तानों का प्रयोग नहीं होता, किन्तु इसमें दुगुन, चौगुन, बोलतान, गमक इत्यादि का प्रयोग करने की छूट है।'[1] 'प्राचीनकाल में धुपद गायकों को कलावंत कहते थे। धीरे–धीरे ध्रुपद गायकों के भेद उनके चार वाणियों के अनुसार किए जाने लगे। चार वाणियों के नाम इस प्रकार हैं –1) गोबरहरी वाणी अथवा शुद्ध वाणी, 2) खण्डार वाणी, 3) डागुर वाणी, 4) नोहार वाणी। ध्रुपद गायन को प्रचलित हुए पाँच सौ वर्ष से अधिक हो गए, किंतु लगभग डेढ़ सौ वर्ष से ध्रुपद गायिकी का प्रचार कम हो गया है और ख़्याल गायन का प्रचार अधिक हो गया है। डागर बंधु के नाम से सभी परिचित हैं, जिन्होंने ध्रुपद गायन में नई मिसाल कायम की। '[2]

## ख़्याल –

'जैसा की नाम से ही प्रतीत होता है ख़्याल का अर्थ है, विचार या कल्पना। ख़्याल राग नियमों का पालन करते हुए अपनी इच्छा से विविध आलाप–तानों का विस्तार करते हुए एकताल, त्रिताल, झूमरा, आड़ा चौताल आदि तालों में गाते हैं। ख़्याल गायन में ध्रुपद जैसी गंभीरता और भक्तिरस की शुद्धता नहीं पाई जाती।'[3] ख़्याल दो प्रकार के होते हैं –1) जो विलंबित लय में गाए जाते हैं वे बड़े ख़्याल कहलाते हैं। 2) जो द्रुत लय में गाए जाते हैं वे छोटे ख़्याल कहलाते हैं। छोटे–बड़े ख़्याल जब गायक एक स्थान पर एक समय में गाता है तो ये दोनों प्रायः एक ही राग में होते हैं किंतु बोल दोनों ख़्यालों के अलग–अलग होते हैं। बड़ा ख़्याल विलंबित एक ताल, झूमरा या तिलवाड़ा में तथा छोटा ख़्याल मध्य या द्रुत एक ताल व तीन ताल में

---

1. **http://surshree.blogspot.in/2008/08**
2. वसंत – संगीत विशारद, पृष्ठ 126
3. सुधा श्रीवास्तव – भारतीय संगीत के मूलाधार , पृष्ठ 127, संस्करण–2002

गाया जाता है।

'Just as our classical song Dhrupad was transferred into 'Khyal' on entrance into the mughal court. As in Khayal no change occurred of the Sargam (musical notes) of our classical song. Khayal singing was invented by Sultan Hussian Shakre in the fifteenth Century and brought to the state of perfection by Sadarang, The Darbari singer of Mohammad Shah of Delhi.'[1]

'बीसवीं सदी के कुछ प्रमुख ख़्याल गायक इस प्रकार थे–उस्ताद अल्लादिया खाँ, उस्तादअब्दुल करीम खाँ, उस्ताद फैयाज खाँ, उस्तादअमीर खाँ, पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर, पंडित ओंकार नाथ ठाकुर, पंडित विनायक राव पटवर्धन, पंडित नारायण राव व्यास, पंडित कृष्ण राव पंडित, तथा रामपुर के उस्ताद मुश्ताक हुसैन खाँ इत्यादि। '[2]

## टप्पा –

' टप्पा हिंदी मिश्रित पंजाबी भाषा का श्रृंगार प्रधान गीत है। यह गायन शैली चंचलता व लच्छेदार तान से युक्त होती है तथा अधिकतर काफी, झिंझोटी, बरवा, भैरवी, खमाज आदि रागों में गाया जाता है। इसमें स्थायी व अंतरा होता है, इसकी तानें दानेदार बहुत तैयार लय में गाई जाती है। टप्पा की गति बहुत चपल होती है। कुछ विद्वानों का ऐसा मत है कि प्राचीन ''बेसरा'' गीत से इस गायिकी की उत्पत्ति हुई है।'[3] 'कैप्टन विलर्ड का कथन है कि टप्पा पंजाब में ऊँट हाँकने वाले गाया करते थे।

Tappa was formaly sung by the camel drivers of the Punjab.'[4]

---

1. डॉ. जोगिन्द्र सिंह बावरा – भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास , पृष्ठ 92–93, संस्करण–1992
2. गिरीश चंद्र उप्रेती – भारतीय संगीत, पृष्ठ 37, संस्करण–1996
3. **www.kharibhari.net+** भारतीय + शास्त्रीय + संगीत की + शैलियाँ
4. डा. जोगिन्द्र सिंह बावरा – भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास ,पृष्ठ 99, संस्करण–1992

## ठुमरी –

ख़्याल, टप्पा, ध्रुपद की सभी विशेषताएँ ठुमरी में पायी जाती है। ठुमरी गाने के लिए कल्पनाशील होना आवश्यक है। इसके साथ ही भावपूर्ण हृदय, मधुर, और लोचक आवाज़ भी आवश्यक है। यह गुण स्त्रियों में अधिक पाए जाते हैं, लेकिन इसे स्त्री, पुरुष दोनों ही गाते हैं।

लखनऊ और बनारस ठुमरी के लिए प्रसिद्ध हैं। बनारसी ठुमरी में सुंदरता और मधुरता अधिक पाई जाती है। उत्तर प्रदेश में ठुमरी को विशेष सम्मान प्राप्त है। 'उस्ताद. मौजुद्दीन खाँ बनारस के एक अद्वितीय ठुमरी गायक थे, इनकी शिष्या बड़ी मोती बाई भी अच्छी ठुमरी गाती थीं। बनारस की ही सिद्धेश्वरी तथा आज गिरीजा देवी भी अच्छी ठुमरी गायिका हैं। लखनऊ कथक घराने के महाराज बिंदादीन ने भी बहुत ठुमरी बनाई जिन पर इनके घराने के नर्तक भाव दिखाते हैं। लखनऊ और बनारस घराने की ठुमरी गायकी में अंतर है। पंजाब में पटियाला घराने के गायकों ने भी ठुमरी गाना आरंभ किया जो लखनऊ और बनारस घराने की ठुमरी से भिन्न अंग की होती है और इसे पंजाबी अंग की ठुमरी कहते हैं। पटियाला घराने के बड़े गुलाम अली खाँ बहुत सुंदर ठुमरी गाते थे। '[1]

## तराना –

' यह भी एक प्रकार की ख़्याल गायकी है इसमें गीत के बोलों का कोई अर्थ नहीं होता, जैसे–ताना, दारे, तदारे, ओदानी दीम, तनोम आदि। तराना में भी स्थायी और अंतरा दो भाग होते हैं। इसमें तानों का प्रयोग भी होता है। कहा जाता है जब अमीर खुसरो हिन्दुस्तान आए तब उन्हें संस्कृत भाषा का ज्ञान नहीं था, वे अरबी भाषा के विद्वान थे। अतः उन्होंने निरर्थक शब्द गढ़कर तरह–तरह के हिन्दुस्तानी राग गाए, वे निर्रथक शब्द ही तराना के नाम से प्रसिद्ध हुए।'[2] तरानों का गायन हमारे देश में मनोरंजक माना जाता है।

---

1. गिरीश चंद्र उप्रेती – भारतीय संगीत, पृष्ठ 54, संस्करण–1996
2. वसंत – संगीत विशारद, पृष्ठ 130

## धमार –

' बृज ने दूसरी गायन शैली धमार को जन्म दिया। धमार का गायन होली के अवसर पर ही होता है इसमें प्रायः कृष्ण गोपियों के होली खेलने का वर्णन होता है। नायक बैजू ने धमारों की रचना की। इसकी गायन शैली का आधार ध्रुपद जैसा ही रखा गया। वर्ण्य विषय मात्र फाग से संबंधित और रस श्रृंगार था ध्रुपद की तरह आलाप, फिर बंदिश गाई जाती थी। विभिन्न प्रकार की लयकारियों से गायक श्रोताओं को चमकृत करता था। पखावज के साथ लड़ंत होती थी। सम की लुका छिपी की जाती थी इस प्रकार धमार का जन्म हुआ।'[1] यह गायन शैली देश भर के संगीतज्ञों में फैल गयी। सभी श्रेष्ठ कलाकारों ने इसे गाया।

' गत एक शताब्दी में धमार के श्रेष्ठ गायक नारायण शास्त्री, धर्मदास के पुत्र बहराम खाँ, हमारे प्रपितामह पंडित लक्ष्मणदास जिनकी रची धमारें मारकुन्नगमात् में लखनदास के नाम से अंकित हैं, आलम खाँ, आगरे के गुलाम अब्बास खाँ और उदयपुर के डागर बंधु आदि हुए हैं। ख़्याल गायकों के वर्तमान घरानों में से केवल आगरे के उस्ताद फैयाज खाँ नोम–तोम से आलाप करते थे और धमार गायन करते थे। धमार गायकों को स्वर, ताल और राग का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। '[2]

## ग़ज़ल –

' ग़ज़ल अधिकतर फारसी या उर्दू भाषा में होती है। यह श्रृंगार रस प्रधान गायिकी है। ग़ज़ल अधिकतर रूपक, दीपचंदी, दादरा, कहरवा तालों में गाई जाती है। ग़ज़ल गाने में वे ही गायक सफल होते हैं जिन्हें उर्दू– हिंदी का अच्छा ज्ञान है और जिनका शब्दोच्चारण उच्च श्रेणी का हो। वर्तमान समय में ग़ज़ल व गीत का प्रचार बहुत बढ़ गया है। ग़ज़ल गायन में बेगम अख़्तर, चंदन दास जगजीत सिंह मेंहदी हसन, गुलाम अली, आदि गायकों के नाम उल्लेखनीय हैं।'[3]

---

1.**bharat discovery.org/india./**धमार

2. डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे – संगीत बोध, पृष्ठ 117,संस्करण–1992

3. वही , पृष्ठ 123

## कव्वाली –

' कव्वाली में अधिकतर उर्दू व फारसी भाषा का प्रयोग होता है। कव्वाली मुस्लिम समाज की विशेष गायिकी है। इसमें स्थायी अंतरे के अलावा बीच–बीच में शेर, शायरी  का भी प्रयोग होता है। इसे गाने वाले कव्वाल कहलाते हैं। इसके साथ अधिकतर ढोलक बजती है, साथ ही हाथ से तालियों का भी प्रयोग होता है। इसमें रूपक, कव्वाली तालों का विशेष प्रयोग होता है।

## दादरा –

दादरा एक ताल का भी नाम है, किंतु एक प्रकार की विशेष गायिकी को भी दादरा कहते हैं, यह ग़ज़ल से मिलती जुलती है। मध्य तथा द्रुत लय में दादरा गाया जाता है इसमें प्रायः श्रृंगार रस के गीत होते हैं। फिल्म जगत में दादरे बहुत सफल रहे हैं। फिल्म मुगले आज़म, पाकीज़ा, उमराव जान तथा अन्य कई चल चित्रों में पंजाबी संगीत निर्देशकों गुलाम मुहम्मद, मदन मोहन, खैयाम तथा जयदेव आदि ने दादरा शैली में लता मंगेशकर, आशा भोंसले, मन्ना डे, मुहम्मद रफी आदि से दादरा गवाकर इसकी लोकप्रियता में वृद्धि की है।'[1]

## भजन –

जिस प्रकार ग़ज़लों में उर्दू का प्रयोग होता है, उसी प्रकार हिन्दी शब्दावली से भजन और गीतों की रचना होती है। भजनों में भगवान की लीला व ईश्वर– स्तुती का वर्णन होता है। ज़रूरी नहीं होता कि भजन की रचना किसी एक ही राग में हो, कई ऐसे भी भजन हैं, जो मिश्रित राग – स्वरों द्वारा तैयार हुए हैं। भजन अधिकतर कहरवा, दादरा, रूपक एवं तीनताल में गाए जाते हैं।

## कजरी –

' कजरी को प्रतिष्ठित करने में बनारस के उच्चकोटि के संगीतज्ञ बड़े

---

1. डॉ. जोगिन्द्र सिंह बावरा –भारतीय संगीत की उत्पत्ति एंव विकास , पृष्ठ 109, संस्करण–1992

रामदास जी का योगदान अविस्मरणीय है। इन्हीं के प्रपौत्र पंडित विद्याधर मिश्र ने उपशास्त्रीय अंग में कजरी गायन की परंपरा को जारी रखा है। 1964 में प्रदर्शित फिल्म ''नैहर छुटल जाए'' में गायक मन्ना डे ने एक परंपरागत बनारसी कजरी का गायन किया था।

### चैती –

चैती होली के बाद चैत के महीने में गायी जाती है। पूर्व बिहार की तरफ इसका प्रचार अधिक है। इसमें अधिकतर पूर्वी भाषा का प्रयोग होता है। इसके गीतों में भगवान रामचंद्र की लीलाओं का वर्णन रहता है। ठुमरी गायक चैती भली प्रकार गा सकते हैं।

### लोक गीत –

लोकगीत विशेषतः घर–गृहस्थी के मंगल अवसरों एवं त्यौहारों पर महिलाओं द्वारा गाँवों में अपनी ग्रामीण भाषाओं में गाए जाते हैं। लोक गीतों में हमें भारतीय प्राचीन संस्कृति मिलती है। कुछ समय से लोक गीतों के प्रति आकर्षित होकर सरकार रेडियो, टी.वी के माध्यम से इनका प्रचार करने का प्रयत्न कर रही है। '[1]

### चतुरंग –

'ख्याल, तराना, सरगम, तिरवट जब ये चार अंग किसी गीत में सम्मिलित होते हैं तो उन्हें चतुरंग कहते हैं। पहले भाग में गीत, दूसरे भाग में तराने के बोल, तीसरे में किसी राग की सरगम व चौथे भाग में मृदंग के बोलों की एक छोटी सी परन होती है। चतुरंग को ख़्याल की तरह ही गाते हैं, कितु इसमें ख़्याल की अपेक्षा तानों का प्रयोग कम होता है। '[2]

### त्रिवट–

'यह गीत प्रकार भी कुछ विद्वानों के अनुसार कैवाड़ नामक प्रबंध की परंपरा से जुड़ा है। स्वर और ताल में बंधा हुआ यह गीत अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखता है।

---

1. Podcast.hindyugm.com/ कजरी

2. सुधा श्रीवास्तव – भारतीय संगीत के मूलाधार , पृष्ठ 129, संस्करण–2002

साहित्यिक रचना के अभाव में इस गीत में पखावज एवं तबले पर बजने वाले बोलों का प्रयोग होता है जिसके कारण यह अपनी विचित्रता और लयात्मकता से सभी को आकर्षित करता है। प्रायः ख़्याल गायक ही त्रिवट गाते हैं। राग में बड़ा ख़्याल व छोटा ख़्याल गाने के बाद ही त्रिवट गाया जाता है।'[1]

## गायन शैली की परंपरा में बनारस व पटियाला घराना

'हिन्दुस्तानी संगीत की परंपरागत व्याख्या परंपरा के ही माध्यम से होती है। संगीत की आत्मा और उसके पुनीत संस्कार भी इसी परंपरा के अंतर्गत हैं। वह उसमें अन्तर्निहित है। संगीत की परंपरा में उसकी अमर आत्मा छिपी है। परंपरावाद इसी परंपरागत का एक सुंदर प्रतीक है। वह प्राचीन हिन्दुस्तानी संगीत के प्रति इस तरह की पुनीत भावना है उसी के द्वारा हमें प्राचीन संगीत का सच्चा दर्शन हो सकता है। इस कला का यथार्थ मूल्य जानने के लिए परंपरावाद का सहारा लेना अनिवार्य है। '[2]

' घरानों के संदर्भ में हमारी सांगीतिक परंपरा के सह अस्तित्व के गुण को भी कलात्मक महत्व मिला। हमारी परंपराओं की विशेषताएँ हैं कि कुछ घरानों का मिश्रण हुआ, और कुछ परस्पर प्रभावित होने के उदाहरण मिलते हैं परंतु व्यापक रूप से देखें तो एक ही समय में अलग–अलग स्थानों में अलग–अलग घरानों का विकास हुआ और समानान्तर रूप में विभिन्न स्थानों से जुड़े इन घरानों की एक विशिष्ट भूमिका रही। '[3]

' कला के अतीत को भुलाने से हम उसकी सार्थकता को नहीं समझ सकते, वृक्ष की मजबूत जड़ों पर ही वृक्ष खड़ा रह सकता है और जिस मिट्टी में एक पौधा अथवा वृक्ष उगता है वह उसके पुष्पों और फलों के सौंदर्य और उनकी मिठास को भी निर्धारित करती है। क्या हम संगीत की अमर आत्मा को संगीत परंपरा के बिना पहचान

---

1. सुधा श्रीवास्तव – भारतीय संगीत के मूलाधार , पृष्ठ 129, संस्करण–2002
2. डॉ. सुशील कु. चौबे – संगीत के घरानों की चर्चा , पृष्ठ 8 ,संस्करण–2005
3. सुधा श्रीवास्तव – भारतीय संगीत के मूलाधार , पृष्ठ 169, संस्करण–2002

सकते हैं? इसलिए बिना परंपरावाद की सहायता से हम परंपरागत हिन्दुस्तानी संगीत का भी ठीक–ठीक मूल्यांकन नहीं कर सकते।'[1]

## गायन शैली की परंपरा में बनारस घराना

' बनारस घराने की गायकी भाव प्रधान है, इसमें ठुमरी अंग का विशेष महत्व है। इस घराने के जन्मदाता पंडित गोपाल मिश्र हैं। बनारस की ठुमरी और बनारस के दादरे पर लोकसंगीत का बहुत बड़ा जबर्दस्त प्रभाव पड़ा है। लोकगीतों की स्वत:: प्रवृति भी इन लोकप्रिय शैलियों में प्रवेश कर गयी है।बनारस की ठुमरी में लोकसंगीत का प्रभाव प्रमुख रूप से देखा जा सकता है। बनारस व मिर्जापुर की चैती– कजरी भी ठुमरी का ही एक अंग है। बनारस घराने की ठुमरी में उस क्षेत्र के बोल चाल वहाँ की भाषा और वहाँ के लोक गीतों की तर्जो और धुनों का भी थोड़ा अनुवाद होता है। पीलू, सारंग, माँड, देस, भैरवी और काफी के स्वर लोकसंगीत के धुनों में सुनाई पड़ते हैं, जो आगे चलकर रागों का रूप धारण कर लेते हैं। '[2] शास्त्रीय संगीत के बहुत से रागों का उद्‌गम स्थान लोकसंगीत की धुनों में पाया जाता है। इनके प्रभावों को ख़्याल, तराना, ध्रुपद, धमार आदि शास्त्रीय गायन शैलियों में सम्मान के साथ अपनाया गया है और अपनी बनारस घराने की गायन शैली के साँचे में ढाला गया है। शायद यह कहना गलत न होगा कि यदि लखनऊ घराने की गायकी किसी बाग में लगे हुए गुलाब के फूल के समान है तो बनारस घराने की गायकी किसी फुलवारी में लगी हुई चमेली के समान है। बनारस घराने की गायकी में ठुमरी गायन में भी ख़्याल की छाया दिखाई पड़ती है और स्वरों का चुनाव सीधा रहता है इसे गाने के लिए विशेष प्रकार का गला बनाना पड़ता है। 'बनारस घराने के प्रसिद्ध गायक पंडित राजन साजन मिश्र के अनुसार बनारस घराना ही एक ऐसा घराना है जिसमें ख़्याल, ठुमरी, ध्रुपद, धमार, टप्पा, तराने आदि संगीत के सभी अंगों और रूपों का समावेश है साथ ही शब्दों के उच्चारण और स्वर के साथ लय पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है, इनके पिता पंडित हनुमान मिश्र ने सिखाते समय इन्हें बताया था कि ख़्याल की जननी ध्रुपद है। आलाप में ध्रुपद अंग में भराव आता है गायन और समृद्ध हो जाता है। '[3]

1. डॉ. सुशील कु. चौबे – संगीत के घरानों की चर्चा , पृष्ठ 8 ,संस्करण–2005
2. वही, पृष्ठ 255
3. नारायण भक्त – हमारे संगीतकार , पृष्ठ 114, संस्करण–2008

' इसी प्रकार स्वर साधक पन्नालाल मिश्र भी बनारस घराने के प्रमुख गायकों में से एक हैं। आपकी गायकी में भी बनारस घराने की सभी विशेषताएं पायी जाती हैं। पंडित पन्नालाल मिश्र जी के संबंध में यह बात कही जाती है कि बनारसी अंग की ठुमरी, दादरा, पूर्वी, होली, कजरी, आदि गायन के साथ ही शास्त्रीय गायन में भी आपको असाधारण अधिकार प्राप्त था, आप जिस लोच–बोल–बनाव व सुंदर ढंग से ठुमरी प्रस्तुत करते थे वही बनारसी गायकी अंग की विशेषताएँ मानी जाती हैं। '[1] कहने का तात्पर्य यह है कि ठुमरी, दादरा, आदि के गायन के समान ही ध्रुपद, धमार, ख़्याल, तराना आदि के गायन में भी भावपूर्ण प्रदर्शन बनारस घराने की प्रमुख विशेषता है। शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में बनारस घराने के कुछ प्रमुख कलाकार इस प्रकार हैं –

1) **'पंडित दिलाराम मिश्र** – बनारस के पियरी घराने के प्रथम संगीत महापुरूष एवं प्रवर्त्तक के रूप में पंडित दिलाराम मिश्र का उल्लेख मिलता है।

2) **श्री जगमन मिश्र** – पंडित दिलाराम मिश्र के एक मात्र पुत्र जगमन मिश्र ने अपनी वंश परंपरा की प्राचीन धरोहर को पिता के कुशल मार्ग निर्देशन में बाल्यावस्था से ही ग्रहण किया।

3) **श्री ठाकुर दयाल** – श्री जगमन मिश्र के एकमात्र पुत्र श्री ठाकुर दयाल मिश्र अपने घराने के सुयोग्य वंशज एवं सदारंग – अदारंग के समकालीन संगीत विद्वान थे।

4) **प्रसिद्धू मनोहर मिश्र** – प्रसिद्धू मिश्र का जन्म 1802 ई. में हुआ एंव मनोहर मिश्र का जन्म 1794 ई. में हुआ था। गायन के क्षेत्र में प्रसिद्धू मनोहर मिश्र की जोड़ी ने अतिशय यश प्राप्त किया।

5) **श्री राम कुमार मिश्र** – श्री मनोहर मिश्र के एक मात्र पुत्र श्री रामकुमार मिश्र का जन्म 1835 ई. में हुआ। बाल्यकाल से ही पिता एवं चाचा के उचित मार्ग निर्देशन में कठोर संगीत साधना ने इन्हें युवावस्था में ही सुदक्ष गायक बना दिया।

---

1. नारायण भक्त – हमारे संगीतकार , पृष्ठ 118, संस्करण–2008

6) **श्री लक्ष्मीदास मिश्र** – श्री रामकुमार मिश्र के ज्येष्ठ पुत्र श्री लक्ष्मीदास मिश्र का जन्म 1860 ई में हुआ। आपने ध्रुपद, ख़्याल, वीणा, सितार, आदि की संपूर्ण शिक्षा पिता से प्राप्त कर ख्याति कमाई।

7) **श्री रामसेवक मिश्र** – श्री राम सेवक का जन्म 1845 ई. में हुआ आपको गायन शिक्षा पिता एवं ज्येष्ठ भ्राता शिव सहाय मिश्र से मिला।

8) **गायनाचार्य बड़े रामदास मिश्र** – आपको संगीत शिक्षा आपके श्वसुर श्री जयकरण मिश्र द्वारा संपन्न हुई जो बेतिया घराने के ध्रुपद परंपरा के मूर्धन्य विद्वान थे। "[1]

9) **'पंडित छोटे रामदास मिश्र –** पंडित छोटे रामदास मिश्र का जन्म काशी में सन् 1889 – 90 में हुआ। गायन एवं वादन की विविध शैलियों के सुदक्ष विद्वान गायक पंडित छोटे रामदास जी टप्पा गायकी के अद्वितीय गायक के रूप में काशी की विलक्षण विभूति थे।

10) **पंडित श्रीचंद मिश्र** – पंडित श्री चंद्र का जन्म 1914 में हुआ। आपकी संगीत शिक्षा का प्रारंभ घर में पितामह व पिता के कुशल निर्देशन में हुआ।

11) **पंडित छन्नूलाल मिश्र** – पंडित छन्नूलाल मिश्र एक मंजे हुए कलाकार हैं जो गायन की विविध विधाओं – ख़्याल, ठुमरी, भजन, दादरा, कजरी, चैनी के कुशल गायक माने गए हैं।

12) **पंडित राजन साजन मिश्र** – काशी के सुप्रसिद्ध सारंगी वादक श्री हनुमान प्रसाद मिश्र के पुत्र राजन मिश्र का जन्म 1951 में व साजन मिश्र का जन्म 1956 में हुआ। आपने देश के अतिरिक्त श्रीलंका, नेपाल, अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों में भारतीय संगीत प्रेमियों के बीच अपनी सफल प्रस्तुति कर ख्याति और यश प्राप्त किया।

---

**1. डॉ. रेनू जौहरी – भारतीय सांगीतिक जगत में वाराणसी का योगदान , पृष्ठ 51–62, संस्करण–2003**

13) **श्री सत्यनारायण मिश्र** – श्री सत्यनारायण मिश्र का जन्म 4 सितंबर 1961 में हुआ। आपको संगीत शिक्षा पिता द्वारा प्राप्त हुई। आपका जो आलापचारी का अंग था वह आपने उस्ताद. रहमत खां से प्राप्त किया था। '[1]

## गायन शैली में पटियाला घराना

'पंजाब में पटियाला एक प्रसिद्ध रियासत थी और इसके शासकगण अपने संगीत प्रेम के लिए प्रसिद्ध थे। इस रियासत के निवासी कलाकारों की प्रतिभा से पटियाला घराना अस्तित्व में आया, जिसने सारे भारत में ख्याति अर्जित की। पटियाला रियासत का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। यह रियासत लगभग एक सौ सत्तर वर्ष पूर्व ही अस्तित्व में आई और इसी प्रकार यहाँ संगीत घराने का इतिहास भी अधिक पुराना नहीं है। पटियाला घराना वास्तव में दिल्ली का ही घराना था और दो प्रसिद्ध प्रमुख पंजाबी कलाकारों अलीबख्श और फतह अली का संबंध पटियाला से होने के कारण इस घराने का नामकरण इसी स्थान के नाम पर हुआ।'[2] 'इस घराने की गायकी अनेक घरानों की विशेषताओं से पोषित होकर एक नई रंगीनी से गर्भित है। इस घराने की गायकी में दिल्ली, ग्वालियर और जयपुर का सुंदर सम्मिश्रण स्पष्टतः परिलक्षित होता है। इस गायकी के निर्माण में पंजाब के टप्पा गायन, काफी गायन, लोक गीतों की धुनों और कव्वाली गायन का समावेश हुआ और इसी कारण अर्थ शास्त्रीय गायक अर्थात ठुमरी, दादरा, गज़ल आदि के गायन में भी यह घराना बेजोड़ है और उत्तर भारतीय क्षेत्र में विशिष्ठ स्थान रखता है। पटियाला घराना की ठुमरियाँ अपनी कोमलता, रसीलेपन पर एक अनिर्वचनीय प्रभाव डालती है। '[3]

' इस घराने के गायन में बोल बनाव द्वारा भाव प्रदर्शन एवं गले की तैयारी विशेषकर तान की क्षिप्रता इसे अन्य घरानों की गायकी से विशेषता प्रदान करती है। इतिहास के अनुसार इस घराने की नींव संभवतः 1857 ई. में अंग्रेजों की सहायता करने के उपलक्ष में महाराजा नरेन्द्र सिंह को अंग्रेजों द्वारा विशेष प्रतिष्ठा प्रदान की गई और दरबार की शोभा में चार चाँद लग गए। अनुमानतः इसी काल में महाराजा

1. डॉ. रेनू जौहरी –भारतीय सांगीतिक जगत में वाराणसी का योगदान ,पृष्ठ 51–62, संस्करण–2003
2 प्रो. हरीशचंद्र श्रीवास्तव – प्रभाकर प्रश्नोत्तर ,पृष्ठ 146, संस्करण–1989
3. डॉ. जोगिन्द्र सिंह बावरा–भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास , पृष्ठ145–146 , संस्करण–1994

पटियाला ने दत्ते खाँ को संगीत द्वारा मनोरंजन प्रदान के लिए दरबारी गायक के रूप में नियुक्त किया। दत्ते खां इस घराने के आदि पुरूष माने जाते हैं। उनके बाद उनके पुत्र मियां कालू खां और उनके पुत्रों ने इस घराने की प्रसिद्धि में वृद्धि की। '[1] मियां कालू खां जयपुर के उस्ताद बहराम खां के गायन से इतने प्रभावित हुए कि उनके शार्गिद बन गए व उनके साथ जयपुर चले गए व चार–पाँच सालों तक वहीं रहे। इसके पश्चात् मियां तानरस खां जयपुर पधारे व कालू खां उनके गायन से इतने प्रभावित हुए कि उनके साथ दिल्ली चले गए। दिल्ली में वे लगभग बारह वर्ष तक रहे व उस्ताद की सेवा करते हुए संगीत शिक्षा प्राप्त करते रहे।'[2] 'इसके पश्चात् अपने बड़े पुत्र अलीबख्श और शिष्य लाबुर्द के साथ ही प्रताप गढ़ रियासत चले गए और वहीं पर वेतन भोगी के रूप में नियुक्त हो गए। प्रतापगढ़ में ही अलीबख्श और फतेह अली की संगीत शिक्षा मियां कालू खां के निर्देशन में आरम्भ हुई, इसके पश्चात् वे सब पुनः जयपुर आ गए। अपने पिता की तरह अलीबख्श में भी अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने की पिपासा अंत तक बनी रही। '[3] 'इस प्रकार अनेक संगीत उपवनों से फूल चुनकर एक गुलदस्ता बना जिसका नाम पटियाला घराना पड़ा। वस्तुतः जिनकों हम पटियाला घराना के जन्मदाता मान सकते हैं वे हैं अलीबख्श और फतेह अली। संगीत जगत में प्रसिद्ध है कि दोनों भाइयों का नाम आलिया–फत्तू के रूप में सदैव एक साथ जुड़ा रहा। दोनों कलाकार पटियाला में ही निवास कर रहे थे। फतेह अली का स्वर्गवास सन् 1918 में हुआ व अलीबख्श का 1928 में हुआ। '[4] इस घराने के कुछ प्रमुख कलाकार इस प्रकार हैं–

1) **'मियां जान खां** – यह मियां कानू खां के बड़े सुपुत्र नबीबख्श के पुत्र थे। इन्होंने संगीत शिक्षा फतेह अली से प्राप्त की थी।

2) **अहमद जान खां** – यह नबीबख्श के छोटे पुत्र और मियां जान खां के छोटे भाई थे।

---

1. डॉ. जोगिन्द्र सिंह बावरा – भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास , पृष्ठ 147, संस्करण–1994
2 प्रो. हरीशचंद्र श्रीवास्तव – प्रभाकर प्रश्नोत्तर , पृष्ठ 146 ,संस्करण–1989
3. डॉ. जोगिन्द्र सिंह बावरा – भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास , पृष्ठ 148–149 , संस्करण–1994
4. डॉ. सुशील कु. चौबे – संगीत के घरानों की चर्चा , पृष्ठ 113 , संस्करण–2005

3) **मुबारक अली खां** – मुबारक अली का जन्म 1907 ई. में हुआ। यह अहमद जान खां के बड़े सुपुत्र थे और बड़े प्रतिभावान तथा होनकार गायक थे।

4) **बाकर हुसैन खां** – आप नबीबख्श के पौत्र और अहमद जान खां के पुत्र थे। इनका जन्म 3 जुलाई 1923 को हुआ।

5) **आशिक अली खां** – यह फतेह अली करनैल के एकलौते पुत्र थे। आप बड़े यशस्वी व अनुभवी गायक थे।'[1]

6) **'अख्तर हुसैन खां** – ये उस्ताद अली बख्श जनरैल के पुत्र होने के साथ एक सुयोग्य शिक्षक भी थे।

7) **अमानत अली फतह अली** – ये दोनों अख्तर हुसैन के पुत्र थे। दोनों भाई युगलबंदी में बहुत तैयार गाते थे।'[2]

8) **उस्ताद बड़े गुलाम अली खां** – 'उस्ताद बड़े गुलाम अली खां का जन्म 4 अप्रैल 1902 में लाहौर में कसूर घराना के कलाकार अलीबख्श के घर हुआ इनकी संगीत शिक्षा इनके पिता अलीबख्श और चाचा काले खां द्वारा हुई इसलिए यह पटियाला घराने के कलाकार के रूप में जाने जाते हैं।'[3]

'पिछले कुछ वर्षो में जब कभी स्व.बड़े गुलाम अली खां के गाने की प्रशंसा होती है तो उनकी पटियाला गायकी पर भी कुछ प्रशंसात्मक टिप्पणी की जाती है। आज भी जब वह संसार में नहीं हैं तो उनके होनहार पुत्र मुनव्वर अली खां के गाने की प्रशंसा करते हुए भी लोग उनकी पटियाला गायकी की प्रशंसा करते हैं।'[4]

## पटियाला घराना की विशेषताएँ

'इस घराने की विशेषता तैयारी के साथ कोमलता में हैं। इसी गायकी के निर्माण में पंजाब का टप्पा सिख शब्द, सूफी बानी तथा कव्वाली का भी प्रभाव देखा

---

1.डॉ. जोगिन्द्र सिंह बावरा –भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास, पृष्ठ 150–153, संस्करण–1994

2. वही, पृष्ठ 154

3. नारायण भक्त – हमारे संगीतकार, पृष्ठ 67, संस्करण–2008

4. डॉ. सुशील कु. चौबे – संगीत के घरानों की चर्चा , पृष्ठ 143, संस्करण–2005

जा सकता है। ख़्याल की बंदिशें कलात्मक होती हैं। ख़्यालों के गीत संक्षिप्त होते हैं, इसके विलंबित ख़्याल की तान मध्य तथा द्रुत से अलग ढाँचे की होती है। ख़्याल के साथ पंजाबी अंग की ठुमरी गाने में विशेष महारत हासिल होती है। गमक अंग तथा तरानों की गायकी इसे अन्य घरानों से पृथकता प्रदान करती है।

इस घराने में अलंकारिक तथा वक्र तानों का प्रयोग किया जाता है। फिरत की तानों पर विशेष बल दिया जाता है। इस घराने में तानों को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है, द्रुत तथा अतिद्रुत लय की स्पष्ट तानों का अधिक प्रयोग किया जाता है जिससे यह घराना अन्य घरानों से अलग दिखाई देता है। पटियाले घराने की गायकी भावपूर्ण गायकी होने के कारण इसमें खड़े स्वरों को लगाना वर्जित माना गया है। प्रत्येक स्वर को सजाकर संवारकर लगाया जाता है, अतः इस घराने की प्रमुख विशेषताओं में गले की तैयारी को विशेष महत्व दिया गया है।'[1]

---

1. डॉ. सीमा जौहरी– भारतीय संगीत भाग–2 , पृष्ठ 33–34, संस्करण–2005

# पंचम अध्याय

## “पंडित जी की गायन शैली ”

1. समकालीन गायकों से तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर
2. गायन की विशेषताएँ

# पंचम अध्याय

## पंडित जी की गायन शैली

शास्त्रीय संगीत के गायकों में प्रायः देखा गया है कि जब भी उनसे ठुमरी गायन की माँग की जाती है तो वे साफ शब्दों में अपने श्रोताओं के समक्ष कह देते हैं कि मैं ठुमरी गायक नहीं हूँ , मैं ख़्याल गायक हूँ और वह किसी राग में अपनी ख़्याल गायकी प्रस्तुत कर अंत में छोटा ख़्याल व तराने के पश्चात् किसी भजन के माध्यम से अपने गायन की समाप्ति करता है। अंत में भजन गाने के पीछे गायक का मुख्य उद्देश्य यह रहता है कि वह अपने गायन को अधिक लोकप्रिय बना सके उसे जब भजन गाने से परहेज नहीं है तो लोकप्रियता के आधार पर ठुमरी गायन को एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाना चाहिए। अतः पंडित दीनानाथ मिश्र ने जितना महत्व ख़्याल गायन को दिया है उतना ही महत्व ठुमरी गायन को भी दिया है। माना जाता है कि बनारस घराने की ठुमरी लखनऊ की ठुमरी का ही अनुवाद है। बनारस की ठुमरी पर भी लोकसंगीत का काफी प्रभाव पड़ा इसीलिए ठुमरी गायन आमजन में लोकप्रिय है।

' पंडित दीनानाथ मिश्र के गायन में अनेक विशेषताएँ पाई जाती हैं जिसका प्रमुख कारण है उनकी गायकी में दो घरानों का समावेश होना। प्रथम में बाल्यकाल की प्रारंभिक संगीत शिक्षा बनारस घराने के सुप्रसिद्ध गायक पंडित राखाल मिश्र के सानिध्य में प्राप्त करते हुए आपकी गायकी में बनारसी अंग की ठुमरी, दादरा, पूर्वी, होली, कजरी, आदि के गायन के साथ ही शास्त्रीय गायन में भी आपको असाधारण अधिकार प्राप्त हुआ। आप जिस लोच–बोल–बनाव व सुन्दर ढंग से ठुमरी प्रस्तुत करते हैं वही बनारसी अंग की विशेषता मानी जाती है। ख़्याल व तराना गायन के साथ ही भावपूर्ण प्रदर्शन आपकी व्यक्तिगत विशेषता है। पंडित जी की वंश परम्परा बनारस घराने के गायकों तथा वादकों से संबन्धित है अतः इनके गायन में बनारस घराने की गायकी का पाया जाना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।'[1] 'सोलह वर्ष की अल्पायु में पंडित दीनानाथ मिश्र पिता पंडित राखाल मिश्र के साथ कोलकाता चले आए जहाँ उन्होंने

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांकः 24/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)

लखनऊ के संगीताचार्य चिन्मय लाहिड़ि जी से शिक्षा लेनी प्रारम्भ की, यहाँ इन्होंने अपने गुरु से कई वर्षों तक शिक्षा ली जिससे इनकी गायकी में अलंकारिक, वक्र तथा फिरत तानों का प्रभाव पाया जाने लगा साथ ही तानों की तैयारी और उनका अधिक प्रयोग इनकी गायन शैली की विशेषता बन गई। तत्पश्चात् पटियाला घराने के संपर्क में रहने के कारण आपकी गायन शैली में बनारस व पटियाला घराना स्पष्ट रूप से झलकता है किन्तु पंडित जी का घराने की गायकी के विषय में कहना है कि मैं हमेशा सभी घरानों की खूबियों का प्रशंसक रहा हूँ और जहाँ से जो भी मिला उसे अपनी गायकी में शामिल कर लिया। आज लोग घराने के पीछे इस तरह से पड़े हैं पर मैं समझता हूँ कि किसी भी घराने व गुरु की गायकी के अतिरिक्त कलाकार में कुछ अपना भी होना चाहिए यदि ऐसा नहीं हुआ तो उसकी गायकी टिकाऊ नहीं बन सकती। ये सभी बातें किसी एक घराने की गायकी में संभव नहीं है अतः गुरु व शिष्य दोनों को ही खुले विचार रखकर अपने घराने के अतिरिक्त और भी घरानों से जो कुछ मिले ले लेना चाहिए। '[1] 'इसी सोच के कारण पंडित दीनानाथ मिश्र की गायकी सबके मन को मोह लेती है तथा एक अनमोल धरोहर के रूप में श्रोताओं के दिलो–दिमाग पर अमिट छाप छोड़ जाती है। इनका विचार है कि संगीत को शब्द विधियों के माध्यम अधिक से अधिक सशक्त बनाया जाए। आपने कम से कम समय में श्रोताओं के मध्य सुमधुर रचनाओं द्वारा संगीतज्ञों के रिझाने की कला अपनाने का सुझाव दिया है न कि क्लिष्ट तथा उबाऊ रागों द्वारा अधिक से अधिक समय को घेरने का। इसी सोच के कारण पंडित जी का जितना प्रभावशाली विलंबित लय का गायन है उतना ही प्रभावशाली द्रुतलय का गायन भी है। बनारस घराने में गाये जाने वाले विशेष प्रकार के ठुमरी, दादरा, कजरी, होली, मध्य व द्रुतलय के ख़्याल आदि गाने में आपको विशेष निपुणता हासिल हुई साथ ही आप द्रुतलय के गायन में कुछ विशेष तानों जैसे सपाट तान, मुर्की तान, लहक तान, फैलाव तान आदि का प्रयोग करके अपनी गायकी में कलात्मक विशेषताओं का प्रदर्शन करते हैं।'[2] 'आपके द्रुतलय की चीज़ों के प्रस्तुतिकरण में भाव अंदाज़ के साथ लय और ताल पर भी गज़ब का अधिकार देखने को मिलता है, साथ ही विभिन्न प्रकार की तानों को बतलाकर बारी–बारी कहने का अनोखा अंदाज़

---

**1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांकः 24/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थानपर)**

**2. वही**

आपकी व्यक्तिगत विशेषता को प्रदर्शित करता है। आपका यही अंदाज़ मध्यलय के अतिरिक्त द्रुतलय के ख़्याल में भी देखने को मिलता है। आप ख़्याल अंग के गायन के अतिरिक्त ठुमरी, ग़ज़ल, भजन आदि भी बड़ी तन्मयता से प्रस्तुत करते हैं। आपकी गायन शैली स्पष्ट रूप से मौलिक नज़र आती है। '[1]

यदि पंडित जी का समकालीन गायकों से तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो भावपूर्ण गायकी के प्रतीक माने जाने वाले पंडित दीनानाथ मिश्र ने अपने समय के विभिन्न गायकों में पाई जाने वाली गायकी की विशेषताओं को आत्मसात किया है। इनके समकालीन गायकों में पंडित भीमसेन जोशी, पंडित जसराज, श्रीमती गिरिजा देवी, कुमार गन्धर्व, पण्डित चन्द्र प्रकाश मिश्रा, उस्ताद इकबाल अहमद खाँ एवं स्वर साधक पन्नालाल मिश्र आदि प्रमुख गायक हैं।

'पंडित दीनानाथ मिश्र व पंडित भीमसेन जोशी के गायन में गम्भीरता नज़र आती है, साथ ही आलाप में गायन की आत्मा का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत होता है, दोनों साधकों का घराना अलग–अलग होते हुए भी अनेक समानताएँ पाई जाती हैं। पंडित दीनानाथ मिश्र एवं पंडित भीमसेन जोशी दोनों के हृदय में दीन–दुखियों और ज़रूरत मंदों के लिए अपार सहानुभूति पाई जाती है व दोनों का अर्थोपार्जन से कोई विशेष लगाव नहीं है तथा दोनों का व्यक्तित्व प्रभावशाली है। दोनों संगीतज्ञों का पारिवारिक वातावरण संगीतमय होने के कारण इनकी साधना को प्रेरणा मिली तथा दोनों कलाकारों ने उत्तर भारतीय संगीत कला में पारंगत हासिल की तथा देश–विदेश के विभिन्न संगीत सम्मेलनों में भाग लिया और प्रसिद्धि प्राप्त की। पंडित दीनानाथ मिश्र व पंडित भीमसेन जोशी की गायकी में कुछ भिन्नता भी देखने को मिलती है। पंडित दीनानाथ मिश्र भावपूर्ण गायकी के लिए प्रसिद्ध हैं जबकि पंडित भीमसेन जोशी को प्रयोगवादी कलाकार माना जाता है। पंडित भीमसेन जोशी के गायन में नित–नवीनता का प्रयास रहता है जबकि पंडित दीनानाथ मिश्र के गायन में ऐसी विशेषताएँ होती हैं जो श्रोताओं को आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति कराती है। '[2] 'पंडित भीमसेन जोशी आलाप को

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 24/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)

2. स्नेहलता मिश्रा से चर्चा , दिनांक: 11/12/2013, स्थान–दिल्ली , समय– रात्री 9 बजे

गायन का प्राण और धर्म मानते हैं जबकि पंडित दीनानाथ मिश्र के गायन के आलाप से श्रोता जैसे स्वर समाधि में चले जाते हैं। '[1]

'इसी प्रकार पंडित दीनानाथ मिश्र व पंडित जसराज की गायकी में पटियाला घराने की गायकी के अंग दिखाई पड़ते हैं। दोनों गुणिजन अलग–अलग घरानों से सम्बन्ध रखते हुए भी गायकी के रूप में कई समानताएँ रखते हैं। दोनों ही स्वर साधक भावपूर्ण गायकी के प्रतीक माने जाते हैं व आपके गायन में कुछ ऐसी विशेषताएँ पाई जाती हैं जिससे श्रोता भाव विभोर होकर आनंद की अनुभूति करते हैं। दोनों कलाकारों में वेदना, समर्पण, स्मरण तथा अच्छी सूझ–बूझ देखी जा सकती है इसके अतिरिक्त गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा, संगीत से सच्चा प्यार और नियमित कठोर साधना दोनों का नैसर्गिक गुण है। दोनों गायकों में कुछ असमानताएँ भी देखने को मिलती है जैसे पंडित दीनानाथ मिश्र ने बाल्यकाल से ही गायन की शिक्षा प्राप्त की जबकि पंडित जसराज ने बचपन में पहले तबले की शिक्षा ग्रहण की तथा बाद में गायन की तरफ अपना ध्यान लगाया। पंडित जसराज ने प्रसिद्ध सितार वादक पंडित रविशंकर के साथ तबले पर संगत भी की जबकि पंडित दीनानाथ मिश्र ने बाल्यकाल से अब तक सम्पूर्ण जीवन संगीत के क्षेत्र में गायन को समर्पित किया है। पंडित जसराज गायन शैली में राग की शुद्धता पर विशेष ध्यान देते हैं। जबकि पंडित दीनानाथ मिश्र रागों की शुद्धता के साथ–साथ शब्दों में निहित भावों की अभिव्यक्ति पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं।'[2]

'सुप्रसिद्ध गायिका श्रीमती गिरिजा देवी एवं पंडित दीनानाथ मिश्र दोनों का संबंध बनारस घराने से रहा है। पंडित दीनानाथ मिश्र की तरह गिरिजा देवी भी ख़्याल, ठुमरी, दादरा, टप्पा, कजरी, चैती आदि विभिन्न आंचलिक लोकगीतों की गायन शैली में प्रवीण हैं। पंडित जी की तरह श्रीमती गिरिजा देवी भी बेहद मिलनसार और सहज स्वभाव वाली हैं। दूसरी ओर पंडित जी को संगीत अपने परिवार से विरासत के रूप में मिला जबकि श्रीमती गिरिजा देवी के पिता एक किसान थे तथा दोनों संगीतज्ञों का जीवन एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है।'[3]

---

1. स्नेहलता मिश्रा से चर्चा , दिनांक: 11/12/2013, स्थान–दिल्ली , समय– रात्री 9 बजे
2. वही
3. वही

'गिरिजा देवी जो गीत बाल्यकाल में गाती थीं उनके बारे में वे राग और स्वरों से अनभिज्ञ थीं जबकि पंडित जी को बाल्यकाल से ही संगीत की विधिवत शिक्षा प्राप्त हुई थी उन्हें बाल्यकाल से ही राग और स्वर का ज्ञान प्राप्त है। '[1]

'पंडित दीनानाथ मिश्र व कुमार गन्धर्व के लोकसंगीत गायन में शास्त्रीय संगीत के मूल तत्व दिखाई पड़ते हैं। पंडित दीनानाथ मिश्र एवं कुमार गन्धर्व दोनों ही संगीतज्ञों की गायकी ने लोकसंगीत पर आधारित अनेक रागीनियों और उनमें निहित रागों को मौलिक स्पर्श किया है अर्थात् दोनों ही गायकों के शास्त्रीय गायन में लोकसंगीत की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ती है। दोनों ही गायकों का मानना है कि संगीत के कठोर अनुशासन की अपेक्षा गायकी में मर्म भेदी तत्व आवश्यक हैं। दूसरी ओर पंडित दीनानाथ मिश्र की गायकी भावपूर्ण है, वे रागों की रंजकता तथा उनके सौन्दर्य व राग के स्वभाव और शब्दों के अनुकूल अपनी गायकी में भाव उत्पन्न करते हैं वहीं कुमार गन्धर्व की गायकी में नादात्मक, लचीलापन, परम्पराओं के विद्रोह के साथ–साथ शास्त्रीय मानदण्डों का उल्लंघन पाया जाता है। किसी राग के वादी संवादी स्वरों की परम्परागत स्थिति का कुमार गन्धर्व पूर्ण रूप से निर्वाह नहीं करते बल्कि मनचाही स्वतंत्रता के साथ उड़ान भरते हैं। इस प्रकार यह पुरोधा गायक पंडित दीनानाथ मिश्र से गायकी की विशेषताओं की दृष्टि से पूर्णतया भिन्न है। '[2]

'पंडित दीनानाथ मिश्र के समकालीन गायकों में प्रसिद्ध गायक पंडित चन्द्र प्रकाश मिश्रा का नाम सम्मान से लिया जाता है। पंडित दीनानाथ मिश्र की तरह पंडित चन्द्र प्रकाश मिश्रा भी ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी आदि के गायन में पारंगत हैं। पंडित दीनानाथ मिश्र तथा पंडित चन्द्र प्रकाश मिश्रा दोनों ही अंतरमुखी साधक व गायक हैं। पंडित दीनानाथ मिश्र की तरह पंडित चन्द्र प्रकाश मिश्रा भी स्वरों पर अधिकार सहित पकड़ करके एक स्वर पर ठहर कर बोल–बाँट के विभिन्न उपज पैदा करते हैं। दोनों ही गायकों का मानना है कि विशिष्ट घराने के लोग ही किसी विशेष कला को प्रस्तुत कर सकते हैं, यह कहना अनुचित है क्योंकि कला तो ईश्वरीय देन है साधना से इसे सभी पा सकते हैं बशर्ते उनमें कला के प्रति श्रद्धा,भक्ति एवं लगन हो।'[3] 'पंडित

---

1. स्नेहलता मिश्रा से चर्चा , दिनांकः 11/12/2013, स्थान–दिल्ली , समय– रात्री 9 बजे
2. मंगल मिश्र से चर्चा , दिनांकः 06/12/2013, स्थान–मुम्बई , समय– सांय 6 बजे
3. वही

दीनानाथ मिश्र तथा पंडित चन्द्र प्रकाश मिश्रा दोनों ही कलाकार स्वभाव से गम्भीर, मधुर व मृदुभाषी हैं। दोनों ही कलाकार संगीत रत्न से पुरस्कृत हैं। दूसरी ओर यदि हम देखें तो पंडित चन्द्र प्रकाश मिश्रा ख़्याल एवं ध्रुपद दोनों शैलियों में समान अधि ाकार रखते थे जबकि पंडित दीनानाथ मिश्र ख़्याल तथा ठुमरी के गायक हैं। पंडित चन्द्र प्रकाश मिश्रा अपने अनुज नर्तक पंडित ओमप्रकाश मिश्र के साथ जब अपने सुरों से सजे हुए गायन की प्रस्तुती देते थे तब पंडित ओमप्रकाश जी अपने नर्तन से भाव की सृष्टि का साक्षात दर्शन करवाते थे जबकि पंडित दीनानाथ मिश्र की एकाग्रता सिर्फ गायन पर होती है। पंडित दीनानाथ मिश्र के पारिवारिक वातावरण का माहौल गायकी पर आधारित है जबकि पंडित चन्द्र प्रकाश मिश्रा के पारिवारिक वातावरण में गायन, नर्तन एवं तबला वादन का समावेश था। पंडित दीनानाथ मिश्र का जीवन गायन के प्रति समर्पित है जबकि पंडित चन्द्र प्रकाश मिश्रा संगीत के क्रियात्मक एवं सैद्धान्तिक दोनों पक्षों पर अपना अधिकार रखते थे। पंडित चन्द्र प्रकाश मिश्रा ने अभ्यास एवं चिन्तन करके संगीत पथदर्शिका (गायन एवं वादन) व संगीत निबन्धावली (दसवीं से एम.ए. स्तर तक) आदि पुस्तकों की रचना की। '[1]

'पंडित दीनानाथ मिश्र की तरह उस्ताद इकबाल अहमद खां भी संगीत रत्न की उपाधि से अलंकृत किए गए हैं व इनकी गायकी में मौलिक सृजनशीलता स्पष्ट दिखाई देती है। आप ख़्याल शैली की गायकी के अतिरिक्त उसी अंदाज़ में ठुमरी, ग़ज़ल, दादरा, भजन आदि प्रस्तुत करने में माहिर हैं। दोनों ही गायक उच्चकोटि के कलाकार होने के साथ–साथ श्रेष्ठ गुरु भी सिद्ध हुए हैं तथा आपके आकाशवाणी, दूरदर्शन पर राष्ट्रीय कार्यक्रम व रेडियो संगीत सम्मेलनों में भाग लेने के कार्यक्रम प्रदर्शित हो चुके हैं। दोनों ही गायकों ने अपने कुछ ऑडियो कैसेट व सी. डी भी निकाले हैं तथा आप दोनों साधकों ने देश–विदेश में आयोजित अनेक संगीत सम्मेलनों में भाग लेकर प्रबुद्ध श्रोताओं से भरपूर प्रशंसा प्राप्त की। '[2] 'दूसरी ओर हम देखें तो पाएँगे कि पंडित दीनानाथ मिश्र की गायकी में उनके गुरु संगीताचार्य चिन्मय लाहिड़ि की गायकी स्पष्ट नज़र आती है, जबकि उस्ताद इकबाल अहमद

---

1. मंगल मिश्र से चर्चा , दिनांक: 06/12/2013, स्थान–मुम्बई , समय– सांय 6 बजे
2. वही

खां की गायकी पर स्वर्गीय रमजान खां साहब की गायकी की साफ झलक दिखाई देती है। उस्ताद् इकबाल अहमद खां दिल्ली घराने का प्रतिनिधित्व करते हैं जबकि पंडित दीनानाथ मिश्र की गायकी पटियाला घराने से संबंध रखती है। उस्ताद इकबाल अहमद खां की गायकी में दिल्ली घराने की समस्त विशेषताओं का समावेश है दिल्ली घराने की परम्परागत खूबियों को उस्ताद इकबाल अहमद खां बड़ी खूबसूरती से प्रस्तुत करते हैं जबकि पंडित दीनानाथ मिश्र की गायकी में बनारस घराने की भावपूर्ण गायकी स्पष्ट नज़र आती है।'[1]

'पन्ना लाल मिश्र व पंडित दीनानाथ मिश्र का जन्म कलाकारों के गढ़ ग्राम हरिहरपुर जिला आज़मगढ़ उत्तर प्रदेश में हुआ है। आप जिस लोच–बोल–बनाव व सुंदर ढंग से राग प्रस्तुत करते हैं वही बनारस अंग की विशेषता है। पन्ना लाल मिश्र व पंडित दीनानाथ मिश्र, दोनों को ही बनारसी अंग की ठुमरी, दादरा, पूर्वी, होरी,व कजरी गायन में असाधारण अधिकार प्राप्त रहा है। दोनों ही गायकों को संगीत विरासत में मिला है, बाल्यकाल से ही सांगीतिक वातावरण में दोनों पले बढ़े हैं व प्रारंभिक शिक्षा दोनों को ही अपनी माता से मिली है। आप अपने मधुर व प्रभावपूर्ण गायन से उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देने की क्षमता रखते हैं। पन्ना लाल मिश्र व पंडित दीनानाथ मिश्र, दोनों ही गायकों को ''संगीत रत्न''व ''सुरमणि'' की उपाधि से सुसज्जित किया गया है। आप दोनों ही गायकों में एक खास बात यह है कि आप देश–विदेश जहाँ भी गए वहाँ श्रोताओं के हृदय पटल पर अपनी मधुर स्मृतियों के चित्र अंकित कर आए। दोनों ही सरल स्वभाव व साधारण जीवन व्यतीत करने वाले , अनुशासन प्रिय, संगीत साधक, व सच्चे गुरु रहे हैं। परंतु पन्ना लाल मिश्र की गायकी में केवल बनारस घराना झलकता है जबकि पंडित दीनानाथ मिश्र की गायकी में बनारस व पटियाला दोनों घरानों का समावेश देखने को मिलता है। '[2] 'पन्ना लाल मिश्र जी ने अपनी सांगीतिक शिक्षा अपने दादा व पिता पंडित वासुदेव मिश्र से प्राप्त की जबकि पंडित दीनानाथ मिश्र ने प्रारंभ में गायन शिक्षा अपने पिता पंडित राखाल मिश्र से ली व बाद में वे कोलकाता चले गए और वहाँ संगीताचार्य चिन्मय लाहिड़ी जी

1. मंगल मिश्र से चर्चा , दिनांकः 06/12/2013, स्थान–मुम्बई , समय– सांय 6 बजे
2. शम्भूनाथ मिश्र से चर्चा , दिनांकः 10/11/2013, स्थान–आज़मगढ़ , समय– सांय 4 बजे

से विधिवत गायन शिक्षा प्राप्त की। '[1]

## गायन की विशेषताएँ :–

ख़्याल गायन शैली में रागदारी के अनुकूल स्वराचरण के लिए विस्तृत क्षेत्र होता है फिर भी क्रमबद्धता का मनोवैज्ञानिक अनुशासन उसे विशिष्ट एवं शास्त्रीय स्वरूप प्रदान करता है। अतः पंडित दीनानाथ मिश्र की गायन शैली में विभिन्न तत्वों का जो समावेश है उसका क्रमबद्ध विवेचन इस प्रकार है–

### 1. बड़ा ख़्याल–

'जैसा कि व्यवहार में विलंबित ख़्याल के पूर्व पंडित दीनानाथ मिश्र भी आलापचारी करते हैं किंतु यह संक्षिप्त आलाप से ही बड़े ख़्याल की बंदिश को आरंभ कर देते हैं। आपका आलाप प्रायः एक से डेढ़ मिनट की अवधि का होता है। आप आगरा तथा ग्वालियर घराने के समान नोम – तोम का आलाप तो करते हैं किंतु उसे अधिक विस्तृत न करके सीधे ख़्याल की बंदिश पर आ जाते हैं। पंडित दीनानाथ मिश्र प्रायः प्रारंभ में ही दो बार स्थाई प्रस्तुत करते हैं , बंदिश की स्थाई के पश्चात् वे राग विस्तार प्रारंभ कर देते हैं। विलंबित ख़्याल में स्थाई के तत्काल बाद उन्होंने कभी भी बंदिश का अंतरा प्रस्तुत नहीं किया, स्थाई के आलाप में तार षड़ज स्थिर कर लेने के बाद ही वे एक ही प्रवाह से पूरा अंतरा प्रस्तुत करके पुनः स्थाई पर आ जाते हैं। आपकी विलंबित गायकी के संदर्भ में उल्लेखनीय है कि आपका विस्तार पक्ष क्रमशः मंद्र सप्तक से तार सप्तक की ओर जाता है तथा विभिन्न तत्वों का क्रम ऐसा होता है कि स्वरों की हलचल उत्तरोत्तर गति प्राप्त करती है। आप भी अन्य ख़्याल गायकों की तरह बोल–बाँट वाले भाग के साथ ताल की लय भी तबला संगतकार से बढ़वा लेते हैं। '[2]

### 2. छोटा ख़्याल–

'बड़े ख़्याल के पश्चात् छोटे ख़्याल को प्रस्तुत करने की परंपरा का पालन करते

---

1. शम्भूनाथ मिश्र से चर्चा , दिनांकः 10/11/2013, स्थान–आज़मगढ़ , समय– सांय 4 बजे
2. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांकः 24/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)

हुए पंडित दीनानाथ मिश्र भी छोटा ख़्याल पेश करते हैं , छोटा ख़्याल गाते समय उसका स्थाई व अंतरा गाते हैं ,बोल आलाप और बहलावे की गायकी प्रस्तुत करते हैं और फिर लय बढ़ाकर सरगम एवं तानों की झड़ी लगाते हैं। आलाप में सुरों का लगाव ऐसा होता है कि राग को खूब सुंदर बनाया जा सके। आलाप के पश्चात् सरगम में आप खरज से तार सप्तक की सरगम ऐसे लेते हैं कि श्रोतागण मंत्र – मुग्ध हो जाते हैं। अंत में तानों के प्रकार जैसे– गमक तान, छूट तान, सपाट तान व मुर्की तान आपकी अपनी अलग विशेषता है। अंत में तिहाई द्वारा राग की समाप्ति करते हैं। '[1]

### 3. तराना–

'पंडित दीनानाथ मिश्र जी की गायन शैली में तराने को वही स्थान प्राप्त है जो कि छोटे ख़्याल को। परंपरागत रूप में तराना द्रुत लय के काम और कौशल्य को अभिव्यक्त करने का माध्यम माना जाता रहा है इसमें अति द्रुत लय में बंदिश का प्रस्तुतीकरण अति द्रुत तानों के साथ किया जाता है और द्रुत लय में खंडो की विविधता के साथ दिर, दिर, तन, नन, तोम आदि शब्दों को उपज अंग से पेश किया जाता है। स्वर और साहित्य की अपेक्षा स्वाभाविक रूप से लय को अधिक अवसर प्राप्त हो जाता है, क्योंकि शब्द निरर्थक होते हैं और स्वर लय पर हावी रहता है। '[2]

### 4. शुद्ध मुद्रा–

'चेहरे का शांत भाव, पद्मासन के समान सीधी स्थिर बैठक, अंग संचालन से खुद को मुक्त रखना इत्यादि शुद्ध मुद्रा के आयाम उनके बाह्य आचरण में सम्मिलित हैं। गायन प्रस्तुत करते समय उनका एक हाथ ज़रूर संचालित होता है। उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली और आकर्षक है। गाते समय उनके चेहरे के हाव–भाव बिगड़ते नहीं हैं व चेहरे पर पूर्ण एकाग्रता झलकती है। गंभीरता व शांति का वातावरण उनकी महफिलों में छाया रहता है, पंडित जी पान खाने का शौक रखते हैं, माथे पर गोल लाल टीका व होठों पर पान की लालिमा उनके व्यक्तित्व को और भी निखार देती है। '[3]

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 24/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)
2. वही
3. वही

## 5. शुद्ध वाणी–

गायन की किसी भी विधा में सफलता प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि साधक अपनी कंठध्वनि की विशेषताओं को समझे और उसकी सीमाओं का ध्यान रखे। पंडित दीनानाथ मिश्र ने भी अपनी गायन शैली के निर्धारण में इस तथ्य को ध्यान में रखा व अनेकों गायकों को सुनकर और प्रयोगों की विभन्न अवस्थाओं को पार कर उन्होंने गायन की उस शैली को अपनाया जो उनके कंठ–संस्कार के सर्वथा अनुकूल है। 'पंडित जी की आवाज़ मंद्र सप्तक में भारीपन व धीर–स्थिर आलाप के साथ और भी निखरती है। अपनी गायकी में आप राग की भूमिका मंद्र सप्तक में उत्तम ढंग से बाँधते हैं वहीं तार सप्तक में स्वरों को उनकी सही श्रुति पर स्थिर रखने में भी आप उतने ही कामयाब रहते हैं। आपके गायन प्रस्तुतीकरण में मंद्र से तार सप्तक तक कंठ ध्वनि की पहुँच का आपने उसी सीमा तक प्रयोग किया है जहाँ तक उसकी स्वाभाविकता बनाए रखना आपके लिए सहज है। यद्यपि मंद्र सप्तक एवं तार सप्तक पर आपको पूर्ण अधिकार प्राप्त है एवं हर गति से स्वरों में स्वर संचरण करने में आप सक्षम हैं फिर भी खरज पर आवाज़ स्थिर करके गूंज का प्रदर्शन आपने खूब किया है। मंद्र सप्तक में आपका स्वर लगाने का जो ढंग है, उसके कारण माईक व एम्प्लीफायर के माध्यम से उसका विशेष रूप निखरता है। खुली व बुलंद आवाज़ का प्रयोग मध्य पंचम से तार षड़ज के मध्य आप करते हैं। आप कण, मीड़ और गमक के माध्यम से ध्वनि की निरंतरता और स्वरों में पारस्परिक सबंध को जिस प्रकार बनाए रखते हैं उसके कारण स्वर तंतु की तुलना विद्वानों ने सारंगी से की है। आप अपनी आवाज़ की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देते हैं। आपने अपनी ये विशेषताएँ कायम रखने में कोई तकनीक नहीं अपनाई बल्कि आवाज़ को मेहनत करके तथा गले की तैयारी करके बनाई है। पंडित दीनानाथ मिश्र की सबसे बड़ी विशेषता है कि आप स्वरों का श्रृंगार करते हैं। खड़े स्वर आपने अपने जीवन में कभी नहीं लगाए, जबकि आज के समय में गायक स्वर के साथ लगाव नहीं रखते इसलिए उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। '[1] संगीत एक ऐसी कला है जो और कलाओं व विधाओं से भिन्न है, इसकी यह

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 24/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)

विशेषता है कि इसके हर कियाकल्प में सौंदर्य है, केवल स्वर हों ,बोल इत्यादि न हों तो भी सौंदर्य है। स्वर के लगाव में कलात्मकता और भाव के महत्व को पंडित दीनानाथ मिश्र ने विशेष रूप से स्वीकार किया है। राग के प्रस्तुतीकरण के प्रारंभ में ही इनके स्वर का लगाव आनंददायक प्रतीत होता है। आप जब बंदिश के पूर्व का राग वाचक आलाप करते हैं तब प्रथम बार षड़ज पर पहुँचने की किया भी बड़ी कलात्मक होती है ,वहीं से राग का स्वरूप भी उजागर होने लगता है।

### 6. आलाप,सरगम,तान–

'आलाप बढ़त– ख़्याल गायकी के तत्कालिक उपज पर आधारित विभिन्न अंगों में राग के चित्रण एवं मूल भाव को व्यक्त करने में , आलाप सर्वाधिक सक्षम माना गया है, विशेष रूप से स्वर प्रधान गायकी के आलाप की परिष्कृत्ता का ध्यान रखना और भी आवश्यक हो जाता है। इसे ही दूसरे पक्ष से देखें तो प्रतीत होता है कि आलापचारी को अधिक महत्व देने के कारण ही कोई गायकी स्वर प्रधान होने लगती है। उक्त तथ्य में आलाप से आशय निबद्ध गायकी के अंतर्गत आने वाले आलाप से है न कि बंदिश से पूर्व के नोम–तोम से। बनारस घराने की गायकी के आधार पर इनकी गायकी में तंतकारों का अधिक प्रयोग है आपकी धीर एवं स्थिर आलाप में स्वरों का लगाव ऐसा है कि वह राग को अधिक खूबसूरत बनाते हुए रंजक बना देते हैं जिससे श्रोतागण उसे आनंद पूर्वक सुन सकें। '[1]

'सरगम में खरज से तार सप्तक की अलग–अलग प्रकार से गायकी को प्रदर्शित करते हुए गमक, छूट तान, सपाट तान, मुर्की तान आदि के प्रयोग से आपने अपनी गायकी को खूबसूरत बनाकर अनेकों बार प्रस्तुत किया है। अनेक बंदिशों में आपने मुखड़े के सम के खटके का प्रयोग किया है। कहने का आशय यह है कि सम के आघात के साथ किसी स्वर पर प्रभावपूर्ण ढंग से खटके द्वारा आघात देते हुए तुरंत उसके नीचे के स्वरों पर चले जाना आपका एक प्रमुख अंदाज़ है। '[2]

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 24/05/2012, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थान पर)
2. वही

खटके के ऐसे प्रयोग आपने कई रागों में किए हैं।

कहने का आशय यह है कि जिस प्रकार एक मृदुभाषी व्यक्ति के विचारों को आम जन सुनना चाहता है वैसे ही संगीत जगत के श्रोता भी उसी गायक को सुनना पसन्द करते हैं जिसकी गायकी विभिन्न विशेषताओं से भरी होती हैं। यदि उस गायक का कंठ रूखा एवं सूखा होगा तो वह किस प्रकार अपने व राग के अंदर छिपे भावों को व्यक्त कर पायेगा किन्तु एक सफल गायक अपने गले की तैयारी करके अपनी गायकी में विभिन्न विशेषताएँ पैदा करके आम जन के समक्ष अपनी योग्यता प्रस्तुत करता है व समाज, संस्था एवं संस्कार से विभिन्न सम्मान प्राप्त करता है। पंडित दीनानाथ मिश्र की गायकी आम जन के मध्य एक ऐसा प्रभाव छोड़ती है कि श्रोता मंत्रमुग्ध होकर लगातार रसास्वादन करते रहते हैं।

# षष्टम अध्याय

## "गायन कार्यक्रम एवं सम्मान"

1. दूरदर्शन केन्द्रों पर कार्यक्रम
2. संगीत सम्मेलनों में कार्यक्रम
3. अन्यत्र भारत में यात्राएँ एवं कार्यक्रम
4. विदेशों में गायन प्रचार एवं प्रसार हेतु लक्षित कार्यक्रम
5. उपलब्धियाँ

# षष्टम अध्याय
## गायन कार्यक्रम एवं सम्मान

पिता एवं गुरु चिन्मय लाहिड़ी द्वारा दी गई संगीत शिक्षा के पश्चात् उन्हीं की गायकी को आगे बढ़ाते हुए पंडित दीनानाथ मिश्र ने विभिन्न संगीत कार्यक्रमों को अपने सुमधुर स्वरों से सुगंधित किया। इन कार्यक्रमों की सफलता के कारण आपकी लोकप्रियता बढ़ती गई। यह सिलसिला बाल्यकाल से शुरू होकर निरंतर ज़ारी है। पंडित दीनानाथ मिश्र आकाशवाणी व दूरदर्शन केंद्रों पर तथा अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनों में अपनी प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मंत्र–मुग्ध करते रहें हैं। विदेशों में भी आपने अनेक प्रस्तुतियाँ दीं इसके लिए आपको पर्याप्त सम्मान मिला तथा चोटी के नामी गिरामी ख्याति प्राप्त संगीतज्ञों से आपका समागम हुआ जिसका विस्तृत विवेचन निम्नलिखित बिंदुओं में समाहित है–

### 1. दूरदर्शन केंद्रों पर कार्यक्रम–

'पंडित दीनानाथ मिश्र1959–60 में सोलह वर्ष की अल्पायु में अपने पिता पंडित राखाल मिश्र जी के साथ कोलकाता आए, यहाँ आकर उन्होंने अपनी शिक्षा के साथ–साथ संगीत शिक्षा भी ज़ारी रखी। आपने1960 में 17 वर्ष की अल्पायु में कोलकाता रेडियो स्टेशन से गायन शुरू किया। 1966 में पंडित दीनानाथ मिश्र बी– हाई ग्रेड के कलाकार बन गए , उस समय इतनी कम आयु के केवल आप ही ऐसे कलाकार थे जिन्हें बी– हाई ग्रेड मिला था। बी से ए ग्रेड के कलाकार बनने में आपको कोई ऑडिशन नहीं देना पड़ा। एक बार कोलकाता रेडियो स्टेशन से सन्1984 में (Tuesday Concert ) के अन्तर्गत आपका गायन प्रसारित हुआ उसे दिल्ली में कुछ दिग्गजों ने सुना व सुनते ही आपको टॉप ग्रेड देने का फैसला किया परन्तु कम आयु होने की वजह से 'ए' ग्रेड ही दिया गया। यह सिलसिला ज़ारी रहा व पंडित जी शीघ्र ही ए ग्रेड से टॉप ग्रेड के कलाकार बन गए।'[1] 'पंडित जी के बारे में एक बहुत ही रोचक बात है, जिसका ज़िक्र मैं

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 10/05/2014, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थानपर) समय: रात्री 9 बजे

यहाँ करना चाहूँगी, जब पंडित जी 16–17 वर्ष की उम्र में कोलकाता आए और रेडियो स्टेशन से गायन प्रारभं किया उसी दौरान आपने Hindustan Iron Steel Company में दस वर्ष तक नौकरी भी की वहाँ आप ऑपरेटर के पद पर कार्यरत थे। एक बार रेडियो स्टेशन से आपके गायन का प्रसारण होने वाला था, जिसके लिए छुट्टी न मिलने पर आपने वह नौकरी छोड़ दी और कहा अपना ही गाना सुनने के लिए छुट्टी ना मिले ऐसी नौकरी किस काम की। उसके बाद पंडित जी केवल गायन में ही लीन हो गए। इसी प्रकार एक बार पंडित जी उसी अल्पायु में रेडियो स्टेशन से राग 'देसी तोड़ी' गा रहे थे, आपका गायन 'उस्ताद निसार हुसैन खाँ' साहब ने सुना व पंडित जी को अपने घर बुलाया और कहा– बेटा बहुत अच्छी आवाज़ है, बहुत अच्छा गा रहे हो, इसी तरह गाते रहो व मेहनत करते रहो बहुत नाम कमाओगे। दूरदर्शन पर भी आपके अनगिनत कार्यक्रम प्रसारित हुए हैं– संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम जो दिल्ली दूरदर्शन से प्रसारित होता है उस पर पंडित जी अनेक बार अपनी भावपूर्ण प्रस्तुतियाँ दे चुके हैं।'[1]

## संगीत सम्मेलनों में कार्यक्रम

पंडित दीनानाथ मिश्र जी ने विभिन्न संगीत सम्मेलनों में अपने कार्यक्रमों की अनेक प्रस्तुतियाँ दीं और श्रोताओं का मन मोह कर उनके हृदयों पर राज करने लगे। उनके संगीत सम्मेलनों में से प्रमुख कार्यक्रमों को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं:–

### (अ) ' पश्चिमी बंगाल में आयोजित संगीत सम्मेलन–

(1) अखिल भारतीय तानसेन संगीत समारोह

(2) सदारंग संगीत सम्मेलन

(3) पश्चिमी बंगाल राज्य संगीत अकादमी

(4) रागिनी संगीत सम्मेलन

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 10/05/2014, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थानपर) समय: रात्री 9 बजे

(5) सॉल्ट लेक संगीत उत्सव

(6) संगीत पियाशी संगीत सम्मेलन

(7) नाद ब्रह्म संगीत सेवा आश्रम द्वारा आयोजित कंठ संगीत की जुगल बंदी में उस्ताद अहमद अली हुसैन के साथ गायन प्रस्तुतियाँ दीं।

## (ब) भारत के अन्य प्रदेशों में आयोजित संगीत सम्मेलन :–

(1) सुर सिंगार सम्मेलन ( मुम्बई )

(2) बांद्रा म्यूज़िक सर्कल ( मुम्बई )

(3) मल्हार म्यूज़िक सर्कल ( मुम्बई )

(4) मल्हार के विभन्न राग ( पूना )

(5) संकटमोचन संगीत समारोह (वाराणसी)

(6) संगीत गंगा समारोह (वाराणसी)

(7) एच.सी.एल.हेवीटेन सेंटर प्रोग्राम (दिल्ली)

(8) दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित संगीत कार्यक्रम

(9) ठुमरी समारोह (नई दिल्ली)

(10) आई.सी.सी आर ठुमरी समारोह (नई दिल्ली)

(11) पंडित जद्दू महाराज संगीत समारोह (नई दिल्ली)

(12) शास्त्रीय संगीत सम्मेलन (नई दिल्ली)

(13) बाबा हरिवल्लभ संगीत समारोह (पंजाब)

(14) प्राचीन कलाकेन्द्र (चंडीगढ़)

(15) संगीत कला मंच (जालंधर) आदि। "[1]

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 10/05/2014, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थानपर) समय: रात्री 9 बजे

इसके अलावा आपने देहरादून एवं अजमेर में आयोजित अनेक संगीत समारोहों में अपनी प्रस्तुतियाँ देकर श्रोताओं को भाव विभोर किया।

## अन्यत्र भारत में यात्राएँ एवं कार्यक्रम

'देश–विदेश के बड़े संगीत समारोहों के अतिरिक्त पंडित दीनानाथ मिश्र के अन्य कई कार्यक्रम होते रहते हैं। ऐसे छोटे–बड़े सार्वजनिक कार्यक्रमों के अलावा उनकी कई अनऔपचारिक घरेलू बैठकें भी श्रोताओं एवं संगीतज्ञों के लिए यादगार बनीं हुई हैं। विभिन्न स्थानों पर दिए गए अपने गायन कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी स्वरचित बंदिशें जिन्हें **'दीन पिया'** के नाम से प्रस्तुत करके जानकार श्रोताओं एवं संगीतकारों के मध्य आपने लोकप्रियता प्राप्त की। इन संगीत संबंधि कार्यक्रमों में

अधिकांशतया आपके दामाद श्री जयशंकर मिश्र आपके साथ तबले पर संगति करते हैं।'[1]

'6 अप्रेल1995 हरिमोहन स्मृति के तीसरे वार्षिक अनुष्ठान का कार्यक्रम महाजाति सदन में सम्पन्न हुआ। यह अनुष्ठान रात भर चला इसमें संगीत की विभिन्न विधाओं के कार्यक्रम के साथ–साथ पंडित दीनानाथ मिश्र का गायन भी हुआ जिसमें पंडित जी ने राग बैरागी एवं बहार की प्रस्तुती देकर श्रोताओं को मंत्र–मुग्ध कर दिया। आपके पुत्र श्री मंगल मिश्र ने गायन में आपका साथ दिया।'[2]

'एड्स नियंत्रण के उद्देश्य से सृजित मानवता की सेवा में प्रगति के मार्ग पर प्रशस्त राजस्थान की गैर सरकारी स्वयं सेवी संस्था ''लक्ष्य'' के द्वारा एड्स नियंत्रण तथा इस संदर्भ में जागरुकता जगाने हेतु 12 फरवरी 1997 को एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन शिवली नेशनल इंटर कॉलेज आज़मगढ़ के प्रांगण में किया गया। बसंत पंचमी के इस शुभ अवसर पर सांस्कृतिक मूल्यों के धरोहर संगीत तथा साज़ के विशारद अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार एवं संगीत के मर्मज्ञ पंडित दीनानाथ , पंडित भोलानाथ व पंडित कालीनाथ मिश्र बंधुओं ने दर्शकों को अपनी कला से मुग्ध कर यह साबित कर दिया कि साज़ और आवाज़ के बल पर मानवीय सोच को बदला जा सकता है जिससे कि एड्स ही नहीं अपितु

---

1. श्री मंगल मिश्र से चर्चा , दिनांक: 11/02/2014, स्थान–मुम्बई समय: सांय 4 बजे
2. समाचार पत्र : आनन्द बाज़ार, दिनांक: 07/04/1995

किसी भी प्रकार की सामाजिक या राष्ट्रीय चुनौतियों से एक जुट होकर निपटा जा सकता है।'[1]

'17 अक्तूबर 1997 दमदम के.के. अकादमी में दसवाँ वार्षिक उत्सव मनाया गया जिसमें पंडित दीनानाथ मिश्र एवं उनके शिष्यों के विभिन्न संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। पंडित जी ने सबसे पहले राग आभोगी में ख़्याल गाया तथा उसके बाद एक बंदिश प्रस्तुत की जिसके बोल थे ''नयनवा तान–तान ताके मारे नटवर''।'[2]

' दिनांक 6अप्रेल1998 को संकटमोचन संगीत समारोह के तीसरे दिन के कार्यक्रम में पंडित भोलानाथ मिश्र व पंडित दीनानाथ मिश्र का युगल गायन हुआ। आपने सर्वप्रथम राग पूरिया कल्याण की अवतारणा की व इसके पश्चात् राग केदार में एक बंदिश सुनाकर समापन किया। आपके साथ तबले पर श्री किशोर मिश्र व हारमोनियम पर संगत डॉक्टर दिनकर शर्मा ने की। इस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुनिता बुद्धिराजा कर रहीं थीं।'[3]

' संस्था रिद्म ने 20वें वार्षिक शास्त्रीय संगीत समारोह का आयोजन किया, जिसका उददे्श्य भारतीय संस्कृति एवं शास्त्रीय संगीत को प्रोत्साहित करना है। इसी कड़ी में रिद्म संस्था ने कोलकाता में स्थित बिरला अकादमी सभागार में 11नवंबर 2001को एक रिद्मिक इवनिंग आयोजित की गई जिसमें पंडित दीनानाथ मिश्र ने शास्त्रीय गायन प्रस्तुत किया तथा दर्शकों को मंत्र–मुग्ध कर दिया।'[4]

' संस्था तान चक्र के 10वें वार्षिक शास्त्रीय महोत्सव में पंडित दीनानाथ मिश्र के शिष्य–संचारी चौधरी, दीपांजना बोस, सीज़ाराय ने अपना गायन प्रस्तुत कर कार्यक्रम में शमा बाँधा। कार्यक्रम के अंत में पंडित दीनानाथ मिश्र ने राग आभोगी तत्पश्चात् राग केदार में ख़्याल गायकी की बारीकियों व विभिन्न तानों को विस्तार से प्रस्तुत किया एवं अपने गायन के अंत में ठुमरी व दादरा की प्रस्तुती दी। आपके साथ इस कार्यक्रम के दौरान श्री मंगल मिश्र ने आपका साथ दिया, तबले पर संगत श्री सुधेंधु कर्माकर ने की तथा हारमोनियम पर श्री श्यामल चंदा ने संगति की। '[5]

---

1. समाचार पत्र : गोरखपुर महानगर, दिनांक: 18/02/1997
2. समाचार पत्र : आनन्द बाज़ार, दिनांक: 07/04/1995
3. समाचार पत्र : दैनिक जागरण ,वाराणसी (इलाहाबाद) दिनांक: 18/04/1998
4. समाचार पत्र : मेट्रो, दिनांक: 10/11/2001
5. समाचार पत्र : ईर्स्टन एज़,कोलकाता , दिनांक: 19/08/1997

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक विरासत में बहती रहती है इसका एहसास हुआ ''संस्कार कार्यक्रम'' में जिसमें पंडित दीनानाथ मिश्र के साथ उनके भाई पंडित भोलानाथ मिश्र ने कई रागों में ख़्याल के साथ– साथ ठुमरी और भजन गायन की प्रस्तुती दी। बनारस घराने के मशहूर गायक पंडित दीनानाथ मिश्र के 60 वें जन्मदिन पर एच.सी.एल कंसर्ट सीरीज़ के तहत इस कार्यक्रम में आपके पुत्र श्री मंगल मिश्र व आपकी पुत्री श्रीमती स्नेहलता मिश्रा ने कार्यक्रम की बागडोर संभाली। तबले पर श्री जयशंकर मिश्र व सारंगी पर पंडित भारत भूषण गोस्वामी जी ने साथ दिया। पंडित दीनानाथ मिश्र जी की खनकती आवाज़ा और रागों पर पक्की पकड़ ने इस कार्यक्रम को यादगार बना दिया।'[1]

'आई.सी.सी.आर के आयोजन ''ठुमरी उत्सव'' के तीसरे व अंतिम दिन ठुमरी, दादरा और कजरी की धूम रही। उस शाम दिल्ली का कमानी सभागार ठुमरी गायन की महफिल बना हुआ था। कार्यक्रम के आरंभ में शुरू हुआ वाह–वाह का सिलसिला अंत तक ज़ारी रहा। दिवंगत ग़ज़ल गायिका बेगम अख़्तर और निर्मला अरुण को याद करते हुए अपनी प्रस्तुती लेकर कोलकाता से आए पंडितदीनानाथ मिश्र ने राग देस से सजी बंदिश ''कोयलिया कुहुक सुनाए'' व ठुमरी ''कंकर मोहि लग जइहैं ना हो'', बनारस का दादरा व ''आई सावन की बहार'' जैसी कजरी गुनगुनाकर उन्होंने मानो आनंद का रस बरसा दिया। अंत में ''बाबुल मोरा नैहर छूटो जाए'' भैरवी ठुमरी से गायन का समापन करते हुए पंडित दीनानाथ मिश्र ने ठुमरी उत्सव की शाम को यादगार बना दिया।

पंडित दीनानाथ मिश्र की आवाज़ के साथ तबले पर थाप दे रहे थे श्री जयशंकर प्रसाद, सारंगी पर संगत की पंडित भारत भूषण गोस्वामी जी ने और हारमोनियम पर श्री सारनाथ मिश्र ने शिरकत की।'[2]

---

1.साप्ताहिक समाचार पत्र : आऊट लुक, दिनांक: 25/10/2004
2. समाचार पत्र : दैनिक जागरण, नई दिल्ली , दिनांक: 12/07/2005

'17 मई2002 को पंडित जद्दू महाराज संगीत समारोह में पंडित दीनानाथ मिश्र जी ने अपने गायन की प्रस्तुतियाँ दे कर उपस्थित श्रोताओं के हृदय को झंकृत कर दिया।'[1]

'20अप्रेल 2003 रविन्द्र सदन में पश्चिम बंगाल अकादमी द्वारा आयोजित चार दिवसीय संगीत समारोह का आयोजन हुआ जिसके तीसरे दिन प्रभाती समारोह में पंडित जी द्वारा प्रस्तुत राग गुणकली के ख़्याल ने श्रोताओं को खूब मन्त्रमुग्ध किया।'[2]

पंडित दीनानाथ मिश्र ने देश में ही नहीं विदेशों भी संगीत प्रेमियों के समक्ष अपनी गायकी से अपने व्यक्तित्व की विशेष छाप छोड़ी है। इसी श्रृंखला में '9 अगस्त 2008 शुक्रवार को ओमान , मस्कट में इंडियन एम्बेसी के द्वारा दो दिवसीय शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम के दूसरे दिन पंडित दीनानाथ मिश्र ने वहाँ उपस्थित श्रोताओं को अपनी गायकी से तृप्त किया तथा आपने अपने जीवन के बनारस घराने से संबंधित गायकी के 50 वर्षो के अनुभव को बाँटते हुए इस घराने की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम के अंतर्गत पंडित जी के साथ तबले पर पंडित कालीनाथ मिश्र एवं हारमोनियम पर खगेश कीर्तनिया ने संगत की। पंडित जी के बेटे श्री मंगल मिश्र ने सुगम संगीत के द्वारा उपस्थित श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया।'[3]

' गत18 वर्षो से मुम्बई में आयोजित हुए मेघ मल्हार उत्सव में 23 जून 2008 को भारतीय शास्त्रीय संगीत के गायक पंडित दीनानाथ मिश्र जी ने अपने गायन की प्रस्तुती दी और श्रोताओं को भाव – विभोर किया। आपने वर्षा ऋतु पर आधारित रागों में राग मेघ मल्हार तथा मल्हार पर आधारित रागों के बारे में समझाते हुए कहा कि इन वर्षा ऋतु की रागों को गाते समय गायक को अपनी गायकी व गले में विशेष प्रकार की हरकत करके प्रस्तुत करना होता है जिससे श्रोताओं को इस ऋतु का आभास हो सके। इस कार्यक्रम में आप मेघ मल्हार को समय के अभाव के कारण 20 से 25 मिनट ही गा पाए जबकि राग का पूरा स्वरूप प्रस्तुत करने के लिए आप लगभग 45 मिनट का समय लेते हैं।

---

1. समाचार पत्र : देहरादून जागरण, दिनांक: 18/05/2002
2. समाचार पत्र : आनन्द बाज़ार, दिनांक: 21/04/2003
3. समाचार पत्र : ओमान ट्रिब्यून, दिनांक: 09/08/2008

राग मेघ मल्हार के पश्चात् आपने सूरदासी मल्हार की प्रस्तुती दी तत्पश्चात् दादरा गायन से अपने कार्यक्रम की समाप्ति की। किसी श्रोता के यह पूछने पर कि आपके गायन से वर्षा नहीं आई तो क्या आप अपना राग बदल देगें? इसके जवाब में पंडित जी ने मुस्कुराते हुए कहा कि यह आवश्यक नहीं कि किसी भी मल्हार राग से वर्षा हो ही परंतु यह स्पष्ट है कि इन रागों के वातावरण का मनुष्य के मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है तथा वह अपने अंतरमन में वर्षा ऋतु को महसूस करता है। '[1]

' दिनांक 26जुलाई 2012 कोलकाता महानगर की सुप्रसिद्ध सांगीतिक संस्था तानचक्र म्यूज़िक सोसायटी द्वारा वार्षिक संगीत सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें पंडित दीनानाथ मिश्र व श्री मंगल मिश्र ने अपनी स्वर लहरियों से उपस्थित श्रोताओं का मन मोह लिया। पंडित जी ने विलंबित ख़्याल से जब अपने कार्यक्रम का शुभारंभ किया , श्रोताओं ने करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया और राग देस में उनके द्वारा गायी गई ठुमरी ''व्याकुल नैना नीर बरसाए'', श्रोताओं के अंतरमन के तार को झंकृत कर गयी। शब्द और राग का अद्भुत समन्वय पंडित जी के गायन में देखने को मिला। इससे पूर्व आपके सुपुत्र श्री मंगल मिश्र ने मौसम के अनुकूल राग मेघ में ''बरसन लागे मेहरवा'' गाकर अपनी कुशल गायकी का परिचय दिया। आम तौर पर पंडित जी ग़ज़ल नहीं गाया करते किंतु इस कार्यक्रम में पंडित जी द्वारा संगीतबद्ध शमीम जयपुरी की ग़ज़ल ''फिर भी क्या बात है कि दिल कहीं लगता ही नहीं'', गाकर आपने सबका मन मोह लिया।'[2]

' शास्त्रीय संगीत भले ही ज़्यादा सुनने को नहीं मिले मगर शास्त्रीय संगीत को सुनकर आज भी कई लोगों के दिन की शुरूआत होती है। शास्त्रीय संगीत के प्रेमियों के लिए एक शाम संगीत के नाम तानचक्र म्यूज़िक सोसायटी के द्वारा 20जुलाई2013 महाजाति सदन में शाम के साढ़े पाँच बजे संगीत के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में पंडित दीनानाथ मिश्र ने गायन की प्रस्तुती देकर श्रोताओं को भाव विभोर किया, आपके साथ तबले पर श्री जयशंकर मिश्र ने संगत करके दर्शकों से दाद बटोरी।'[3]

---

1. समाचार पत्र : मुम्बई मिरर, दिनांक: 24/06/2008
2. समाचार पत्र : सन्मार्ग राग रंग, दिनांक: 27/07/2012
3. समाचार पत्र : सन्मार्ग इ वर्ल्ड, दिनांक: 19/07/2013

'22 मई2014 को पंडित दीनानाथ मिश्र की शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्ट सफलता के लिए पश्चिम बंगाल के ''Information and Cultural Affairs'' के नवरत्न द्वारा 26 मई 2014 को आपको न्यू टाउन के नवनिर्मित नज़रूल प्रेक्षागृह में उपस्थित होने के लिए सादर अनुरोध किया गया। इस अवसर पर पंडित दीनानाथ मिश्र को **''गिरिजा शंकर''** पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।'[1]

' दिनांक 14 जून 2014 संगीत नाटक अकादमी एवं तानचक्र म्यूज़िक सोसायटी कोलकाता के संयुक्त तत्वाधन में सुप्रसिद्ध गायक पंडित दीनानाथ मिश्र के मार्गदर्शन में 16 जून 2014 से 18 जून 2014 तक तीन दिवसीय ठुमरी कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। '[2]

# विदेशों में प्रचार एवं प्रसार हेतु लक्षित कार्यक्रम

वर्तमान में भारतीय संगीत की नवीनतम शिक्षा पद्धति लगभग सौ वर्षो से ही प्रचलित हुई है जो कि भारतीय संगीत के व्यापक प्रचार का एकमात्र साधन है। यह कला अति प्रचीन है अतः जागृति से इसका कोई विशेष संबंध नहीं है। जागृति तथा प्रचार में बड़ा अंतर है। हम भारतीय संगीत के व्यापक प्रचार के युग में रह रहें हैं, यह संगीत जो कि प्राचीन समय में अपनी पराकाष्ठा पर विराजमान था उस स्वर्णीम शिखर पर अब नहीं है। अतः वर्तमान युग में यह संगीत अपनी उन्नति की ओर बढ़ रहा है।

इस आधुनिक पद्धति के पहले प्रचारक तथा अन्वेषक पंडित विष्णु दिगंबर थे जिनके मस्तिष्क में सर्वप्रथम यह विचार आया कि संगीत प्रचार और संगीत शिक्षा दोनों साथ ही चलने चाहिए। ' जैसे–जैसे लागों में संगीत का सामान्य ज्ञान बढ़ेगा और उनकी रुचि की उन्नति होगी वैसे–वैसे संगीत का प्रचार–प्रसार और विस्तृत होता चला जाएगा। उनका ध्येय केवल गायक ही बनाने का नहीं था बल्की संगीत के शिक्षकों को तैयार करना था जिससे संगीत के सामान्य ज्ञान में वृद्धि हो।

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांकः 10/05/2014, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थानपर) समयः रात्री 9 बजे
2. समाचार पत्र : सन्मार्ग, दिनांकः 14/06/2014

संगीत प्रचार के लिए संगीत शिक्षा सबसे अधिक आवश्यक है। शिक्षित वर्ग के लोग संगीत की शिक्षा पाकर दूसरों को भी संगीत सीखने का उचित प्रोत्साहन देंगे और इस तरह संगीत की रुचि बढ़ती चली जाएगी। संगीत के इस नए आंदोलन ने सबसे पहले शिक्षित समाज को ही आकर्षित किया और उसकी सहानुभूति व नैतिक साहस को भी जीता।'[1]

'महाराष्ट्र के श्री बालकृष्ण बुआ के शिष्य पंडित विष्णु दिगंबर ने भारत भर में संगीत का प्रचार– प्रसार किया। ऐसे धुरंधर गायक के शिष्य होकर यह संभव नहीं था कि पंडित विष्णु दिगंबर संगीत प्रचार में ऐसी तत्परता से जुट न जाते। संगीत प्रचार–प्रसार की यह प्रेरणा उन्हें अपने गुरु से ही प्राप्त हुई।'[2]

संगीत की इस नई पद्धति में यह बात अवश्य है कि इस पद्धति से पुरानी तालीम का विरोध हुआ क्योंकि संगीत के व्यापक प्रचार–प्रसार में घर में बैठकर सिखाई जाने वाली गुरु–शिष्य परंपरा उतना काम नहीं कर सकती थी जितना कि संगीत को एक विषय के रूप में अपनाकर हमारी शिक्षा पद्धति के अंतर्गत पाठ्य क्रम में शामिल करके आम जन के लिए उसके रास्ते खोल दिए जाएँ।

' पंडित दीनानाथ मिश्र के दृष्टिकोण में यह एक मामूली परिर्वतन नहीं है, आपका मानना है कि संगीत अब कोई रहस्य नहीं है सरल स्वर लिपि पद्धति से आज यह आम जन के नज़दीक पहुँच चुका है। संगीत के विद्यार्थियों के लिए बाज़ार में संगीत विषय से संबंधित अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं। विद्यार्थी संगीत शिक्षक की सहायता से इन पुस्तकों में दी गई विभिन्न स्वर लिपियों एवं बंदिशों को आसानी से तैयार कर सकते हैं ।

संगीत में छिपि उस अलौकिक गहराई का जब किसी को आभास होता है तो वह उससे दूर कैसे रह सकता है। पंडित राखाल मिश्र का शिष्यत्व प्राप्त होने के पश्चात् पंडित दीनानाथ मिश्र की गायकी में सैद्धांतिक आधार आया तथा अपने

---

1.सुशील कुमार चौबे, हमारा आधुनिक संगीत , पृष्ठ संख्या 161, संस्करण 1983

2. वही , पृष्ठ संख्या 163

गुरु की गायकी का अनुशासन एवं अनुकरण करके आप अपनी शिष्य परंपरा और अपने मत स्थापित कर रहे हैं।

एक गायक की हैसियत से आपका सबसे बड़ा कार्य था गायक तैयार करना। इस दिशा में आपका यह काम बड़ा ही महत्वपूर्ण रहा है। आपने अपने कुछ खास शिष्य तैयार किए हैं जो कि आपकी परंपरा को निरंतर आगे बढ़ाएँगे। आपके शिष्यों में अच्छे गायक तैयार होंगे ही साथ ही साथ अच्छे शिक्षक भी तैयार होंगे जो भावी पीढ़ी में आपसे प्राप्त ज्ञान की वृद्धि कर पाएँगे। संगीत प्रचार का जो महान कार्य आपने किया है और एक सफल गायक के रूप में जो नाम कमाया है तथा अपने गुरु की परंपरा को आगे बढ़ाकर उनका मान बढ़ाया है, आपके इस कार्य की जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है। "[1]

पंडित जी ने देश में ही नहीं विदेशों में भी अपनी कला का लोहा मनवाया है, विदेशों में जहाँ भी उन्होंने अपने कार्यक्रम की प्रस्तुतियाँ दीं श्रोताओं एवं दर्शकों से अत्यधिक प्रशंसा प्राप्त की।

" आप 2006 में आई.सी.सी.आर के तहत जर्मनी में अपने कार्यक्रम की प्रस्तुती के लिए गए। दर्शकों के समक्ष आपकी गंभीर मुद्रा की छवि ऐसी थी कि ज्यों ही आपने राग तोड़ी का आलाप शुरू किया पूरे सभागार में दर्शकों ने तालियों से आपका स्वागत किया। तोड़ी राग में आपने बड़ा ख़्याल उसके बाद छोटा ख़्याल तत्पश्चात् तराना प्रस्तुत किया। तराने के अंतर्गत आपकी लयकारी, विभिन्न तानों का प्रयोग आदि देखकर दर्शकों ने दाँतों तले अंगुली दबा ली। इस कार्यक्रम के पश्चात् पंडित जी अपने सभी संगीत कलाकारों के साथ लंदन के लिए रवाना हुए। भारतीय मूल के लंदन निवासी सुप्रसिद्ध तबला वादक श्री शारदा सहाय, अपने पूर्वजों की स्मृति में सालाना संगीत का कार्यक्रम रखते हैं, इस श्रृंखला में 2006 में आयोजित इस संगीत समारोह में पंडित दीनानाथ मिश्र ने अपना संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 11/05/2014, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थानपर) समय: प्रात: 10 बजे

इस कार्यक्रम में आपके साथ छोटे भाई पंडित भोलानाथ मिश्र ने भी शिरकत की। कार्यक्रम का प्रारंभ पंडित जी ने राग नटभैरव से किया जिसमें उन्होंने बड़ा ख़्याल तत्पश्चात् छोटा ख़्याल प्रस्तुत किया। इसी कार्यक्रम के अंर्तगत पंडित जी के भाई पंडित भोलानाथ मिश्र ने राग पूरियाधनाश्री प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में दोनों भाइयों ने राग मालकौंस में बड़ा ख़्याल, छोटा ख़्याल व तराना प्रस्तुत किया। आपकी गायकी इतनी प्रभावशाली थी कि कार्यक्रम के पश्चात् पंडित शारदा सहाय (तबला वादक) जो कि आपको रूबरू बैठकर सुन रहे थे, अनेक बार आपकी तारीफ की। सभागार में उपस्थित दर्शकों में कार्यक्रम के पश्चात् मिलने की, आपके विचारों को जानने की होड़ सी लगी हुई थी। विदेशों में प्रस्तुत कार्यक्रमों में पंडित जी की स्मृति में छाए कार्यक्रमों में यह एक प्रमुख यादगार कार्यक्रम था।'[1]

'विदेशों में कार्यक्रम के अंर्तगत पंडित दीनानाथ मिश्र 2008 में आई.सी. सी. आर के तहत गल्फ में बेहरीन गए। आपके साथ अन्य साथी कलाकारों में तबले पर पंडित कालीनाथ मिश्र, हारमोनियम पर खगेश कीर्तनिया व पंडित जी के पुत्र श्री मंगल मिश्रा ने संगत की। इस कार्यक्रम के तहत पंडित जी ने राग यमन में बड़ा ख़्याल, छोटा ख़्याल व तराने की प्रस्तुती दी, तो सभागार तालियों से गूँज उठा। अंत में श्रोताओं की खास फरमाइश पर पंडित जी ने बनारस की ठुमरी प्रस्तुत की, जिसे लोगों ने खूब पसंद किया। बेहरीन से पंडित जी मस्कट पहुँचे, यहाँ भी संगीत रसिकों द्वारा आपको भरपूर सम्मान मिला। यहाँ आपने आई.सी.सी. आर के तहत दिए गए संगीत कार्यक्रम में सुबह राग तोड़ी प्रस्तुत की उसके पश्चात् संधि प्रकाश राग पूरिया धनाश्री प्रस्तुत की। आपने दोनों ही रागों में अपनी ख़्याल गायकी का परिचय देते हुए गायकी के विभिन्न अंगों द्वारा इन्हें प्रस्तुत किया व बनारस एवं पटियाला घराने की विशेषताओं का परिचय देकर ख्याति प्राप्त की। आपने अपने संगीत कार्यक्रम के माध्यम से संगीत के प्रचार एवं प्रसार का महान कार्य किया।

---

1. पंडित भोलानाथ मिश्र से चर्चा , दिनांकः 15/03/2014, स्थान–दिल्ली , समयः रात्री 9 बजे

गल्फ में प्रस्तुत कार्यक्रमों के बारे में पंडित जी बताते हैं कि वहाँ के श्रोता बड़े ही गुणीं थे क्योंकि ये श्रोता संगीत के कुशल जानकार एवं पारखी थे, स्वरों की मधुरता एवं मिठास को उन्होंने अपनी आत्मा तक महसूस किया। उनसे जो तालियों द्वारा दाद मिली उनमें बनावटीपन, अस्वाभाविक या असंगत की मिलावट नहीं होती थी बल्कि गायकी की बारीकी के अनुसार गंभीरता, भावुकता एवं तर्क संगत होती थी। "[1]

इस प्रकार पंडित दीनानाथ मिश्र ने विभिन्न देशों में जाकर बनारस घराने की गायकी एवं भारतीय संगीत का व्यापक प्रचार–प्रसार का कार्य किया तथा अपने दर्शन,ध्यान,साधना,कला, ज्ञान,गूढ़ विद्या आदि को देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी फैलाकर अनेकों पुरस्कार प्राप्त किए। इस कार्य में पंडित जी ने अपने अनेक शिष्यों,अपने भाइयों पंडित भोलानाथ मिश्र व पंडित कालीनाथ मिश्र तथा अपने पुत्र श्री मंगल मिश्र एवं पुत्री श्रीमती स्नेहलता मिश्रा आदि का सहयोग लिया। पंडित जी के इस कार्य से हिन्दुस्तानी संगीत को विदेशों में जो सम्मान प्राप्त हुआ वह शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत और विशेषकर कलाकारों के लिए एक मिसाल के रूप में बन गया है। इससे हमारी सांस्कृतिक धरोहर को भारत में ही नहीं वरन विदेशों में भी संरक्षण प्राप्त हो रहा है।

## उपलब्धियाँ

भारतीय शास्त्रीय संगीत के दीर्घकालीन सेवाओं के लिए पंडित दीनानाथ मिश्र को देश–विदेश में अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। किसी भी कलाकार को प्राप्त होने वाले ये सम्मान ही उसकी मूल पूंजी मानी जाती है ,इस दृष्टि से पंडित जी बहुत धनी हैं। 'आपने अनेकों पुरस्कार प्राप्त किए जिनमें

---

1. पंडित कालीनाथ मिश्र से चर्चा , दिनांक: 21/04/2014, स्थान–मुम्बई , समय: रात्री 8 बजे

`प्रमुख रूप से''संगीत कला मंच, जालंधर'' द्वारा पद्मविभूषण बेगम अख़्तर की स्मृति में आयोजित 22 वें संगीत सम्मेलन तथा 5 मार्च 1995 को आयोजित 27 वें भक्ति संगीत संध्या समारोह में आपको संगीत कला जगत में विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया गया। 'संगीत सरोवर संस्था, मुम्बई'' द्वारा 21नवंबर1998 को तबला सम्राट स्वर्गीय पंडित बूँदी महाराज के श्रद्धाजंली समारोह में आपको पद्मभूषण पंडित हरि प्रसाद चौरसिया द्वारा सम्मानित किया गया। 'साल्ट लेक म्यूज़िक फेस्टिवल,कोलकाता'' द्वारा 27 दिसंबर 2002 में **''संगीत रत्न''**की उपाधि से सम्मानित किया गया।

इसके अतिरिक्त ''सुर सिंगार संसद संस्था (मुम्बई)''द्वारा पंडित जी को **''सुरमणि''** की उपाधि से सम्मानित किया गया।

विदेशों में सम्मान की श्रृंखला में ओमान स्थित भारतीय दूतावास ने आई.सी. सी.आर के तहत 7 से 12 अगस्त 2008 को भारतीय कलाकारों के सम्मान में एक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें भारतीय राजदूत श्रीमान अनिल वधावा ने पंडित जी के संगीत के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया। कोलकाता आयोजित 2010 के ''परंपरा संगीत महोत्सव'' में भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए आपको सम्मान प्राप्त हुआ।'[1]

'पंडित जी को पश्चिम बंगाल के "Information and Cultural Affairs Department" के द्वारा 26 मई 2014 न्यू टाऊन के नव निर्मित नज़रूल पेक्षागृह में **''गिरिजा शंकर चक्रवर्ती''** पुरस्कार से वहाँ की मुख्य मंत्री ममता बनर्जी द्वारा सम्मानित किया गया।

पश्चिमी बंगाल में आयोजित ''अखिल भारतीय तानसेन संगीत समारोह'', ''सदारंग संगीत समारोह'', ''संगीत पियासी संगीत समारोह'' तथा ''नाद ब्रह्म संगीत सेवा आश्रम (सोदपुर)'' द्वारा आयोजित शहनाई तथा गायन की जुगलबंदी आदि कार्यक्रमों के अंतर्गत आपको अनेक सम्मान प्राप्त हुए।

---

1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 12/05/2014, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थानपर) समय: सांय 6 बजे

पश्चिमी बंगाल के अतिरिक्त गुवहाटी, सिलचर, अगरतला आदि स्थानों पर आयोजित संगीत समारोहों में आपने अपनी ख्याति अर्जित करते हुए अनेक सम्मान प्राप्त किए।

इनके अतिरिक्त''बांद्रा म्यूज़िक चक्र (मुम्बई)'', ''मल्हार फेस्टिवल (नेहरू सेंटर मुम्बई)'', ''मल्हार की विभिन्न रागें (पूना)'', ''संकट मोचन संगीत समारोह (वाराणसी)'', ''संगीत गंगा समारोह (वराणसी)'', ''ठुमरी फेस्टिवल, (नई दिल्ली)'', आई.सी.सी.आर द्वारा आयोजित ''ठुमरी महोत्सव (नई दिल्ली)'', ''पंडित जद्दू महाराज संगीत समारोह (नई दिल्ली)'', '' क्लाकिल म्यूज़िक कॉनफ्रेंस (नई दिल्ली)'', ''बाबा हरिवल्लभ संगीत समारोह (पंजाब)'', 'प्राचीन कला केन्द्र (चंडीगढ़)'', ''संगीत कला मंच (जालधंर)'' आदि अनेक स्थानों पर पंडित जी ने अपने कार्यक्रमों के माध्यम से दर्शकों का मन जीतातथा अनेक सम्मान प्राप्त किए।

आपके संगीतमय जीवन एवं भारतीय संगीत के उत्थान हेतु किए गए कार्यो तथा आज की पीढ़ी को संगीतमय वातावरण के लिए तैयार करने हेतु त्रिपुरा सरकार द्वारा आयोजित कार्यक्रम में वहाँ के राज्यपाल श्रीमान दिनेश नंदन सहाय द्वारा आपको सम्मानित किया गया।'[1]

पंडित जी अपने सांगीतिक ज्ञान को अपने तक सीमित न रखकर विभिन्न संगीत सम्मेलनों व दूरदर्शन केन्द्रों पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से संगीत को आम जन तक पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं व इस सांस्कृतिक धरोहर का प्रचार–प्रसार भी कर रहे हैं। संगीत के संरक्षण के दृष्टिकोण से अनेक ऐसे विद्यार्थी तैयार कर रहे हैं जिनके सुरक्षित हाथों में इस धरोहर को सौंपा जा सके।

---

**1. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 12/05/2014, स्थान–कोलकाता (उनके निवास स्थानपर) समय: सांय 6 बजे**

# सप्तम अध्याय

## "सांस्कृतिक धरोहर का प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण"

1. विद्यार्थी
2. कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ
3. अन्य (वेबसाईट सी.डी. विडियो क्लिप्स एवं साहित्य )

# सप्तम अध्याय

## सांस्कृतिक धरोहर का प्रचार–प्रसार एवं संरक्षण

आज हम संगीत के व्यापक प्रचार–प्रसार के युग में जी रहे हैं संगीत अपनी उन्नति की ओर बढ़ रहा है जिस प्रकार प्राचीन समय से अनेक प्रचारकों एवं अन्वेषकों द्वारा संगीत का विस्तृत प्रचार–प्रसार हुआ है उनका उद्देश्य केवल गायक बनाने का ही नहीं रहा बल्कि संगीत शिक्षक भी तैयार करना रहा है जिससे संगीत के सामान्य ज्ञान में वृद्धि हो सके। शिक्षित वर्ग के लोग संगीत की शिक्षा पाकर दूसरों को भी संगीत सीखने के उचित अवसर प्रदान करते हैं और इस प्रकार संगीत के प्रति जन–मानस में रुचि बढ़ती जा रही है। संगीत के इस नए आंदोलन में सबसे पहले शिक्षित समाज ही आकर्षित होता है। प्रचार–प्रसार की यह प्रेरणा शिष्य को अपने गुरु से ही प्राप्त होती है। जैसे–जैसे लोगों में संगीत की रुचि बढ़ेगी वैसे–वैसे ही उनमें संगीत का ज्ञान भी बढ़ेगा। इस ज्ञान को एक शिक्षक के रूप में अपनाते हुए इसका जब वे अपने विद्यार्थियों के साथ समन्वय करते हैं, तो भारतीय संगीत के प्रचार का यह एक सशक्त माध्यम बनता है और संगीत का व्यापक प्रचार–प्रसार होता है क्योंकि संगीत शिक्षा एवं शिक्षक इस संगीत प्रचार–प्रसार के लिए अत्यधिक आवश्यक है।

संगीत की इस नयी पद्धति में यह बात अवश्य है कि इससे पुरानी तालीम का विरोध हुआ है क्योंकि संगीत के व्यापक प्रचार–प्रसार में घर बैठकर सिखायी जाने वाली गुरु–शिष्य परंपरा उतना काम नहीं कर सकती थी जितना कि संगीत को एक विषय के रूप में अपनाकर हमारी शिक्षा पद्धति। हमारी शिक्षा पद्धति के अंतर्गत पाठ्य–क्रम को शामिल करके आम जन के लिए इस संगीत शिक्षा के रास्ते खोल दिए जाने से यह लोगों के लिए सहज उपलब्ध होने लगी और अधिक से अधिक लोग इस कला से जुड़कर इसे जीवन में अपनाने लगे।

पंडित दीनानाथ मिश्र ने इस प्रक्रिया में पूर्ण योगदान देते हुए इसके प्रचार–प्रसार के लिए सक्रीय भूमिका निभायी है। आपका कहना है कि संगीत अब

धर में बंधकर रहने की वस्तु  नहीं रहा अपितु समाज में इसने एक अपना ऐसा मुकाम कायम कर लिया है कि इसकी पहुँच आम लोगों के लिए सरल हो गयी है। संगीत के उत्थान के क्षेत्र में यह कोई मामूली बात नहीं, इसका दीर्घकालीन प्रभाव ऐसा पड़ेगा जो आने वाले समय में भारतीय शास्त्रीय संगीत की दिशा एवं दशा को तय करने का माध्यम रहेगा क्योंकि संगीत अब कोई रहस्य नहीं है। सरल स्वर–लिपि पद्धति से यह आम जन के नज़दीक पहुँच चुका है। संगीत विषय से संबंधित अनेक पुस्तकें बाज़ार में उपलब्ध हैं। इस दृष्टि से संगीत शिक्षकों का यह उत्तरदायित्व बन जाता है कि इन संगीत की पुस्तकों के माध्यम से, पुस्तकों में दी गयी स्वर लिपियों एवं बंदिशों को आसानी से तैयार करके संगीत में छिपि उस आलौकिक गहराई का अपने विद्यार्थियों को आभास कराएँ।

पंडित जी की गायकी का जो सैद्धांतिक आधार है उसका अनुकरण करके उनके शिष्य श्री खगेश कीर्तनिया, दीपांजना बोस, सीज़ा रॉय, मंगल मिश्र, पंडित भोलानाथ मिश्र आदि इनकी गायकी का संरक्षण करने का पुनीत कार्य कर रहे हैं। आपने अपने ये जो खास शिष्य तैयार किए हैं, वे आपकी परंपरा को निरंतर आगे बढ़ाने का काम करेंगे। इन शिष्यों में अच्छे गायक तो तैयार होंगे ही साथ ही साथ अच्छे शिक्षक भी तैयार होंगे जो भावी पीढ़ी को आपसे प्राप्त ज्ञान से परिपूर्ण करेंगे। संगीत प्रचार–प्रसार का जो महान् कार्य आपने किया है और सफल गायक के रूप में जिस तरह नाम कमाया है तथा अपने गुरु की परंपरा को आगे बढ़ाकर उनका मान बढ़ाया है इसी कार्य को आगे बढ़ाते हुए ये शिष्य आपके द्वारा अर्जित इस ज्ञान को संरक्षित करके भावी पीढ़ी को सौंपने का कार्य करेंगे। यह प्रकिया निरंतर चल रही है एवं आशा करते हैं कि यह प्रकिया चलती रहेगी।

## विद्यार्थी

पंडित राखाल मिश्र एवं गुरु संगीताचार्य चिन्मय लाहिड़ी जी का शिष्यत्व प्राप्त होने के पश्चात् पंडित दीनानाथ मिश्र ने अपनी गायकी में जो सैद्धांतिक आधार स्थापित करे उन्हें अपने शिष्य परंपरा का निर्वाह करते हुए अपने शिष्यों को हस्तांतरित किए। एक गायक की हैसियत से आपने दूसरे गायक तैयार करने का कार्य इसी प्रकार किया जैसे एक चिराग से अनेक चिराग जलाए  जाते हैं । उन्होंने कभी भी अपने पास आए किसी भी

शिक्षार्थी को निराश नहीं किया। उसे अपनी योग्यता अनुसार ज्ञान अर्जन करने का समुचित अवसर दिया। जिन शिष्यों में संगीत के प्रति नैसर्गिक गुण, श्रद्धा,अटूट विश्वास, कठिन साधना, गुरु के प्रति समर्पित भाव आदि गुण थे वे शिष्य आगे बढ़ते गए और जिन शिष्यों में इन सभी गुणों का अभाव था वे समयानुसार स्वतः ही इस क्षेत्र से अलग होते गए। जो शिष्य आपकी परंपरा को बढ़ाकर संगीत के क्षेत्र में विशेष योगदान दे रहे हैं उनमें प्रमुख निम्न हैं–

**पंडित भोलानाथ मिश्र** – आपके शिष्यों में पंडित भोलानाथ मिश्र का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। पंडित भोलानाथ मिश्र ऑल इंडिया रेडियो दिल्ली के टॉप ग्रेड के कलाकार हैं। 'आपने देश–विदेश में अनेक संगीत कार्यक्रमों की प्रस्तुती दी है, जिनमें प्रमुख रूप से लंदन, आस्ट्रिया, जर्मनी, यूरोप आदि प्रमुख हैं। अभी हाल में ही आपने 2013 में अमरीका में अपने कार्यक्रमों की प्रस्तुती दी, जिनसे आपको संगीत के क्षेत्र में विशेष प्रसिद्धी मिली। आपने संगीत संबंधि परिचर्चाओं में भाग लेकर संगीत के प्रति अपने दृष्टिकोण एवं अपने विचारों से जन–मानस को परिचित कराया। आपको अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जिनमें संगीत शिरोमणि, माँ शारदा सम्मान (अजमेर), संगीत रत्न आदि प्रमुख हैं। कोलकाता में बाल्यकाल से अपने गुरु एवं बड़े भाई पंडित दीनानाथ मिश्र से संगीत शिक्षा ग्रहण करके वर्तमान में आप दिल्ली में रह रहे हैं तथा पंडित राजन साजन मिश्र के सानिध्य में अपनी इस कला में और निखार ला रहे हैं।'[1]

**खगेश कीर्तनिया –**'युवा एवं प्रतिभाशाली कलाकार श्रीमान खगेश कीर्तनिया संगीत के क्षेत्र में एक चिर परिचित नाम है। आप पंडित दीनानाथ मिश्र जी का निरंतर बीस वर्षो से शिष्यत्व प्राप्त कर रहे हैं। आप पंडित जी के प्रिय शिष्यों में से एक हैं। जब भी कभी देश–विदेश में पंडित जी अपने कार्यक्रमों की प्रस्तुती देने जाते हैं तब संगत गायक एवं हारमोनियम संगति के लिए आपको ही प्राथमिकता देते हैं।'[2]

---

1. पंडित भोला नाथ मिश्र से चर्चा , दिनांक: 15/03/2014, स्थान– दिल्ली
2. खगेश कीर्तनिया जी से चर्चा,दिनांक: 17/06/2014,स्थान–कोलकाता(पं.जी के निवास स्थान पर)

**केशव दास –**'पंडित जी के शिष्यों में श्री केशव दास का नाम भी प्रमुखता से लिया जाता है। आप गत 35 वर्षो से संगीत की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आप संगीत के प्रति इतने समर्पित हैं कि आपने भारतीय शास्त्रीय संगीत के संरक्षण एवं प्रचार–प्रसार की दृष्टि से संगीत शिक्षण केन्द्र की स्थापना करके उसका सफल संचालन कर रहे हैं जिसमें नियमित रूप से विद्यार्थी जुड़कर संगीत कला सीखने का लाभ उठा रहे हैं।'[1]

**मंगल मिश्र –** 'पंडित दीनानाथ मिश्र के पुत्र एवं शिष्य श्री मंगल मिश्र ने संगीत के क्षेत्र में अपना एक अलग मुकाम हासिल किया है। गत आठ–दस वर्षो से आप मुम्बई में रहकर पंडित जी से प्राप्त ज्ञान के आधार पर इस क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे हैं। आपने पंडित जी के साथ देश–विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया तथा पंडित जी के सह गायक के रूप में संगत की। दूरदर्शन के ज़ी टी.वी चेनल से प्रसारित ''सा रे ग म प'' कार्यक्रम में भाग लेकर आप अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए 1999 में उपविजेता रहे। वर्तमान में आप **ITA, Indian Television Academy** की संगीत विभाग में कार्यरत हैं। इस विभाग के अतिथि कलाकारों के रूप में प्रसिद्ध कलाकार रूप कुमार राठौर, अल्का याग्निक, अनूप जलोटा आदि भी आपके साथ हैं। दूरदर्शन के विभिन्न चैनल्स से प्रसारित होने वाले विभिन्न धारावाहिकों व विज्ञापनों में आपने पार्श्व गायन भी किया है।'[2]

**सीज़ा रॉय –** ' पंडित दीनानाथ मिश्र की शिष्या सीज़ा रॉय ने गायकी के क्षेत्र में अपना काफी नाम कमाया है। आपने सुप्रसिद्ध गायक जगजीत सिंह के साथ एल्बम में गाकर अपनी ग़ज़ल गायकी का परिचय दिया है। सीज़ा रॉय ग़ज़ल के साथ–साथ भजन, ठुमरी एवं ख़्याल गायकी में भी अपनी पूरी पकड़ रखती हैं। आपकी गायकी की यह विशेषता है कि आलाप तथा तानों में आप पूर्णतया पंडित जी की हूबहू नकल करतीं हैं। आप ऑल इंडिया दिल्ली रेडियो स्टेशन की टॉप ग्रेड की कलाकारा हैं।'[3]

---

1. खगेश कीर्तनिया जी से चर्चा ,दिनांक: 17/06/2014,स्थान– कोलकाता (पं. जी के निवास स्थान पर)
2.श्री मंगल मिश्र से चर्चा ,दिनांक: 22/12/2012, स्थान– मुम्बई
३. खगेश कीर्तनिया जी से चर्चा , दिनांक: 17/06/2014,स्थान– कोलकाता(पं. जी के निवास स्थान पर)

**बाबुल सुप्रियो–**'सुप्रसिद्ध पार्श्व गायक बाबुल सुप्रियो को भी पंडित दीनानाथ मिश्र का शिष्यत्व प्राप्त हुआ। बाबुल सुप्रियो एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं जहाँ उन्होंने गायन के क्षेत्र में अपना नाम कमाया उसी प्रकार अभिनय तथा राजनीति के क्षेत्र में भी अपनी एक अलग पहचान बनाई। आपने मुख्य रूप से उड़िया फिल्म संगीत तथा बंगाली फिल्म संगीत के पार्श्व गायन में अपना विशेष योगदान दिया। आपकी यह प्रतिभा बाल्यकाल से ही प्रदर्शित होने लगी थी। आपने अपने कॉलेज के समय में इंटर कॉलेज की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेकर लगभग 45 संगीत की प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। बाल्यकाल से ही दूरदर्शन एवं आकाशवाणी से बाल कलाकार के रूप में विभिन्न संगीत के कार्यक्रमों की प्रस्तुती दी। आपके द्वारा निकाला गया अल्का याग्निक के साथ गैर फिल्मी एल्बम ''खोया–खोया चाँद'' की श्रोताओं ने सराहना की साथ ही सोलो एल्बम ''सोचता हूँ''की भी प्रशंसा हुई। आपने रविन्द्र नाथ ठाकुर के गीतों पर आधारित रविन्द्र संगीत के नाम से 2001 में तीन एल्बम निकाले। आपने बहुचर्चित बंगाली टी.वी शो सा रे गा मा पा लिटिल चैम्प में निर्णायक की भूमिका में भी कार्य किया। '[1]

**मधुश्री–**'पंडित जी के योग्य शिष्यों में सुप्रसिद्ध गायिका मधुश्री का नाम शीर्ष शिष्यों में आता है। आपने जावेद अख़्तर के प्रस्ताव पर राजेश रोशन की फिल्म 'मोक्ष' से अपने पार्श्व गायन के क्षेत्र में पहला कदम रखा। आपने मुख्य रूप से जिन फिल्मों में अपने गायन की प्रतिभा से नाम कमाया वे हैं– युवा, कल हो न हो , कुछ ना कहो , साथिया, तहज़ीब, स्वदेश, लकीर, जोधा अकबर, ऐतबार, पहेली, हमदम, रंग दे बसंती,ब्लू,रोबोट,एक दीवाना था,कश्मकश, इब्न–ए–बतूता आदि। इनके अलावा आपने अनेक तमिल, तेलगू एवं कन्नड़ फिल्मों में भी सोलो, उदित नारायण, हरिहरन, शंकर महादेवन आदि अनेक कलाकारों के साथ ए.आर.रहमान, कार्तिक राजा, डॉक्टर इमाम, युवा शंकर राजा, श्रीकान्त देवा के निर्देशन में पार्श्व गायन किया। आपने 8 अगस्त 2008 में अपना पहला एल्बम प्रसारित किया जिसमें

---

1. **www. babul suprio.wekepedia.org/**

आपने अपने गले की बारीकियों का प्रयोग करते हुए कई ठुमरियाँ गाईं जैसे– लागी लगन, आए ना बालम, जब से श्याम सिधारे तथा बाबुल मोरा आदि रचनाओं को श्रोताओं द्वारा खूब सराहा गया। '[1]

**स्नेहलता मिश्रा–** 'पंडित जी की पुत्री एवं शिष्या श्रीमती स्नेहलता मिश्रा को बचपन से परिवार में संगीत का वातावरण मिला एवं पंडित जी से संगीत की शिक्षा प्राप्त हुई। यही संस्कार तथा संगीत का वातावरण उन्हें सौभाग्य से ससुराल में भी प्राप्त हुआ। आप प्रसिद्ध तबला वादक पंडित जद्दू महाराज की पौत्र वधु हैं। आपके ससुर पंडित जगदीश कुमार मिश्रा (लल्लू महाराज) प्रसिद्ध तबला वादक थे तथा आपके पति श्रीमान जय शंकर मिश्रा भी जाने माने तबला वादक हैं। स्नेहलता मिश्रा ने टेलीफिल्म– नया पता में प्रसिद्ध गायक उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ साहब की गायी ठुमरी ''याद पिया की आए'' भी गायी है। वर्तमान में आप दिल्ली में बसी हुई हैं। समय–समय पर आप अपने पिताजी से तथा गिरिजा देवी से ठुमरी गायन की तालीम लेती रहती हैं। '[2]

**पोम्पा बनर्जी–** 'पंडित जी के शिष्यों में पोम्पा बनर्जी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। आप ख़्याल एवं ठुमरी गायिका हैं। श्रोताओं का मानना है कि तान, आलाप, सरगम आदि के गायन में आप पंडित जी की हूबहू नकल करती हैं तथा गुरु की गायकी का प्रभाव इनकी गायकी में स्पष्ट झलकता है। आप दिल्ली आकाशवाणी केन्द्र से शास्त्रीय गायन के कार्यक्रम समय–समय पर प्रस्तुत करती रहती हैं। पूर्व में आपने दुर्गापुर में रहते हुए पंडित जी से शिक्षा गृहण की तथा वर्तमान में दिल्ली में रहते हुए पंडित भोलानाथ मिश्र से शिक्षा गृहण कर रहीं हैं। '[3]

**इन्द्रानी रॉय–**'पंडित जी के शिष्यों में एक जाना माना नाम इन्द्रानी रॉय का भी है। वर्तमान में आप बाकुरा (कोलकाता) में कुशल गृहिणी के रूप में अपना जीवन व्यतीत कर रहीं हैं। आप शास्त्रीय व उपशास्त्रीय गायन में निपुण हैं तथा नियमित रूप से आकाशवाणी केन्द्र कोलकाता से शास्त्रीय गायन के कार्यक्रमों में सेवाएँ दे

---

1. www. madhu shree.wekepedia.org/

२. स्नेहलता मिश्रा से चर्चा(प्रत्यक्ष) , दिनांकः 17/06/2014 ,स्थान– कोलकाता(पं. जी के निवास स्थान पर)

३. पंडित जी से चर्चा , दिनांकः 18/06/2014 ,स्थान– कोलकाता(पं. जी के निवास स्थान पर)

रहीं हैं। आपके गायन में पंडित जी के गायन की झलक पूर्णतया देखने को मिलती है। आपने ख़्याल गायन एवं ठुमरी गायन के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेते हुए काफी लोकप्रियता अर्जित की। '[1]

**दीपांजना बोस–** 'पंडित जी के शिष्यों में दीपांजना बोस का नाम भी प्रमुख है। आपने पंडित जी का शिष्यत्व स्वीकार करते हुए उनकी गायकी को अपने अंदर हूबहू उतारने का प्रयास किया जिसके फलस्वरूप आपकी गायकी का आलाप जितना प्रभावशाली है उतनी ही स्वराकृतियों के सृजन में भी आप निपुण हैं। आप नियमित रूप से आकाशवाणी केन्द्र कोलकाता से अपने शास्त्रीय गायन की प्रस्तुती देती रहतीं हैं एवं पंडित जी के द्वारा सिखाए गए विभिन्न प्रयोगों का मिश्रित प्रयोग करते हुए अपने गायन को परिपक्व व सौंदर्यबोध कराती हैं। आपने कोलकाता में ही रहते हुए सुप्रसिद्ध गायिका श्रीमती गिरिजा देवी से ठुमरी गायन की शिक्षा भी प्राप्त की। '[2]

## कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ

पंडित दीनानाथ मिश्र का यह सौभाग्य रहा कि उन्हें बाल्यकाल से ही परिवार में संगीत का वातावरण मिला तथा पिता जी पंडित राखाल मिश्र द्वारा आपकी प्रतिभा को पहचानकर आपमें ऐसे संस्कार अंकित करने का

प्रयास किया गया जिनसे आपका जीवन संगीत के प्रति समर्पित हो गया माता–पिता जी एवं गुरु चिन्मय लाहिड़ी द्वारा दी गयी संगीत शिक्षा के पश्चात् उन्हीं की गायकी को आगे बढ़ाते हुए आपने विभिन्न संगीत कार्यक्रमों में अपनी स्वर लहरियों को बिखेर कर सुगंधित किया। विशिष्ट गायकी के कारण इन कार्यक्रमों के माध्यम से आपकी लोकप्रियता बढ़ती गयी। बाल्यकाल से यह सिलसिला निरंतर जारी है। पंडित जी ने आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केन्द्रों पर तथा अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनों में अपनी गायकी से श्रोताओं को

---

१. पंडित जी से चर्चा , दिनांकः 18/06/2014,स्थान– कोलकाता(पं. जी के निवास स्थान पर)
२. पंडित जी से चर्चा , दिनांकः 18/06/2014,स्थान– कोलकाता(पं. जी के निवास स्थान पर)

अनेक बार मंत्र–मुग्ध किया। विदेशों में भी आपने अनेक कार्यक्रमों की प्रस्तुती दी जिनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की गई व इसके लिए आपको पर्याप्त सम्मान भी मिला तथा आपका सुप्रसिद्ध ख्याति प्राप्त संगीतज्ञों के साथ समागम भी हुआ।

'पंडित दीनानाथ मिश्र ने 1960 में सत्रह वर्ष की अल्प आयु में आकाशवाणी केन्द्र कोलकाता से अपने गायन की शुरुआत की। 1966 में वे बी हाई ग्रेड के कलाकार बन गए जो कि उस समय का यह एकमात्र उदाहरण था। 'बी' से 'ए' ग्रेड के कलाकार बनने में आपको कोई ऑडिशन नहीं देना पड़ा। एकबार 1984 में आकाशवाणी केन्द्र कोलकाता से जब आपका गायन प्रसारित हुआ तो उसे दिल्ली में कुछ दिग्गजों ने सुना व सुनते ही आपको टॉप ग्रेड देने का फैसला किया परंतु कम आयु होने की वजह से 'ए' ग्रेड ही दिया गया। यह सिलसिला निरंतर जारी रहा व पंडित जी जल्दी ही 'ए' ग्रेड से 'टॉप' ग्रेड के कलाकार बन गए। इसी प्रकार पंडित जी एक बार आकाशवाणी से राग देसी तोड़ी गा रहे थे, आपका गायन उस्ताद निसार हुसैन खाँ साहब ने सुना व पंडित जी को अपने घर बुलाया और कहा बेटा तुम्हारी आवाज़ बहुत अच्छी है व बहुत अच्छा गा रहे हो इसी तरह गाते रहो व मेहनत करो बहुत नाम कमाओगे। दूरदर्शन पर भी पंडित जी के अनेक कार्यक्रम प्रसारित हुए हैं– संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम जो दिल्ली दूरदर्शन से प्रसारित होता है उस पर पंडित जी अनेक बार अपनी भावपूर्ण प्रस्तुती दे चुके हैं। '[1]

पंडित दीनानाथ मिश्र ने विभिन्न संगीत सम्मेलनों में अपने अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए और श्रोताओं का मन मोह लिया। उनके प्रमुख संगीत सम्मेलनों के कार्यक्रमों को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं–

## (अ) पश्चिम बंगाल में आयोजित संगीत सम्मेलन–

अखिल भारतीय तानसेन संगीत समारोह, सदारंग संगीत सम्मेलन, पश्चिमी बंगाल राज्य संगीत अकादमी, रागिनी संगीत सम्मेलन,साल्ट लेक संगीत उत्सव, संगीत पियाशी संगीत सम्मेलन, नाद ब्रह्म संगीत सेवा आश्रम द्वारा आयोजित कंठ संगीत की जुगल बंदी में उस्ताद अहमद अली हुसैन के साथ गायन प्रस्तुतियाँ दीं।

---

१. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 10/05/2014,स्थान– कोलकाता(पं. जी के निवास स्थान पर)

## (ब) भारत के अन्य प्रदेशों में आयोजित संगीत सम्मेलन :–

सुर सिंगार सम्मेलन ( मुम्बई ),बांद्रा म्यूज़िक सर्कल ( मुम्बई ) , मल्हार म्यूज़िक सर्कल ( मुम्बई ), मल्हार के विभन्न राग ( पूना ), संकटमोचन संगीत समारोह (वाराणसी), संगीत गंगा समारोह (वाराणसी), एच.सी.एल.हेवीटेन सेंटर प्रोग्राम (दिल्ली), दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित संगीत कार्यक्रम, ठुमरी समारोह (नई दिल्ली), आई.सी.सी आर ठुमरी समारोह (नई दिल्ली), पंडित जद्दू महाराज संगीत समारोह (नई दिल्ली), शास्त्रीय संगीत सम्मेलन (नई दिल्ली), बाबा हरिवल्लभ संगीत समारोह (पंजाब), प्राचीन कलाकेन्द्र (चंडीगढ़) ,संगीत कला मंच (जालंधर) आदि। इसके अलावा आपने देहरादून एवं अजमेर में आयोजित अनेक संगीत समारोहों में अपनी प्रस्तुतियाँ देकर श्रोताओं को भाव विभोर किया।

'6 अप्रेल1995 हरिमोहन स्मृति के तीसरे वार्षिक अनुष्ठान का कार्यक्रम महाजाति सदन में सम्पन्न हुआ। यह अनुष्ठान रात भर चला इसमें संगीत की विभिन्न विधाओं के कार्यक्रम के साथ–साथ पंडित दीनानाथ मिश्र का गायन भी हुआ जिसमें पंडित जी ने राग बैरागी एवं बहार की प्रस्तुती देकर श्रोताओं को मंत्र–मुग्ध कर दिया। आपके पुत्र श्री मंगल मिश्र ने गायन में आपका साथ दिया।'[1]

'17 अक्तूबर 1997 दमदम के.के. अकादमी में दसवाँ वार्षिक उत्सव मनाया गया जिसमें पंडित दीनानाथ मिश्र एवं उनके शिष्यों के विभिन्न संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। पंडित जी ने सबसे पहले राग आभोगी में ख़्याल गाया तथा उसके बाद एक बंदिश प्रस्तुत की जिसके बोल थे – ''नयनवा तान–तान ताके मारे नटवर''।'[2]

' एड्स नियंत्रण के उद्देश्य से सृजित मानवता की सेवा में प्रगति के मार्ग पर प्रशस्त राजस्थान की गैर सरकारी स्वयं सेवी संस्था ''लक्ष्य'' के द्वारा एड्स नियंत्रण तथा इस संदर्भ में जागरुकता जगाने हेतु 12 फरवरी 1997 को एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन शिवली नेशनल इंटर कॉलेज आज़मगढ़ के प्रांगण में किया गया। बसंत पंचमी के इस शुभ अवसर पर सांस्कृतिक मूल्यों के धरोहर

---

1.समाचार पत्र: आनन्द बाज़ार, दिनांक: 07/04/1995
2. वही

संगीत तथा साज़ के विशारद अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार एवं संगीत के मर्मज्ञ पंडित दीनानाथ , पंडित भोलानाथ व पंडित कालीनाथ मिश्र बंधुओं ने दर्शकों को अपनी कला से मुग्ध कर यह साबित कर दिया कि साज़ और आवाज़ के बल पर मानवीय सोच को बदला जा सकता है जिससे कि एड्स ही नहीं अपितु किसी भी प्रकार की सामाजिक या राष्ट्रीय चुनौतियों से एक जुट होकर निपटा जा सकता है। '[1]

'दिनांक 6 अप्रेल1998 को संकटमोचन संगीत समारोह के तीसरे दिन के कार्यक्रम में पंडित भोलानाथ मिश्र व पंडित दीनानाथ मिश्र का युगल गायन हुआ। आपने सर्वप्रथम राग पूरिया कल्याण की अवतारणा की व इसके पश्चात् राग केदार में एक बंदिश सुनाकर समापन किया। आपके साथ तबले पर श्री किशोर मिश्र व हारमोनियम पर डॉक्टर दिनकर शर्मा थे। इस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुनिता बुद्धिराजा कर रहीं थीं। '[2]

'संस्था रिद्म ने 20वें वार्षिक शास्त्रीय संगीत समारोह का आयोजन किया, जिसका उददेश्य भारतीय संस्कृति एवं शास्त्रीय संगीत को प्रोत्साहित करना है। इसी कड़ी में रिद्म संस्था ने कोलकाता में स्थित बिरला अकादमी सभागार में 11नवंबर 2001को एक रिद्मिक इवनिंग आयोजित की गई जिसमें पंडित दीनानाथ मिश्र ने शास्त्रीय गायन प्रस्तुत किया तथा दर्शकों कोमंत्र–मुग्ध कर दिया। '[3]

पंडित जी ने देश में ही नहीं विदेशों में भी भारतीय शास्त्रीय संगीत का गौरव बढ़ाया है। विदेशों में जहाँ भी उन्होंने अपने कार्यक्रम की प्रस्तुती दी श्रोताओं एवं दर्शकों से अत्यधिक प्रशंसा प्राप्त की।

'आप 2006 में आई.सी.सी.आर के तहत जर्मनी में अपने कार्यक्रम की प्रस्तुती के लिए गए। दर्शकों के समक्ष आपकी गंभीर मुद्रा की छवि ऐसी थी कि ज्यों ही आपने राग तोड़ी का आलाप शुरू किया पूरे सभागार में दर्शकों ने तालियों से आपका स्वागत किया। तोड़ी राग में आपने बड़ा ख़्याल उसके बाद छोटा ख़्याल तत्पश्चात् तराना प्रस्तुत किया। तराने के अंतर्गत आपकी लयकारी, विभिन्न तानों का प्रयोग आदि देखकर दर्शकों ने दाँतों तले अंगुली दबा ली। इस कार्यक्रम के पश्चात् पंडित जी अपने

---

1 पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) दिनांकः 12/05/2014, स्थान–कोलकाता (पं. जी के निवास स्थान पर ) समय– सांय 6 बजे

2. समाचार पत्र– दैनिक जागरण, वाराणसी, (इलाहाबाद) दिनांक 18/04/1998

3. समाचार पत्र– मेट्रो, दिनांक 10/11/2001

सभी संगीत कलाकारों के साथ लंदन के लिए रवाना हुए। भारतीय मूल के लंदन निवासी सुप्रसिद्ध तबला वादक श्री शारदा सहाय, अपने पूर्वजों की स्मृति में सालाना संगीत का कार्यक्रम रखते हैं, इस श्रृंखला में 2006 में आयोजित इस संगीत समारोह में पंडित दीनानाथ मिश्र ने अपना संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में आपके साथ आपके छोटे भाई पंडित भोलानाथ मिश्र ने भी शिरकत की। कार्यक्रम का प्रारंभ पंडित जी ने राग नटभैरव से किया जिसमें उन्होंने बड़ा ख़्याल तत्पश्चात् छोटा ख़्याल प्रस्तुत किया। इसी कार्यक्रम के अंर्तगत पंडित जी के भाई पंडित भोलानाथ मिश्र ने राग पूरिया धनाश्री प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में दोनों भाइयों ने राग मालकौंस में बड़ा ख़्याल, छोटा ख़्याल व तराना प्रस्तुत किया। आपकी गायकी इतनी प्रभावशाली थी कि कार्यक्रम के पश्चात् पंडित शारदा सहाय (तबला वादक) जो कि आपको रूबरू बैठकर सुन रहे थे, अनेक बार आपकी तारीफ की। सभागार में उपस्थित दर्शकों में कार्यक्रम के पश्चात् मिलने की, आपके विचारों को जानने की होड़ सी लगी हुई थी। विदेशों में प्रस्तुत कार्यक्रमों में पंडित जी की स्मृति में छाए कार्यक्रमों में यह एक प्रमुख यादगार कार्यक्रम था।'[1]

' पंडित दीनानाथ मिश्र ने देश में ही नहीं विदेशों भी संगीत प्रेमियों के समक्ष अपनी गायकी से अपने व्यक्तित्व की विशेष छाप छोड़ी है। इसी श्रृंखला में 9 अगस्त 2008 शुक्रवार को ओमान, मस्कट में इंडियन एम्बेसी द्वारा दो दिवसीय शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम के दूसरे दिन पंडित दीनानाथ मिश्र ने उपस्थित श्रोताओं को अपनी गायकी से तृप्त किया तथा अपने जीवन के बनारस घराने से संबंधित गायकी के 50 वर्षों के अनुभव को बाँटते हुए इस घराने की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम के अंतर्गत पंडित जी के साथ तबले पर पंडित कालीनाथ मिश्र एवं हारमोनियम पर खगेश कीर्तनिया ने संगत की। पंडित जी के बेटे श्री मंगल मिश्र ने सुगम संगीत के द्वारा उपस्थित श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया।'[2]

'गत18 वर्षों से मुम्बई में आयोजित मेघ मल्हार उत्सव में 23 जून 2008 को भारतीय शास्त्रीय संगीत के गायक पंडित दीनानाथ मिश्र ने अपने गायन की प्रस्तुती दी और श्रोताओं को भाव–विभोर किया। वर्षा ऋतु पर आधारित रागों में राग मेघ मल्हार तथा मल्हार पर आधारित रागों के बारे में समझाते हुए उन्होंने कहा कि

**1. पंडित भोला नाथ मिश्र से चर्चा , दिनांकः 15/03/2014, स्थान– दिल्ली, समय– रात्री 9 बजे**
**2.समाचार पत्रः ओमान ट्रिब्यून, दिनांकः 09/08/2008**

इन वर्षा ऋतु की रागों को गाते समय गायक को अपनी गायकी व गले में विशेष प्रकार की हरकत करके प्रस्तुत करना होता है जिससे श्रोताओं को इस ऋतु का आभास हो सके। इस कार्यक्रम में मेघ मल्हार को समय अभाव के कारण 20 से 25 मिनट ही गा पाए जबकि राग का पूरा स्वरूप प्रस्तुत करने के लिए वे लगभग 45 मिनट का समय लेते हैं। राग मेघ मल्हार के पश्चात् आपने सूरदासी मल्हार की प्रस्तुती दी तत्पश्चात् दादरा गायन से अपने कार्यक्रम की समाप्ति की। किसी श्रोता के यह पूछने पर कि आपके गायन से वर्षा नहीं आई तो क्या आप अपना राग बदल देगें? इसके जवाब में पंडित जी ने मुस्कुराते हुए कहा कि यह आवश्यक नहीं कि किसी भी मल्हार राग से वर्षा हो ही परंतु यह स्पष्ट है कि इन रागों के वातावरण का मनुष्य के मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है तथा वह अपने अंतरमन में वर्षा ऋतु को महसूस करता है।'[1]

'संस्था तान चक्र के 10वें वार्षिक शास्त्रीय महोत्सव में पंडित दीनानाथ मिश्र के शिष्य–संचारी चौधरी, दीपांजना बोस, सीज़ाराय ने अपना गायन प्रस्तुत कर कार्यक्रम में शमा बाँधा। कार्यक्रम के अंत में पंडित दीनानाथ मिश्र ने राग आभोगी तत्पश्चात् राग केदार में ख़्याल गायकी की बारीकियों व विभिन्न तानों को विस्तार से प्रस्तुत किया एवं अपने गायन के अंत में ठुमरी व दादरा की प्रस्तुती दी। आपके साथ इस कार्यक्रम के दौरान श्री मंगल मिश्र ने आपका साथ दिया, तबले पर संगत श्री सुधेंधु कर्माकर ने की तथा हारमोनियम पर श्री श्यामल चंदा ने संगति की।'[2]

'इनके अतिरिक्त ''संस्कार कार्यक्रम'' में पंडित दीनानाथ मिश्र के साथ उनके भाई पंडित भोलानाथ मिश्र ने कई रागों में ख़्याल के साथ–साथ ठुमरी और भजन गायन की प्रस्तुती दी। आपके 60वें जन्मदिवस पर एच.सी.एल कंसर्ट सीरीज़ के तहत आयोजित कार्यक्रम में पंडित जी के पुत्र श्री मंगल मिश्र व पुत्री श्रीमती स्नेहलता मिश्रा ने कार्यक्रम की बागडोर संभाली । तबले पर श्री जयशंकर मिश्र व सारंगी पर पंडित भारत भूषण गोस्वामी जी ने साथ दिया। पंडित जी की खनकती आवाज़ और रागों पर पक्की पकड़ ने इस कार्यक्रम को यादगार बना दिया।'[3]

'इसके अतिरिक्त आई.सी.सी.आर के आयोजन ''ठुमरी उत्सव'' के तीसरे व अंतिम दिन ठुमरी, दादरा और कजरी की धूम रही। उस शाम दिल्ली का कमानी सभागार ठुमरी गायन की महफिल बना हुआ था। कार्यक्रम के आरंभ में शुरू हुआ वाह–वाह का सिलसिला अंत तक जारी रहा। दिवंगत ग़ज़ल गायिका बेगम अख़्तर

1.समाचार पत्र: मुम्बई मिरर, दिनांक: 24/06/2008
2.समाचार पत्र: ईर्स्टन एज़, कोलकाता , दिनांक: 19/08/1997
3.साप्ताहिक समाचार पत्र: आऊट लुक , दिनांक: 25/10/2004

और निर्मला अरुण को याद करते हुए अपनी प्रस्तुती लेकर कोलकाता से आए पंडित दीनानाथ मिश्र ने राग देस से सजी बंदिश ''कोयलिया कुहुक सुनाए'' व ठुमरी ''कंकर मोहि लग जइहैं ना हो'', बनारस का दादरा व ''आई सावन की बहार'' जैसी कजरी गुनगुनाकर उन्होंने मानो आनंद का रस बरसा दिया। अंत में ''बाबुल मोरा नैहर छुटो जाए'' भैरवी ठुमरी से गायन का समापन करते हुए पंडित दीनानाथ मिश्र ने ठुमरी उत्सव की शाम को यादगार बना दिया। पंडित दीनानाथ मिश्र की आवाज़ के साथ तबले पर थाप दे रहे थे श्री जयशंकर प्रसाद, सारंगी पर संगत कर रहे थे पंडित भारत भूषण गोस्वामी जी और हारमोनियम पर श्री सारनाथ मिश्र ने शिरकत की। '[1]

' विदेशों में कार्यक्रम के अंर्तगत पंडित दीनानाथ मिश्र 2008 में आई.सी.सी. आर के तहत गल्फ में बेहरीन गए। आपके साथ अन्य साथी कलाकारों में तबले पर पंडित कालीनाथ मिश्र, हारमोनियम पर खगेश कीर्तनिया व पंडित जी के पुत्र श्री मंगल मिश्रा ने संगत की। इस कार्यक्रम के तहत पंडित जी ने राग यमन में बड़ा ख़्याल, छोटा ख़्याल व तराने की प्रस्तुती दी, तो सभागार तालियों से गूँज उठा। अंत में श्रोताओं की खास फरमाइश पर पंडित जी ने बनारस की ठुमरी प्रस्तुत की, जिसे लोगों ने खूब पसंद किया। '[2]

'बेहरीन से पंडित जी मस्कट पहुँचे, यहाँ भी संगीत रसिकों द्वारा आपको भरपूर सम्मान मिला। यहाँ आपने आई.सी.सी.आर के तहत दिए गए संगीत कार्यक्रम में सुबह राग तोड़ी प्रस्तुत की उसके पश्चात् संधि प्रकाश राग पूरिया धनाश्री प्रस्तुत की। आपने दोनों ही रागों में अपनी ख़्याल गायकी का परिचय देते हुए गायकी के विभिन्न अंगों द्वारा इन्हें प्रस्तुत किया व बनारस एवं पटियाला घराने की विशेषताओं का परिचय देकर ख्याति प्राप्त की। आपने अपने संगीत कार्यक्रम के माध्यम से संगीत के प्रचार एवं प्रसार का महान कार्य किया। गल्फ में प्रस्तुत कार्यक्रमों के बारे में पंडित जी बताते हैं कि वहाँ के श्रोता बड़े ही गुणीं थे क्योंकि ये श्रोता संगीत के

---

1. साप्ताहिक समाचार पत्र: दैनिक जागरण ,नई दिल्ली, दिनांक: 12/07/2005
2. पंडित काली नाथ मिश्र से चर्चा , दिनांक: 21/04/2014, स्थान– मुम्बई, समय– रात्री 8 बजे

कुशल जानकार एवं पारखी थे, स्वरों की मधुरता एवं मिठास को उन्होंने अपनी आत्मा तक महसूस किया। उनसे जो तालियों द्वारा दाद मिली उनमें बनावटीपन, अस्वाभाविक या असंगत की मिलावट नहीं होती थी बल्कि गायकी की बारीकी के अनुसार गंभीरता, भावुकता एवं तर्क संगत होती थी।'[1]

इस प्रकार पंडित दीनानाथ मिश्र ने विभिन्न देशों में जाकर भारतीय शास्त्रीय संगीत व बनारस घराने की गायकी एवं भारतीय संगीत को व्यापक पहचान दिलाने का जो कार्य किया तथा अपने दर्शन, ध्यान, साधना, कला, ज्ञान, गूढ़ विद्या आदि को देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी फैलाकर अनेकों पुरस्कार प्राप्त किए। इस कार्य में पंडित जी ने अपने अनेक शिष्यों तथा अपने भाइयों पंडित भोलानाथ मिश्र व पंडित कालीनाथ मिश्र तथा पुत्र श्री मंगल मिश्र एवं पुत्री श्रीमती स्नेहलता मिश्रा आदि का सहयोग लिया।

पंडित जी के इस कार्य से हिन्दुस्तानी संगीत को विदेशों में जो सम्मान प्राप्त हुआ वह शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत और कलाकारों के लिए एक मिसाल के रूप में बन गया है। इससे हमारी जो सांस्कृतिक धरोहर है उसे भारत में ही नहीं वरन् विदेशों में भी संरक्षण प्राप्त हो रहा है।

'इनके अतिरिक्त ''बांद्रा म्यूज़िक चक्र (मुम्बई)'', ''मल्हार फेस्टिवल (नेहरू सेंटर मुम्बई)'', ''मल्हार की विभिन्न रागें (पूना)'', ''संकट मोचन संगीत समारोह (वाराणसी)'', ''संगीत गंगा समारोह (वराणसी)'', ''ठुमरी फेस्टिवल (नई दिल्ली)'', आई.सी.सी.आर द्वारा आयोजित ''ठुमरी महोत्सव (नई दिल्ली)'', ''पंडित जद्दू महाराज संगीत समारोह (नई दिल्ली)'', '' क्लाकिल म्यूज़िक कॉनफ्रेंस (नई दिल्ली)'', ''बाबा हरिवल्लभ संगीत समारोह (पंजाब)'', ''प्राचीन कला केन्द्र (चंडीगढ़)'', '' संगीत कला मंच (जालधंर)'' आदि अनेक स्थानों पर पंडित जी ने अपने कार्यक्रमों के माध्यम से दर्शकों का मन जीता तथा अनेक सम्मान प्राप्त किए।'[2]

---

1. पंडित काली नाथ मिश्र से चर्चा , दिनांक: 21/04/2014, स्थान– मुम्बई, समय– रात्री 8 बजे
2. पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) , दिनांक: 12/05/2014, स्थान– कोलकाता (पं. जी के निवास स्थान पर) समय– सांय 6 बजे

**अन्य (स्वयं की वेबसाइट, सीडी, विडियो क्लिप्स एवं साहित्य) –**

पंडित दीनानाथ मिश्र ने भारतीय शास्त्रीय संगीत रूपी हमारी सांस्कृतिक धरोहर के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ इसके संरक्षण में भी अपना प्रभावी योगदान दिया। इसके लिए जहाँ आपने एक ओर अपनी गायन शैली से योग्य शिष्य तैयार किये हैं वहीं अपनी गाई रचनाओं की कई सी. डी भी बनवाई। ताकि अपने गायन का संरक्षण कर सकें तथा यह सामग्री भावी पीढ़ी के लिए लाभदायक हो सके।

**वेबसाइट–** वर्तमान में पंडित दीनानाथ मिश्र की निम्न प्रमुख दो वेबसाइट्स उपलब्ध हैं। आपकी दोनों वेबसाइटस् निम्न हैं–

1. **www. Pandit dinanath mishra. com / home.ht.**
2. **www. Pandit dinanath mishra. com / about .ht.**

**सी. डी–** पंडित दीनानाथ मिश्र के अपने गाये हुए कई रिकॉर्ड्स देश भर में विभिन्न स्थानों पर रिलीज़ हुए जिनसे कई विद्यार्थी एवं सभी कलाकार लाभान्वित हुए जिनका विवरण निम्न प्रकार से है–

# अष्टम अध्याय

## "शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोग"

1. मौलिक चिंतन एवं मान्यताएँ
2. गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोग

# अष्टम अध्याय

## शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोग :–

भारतीय शास्त्रीय संगीत में जहाँ घराने दार गायकी का विशेष महत्व है वहीं कुछ गुणीजन लोगों ने परंपरा से हटकर नवीन प्रयोगों के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत रूपी हमारी संपदा में वृद्धि की है। घरानों के अनुयायी सांस्कृतिक गायक गायकी का सभी अंगों में जहाँ अपने गुरु की तथा अपने घरानों की गायकी का मूल रूप निर्मित करते हैं वहीं गुरु द्वारा प्रदान की गयी स्वतंत्रता से अपनी योग्यता अनुसार नवीन प्रयोगों द्वारा इस वट वृक्ष की शाखाओं को और विशालतम् रूप देकर विकसित करने का प्रयास करते हैं साथ ही अपनी सृजन शक्ति से ऐसी रचनाओं का निर्माण करते हैं जो कि घराने दार गायकी में होते हुए भी अपनी एक विशिष्ट शैली बन कर श्रोताओं के समक्ष प्रभावशाली सिद्ध होती है। यह विकास का क्रम निरंतर रूप से चला आ रहा है। बनारस तथा पटियाला घराना भी इस परिर्वतन से अछूता न रह सका किन्तु यह भी कटु सत्य है कि इस संगीत पंरपरा का वंशानुगत रूप तथा गुरु–शिष्य पंरपरा की छत्र छाया यदि न हो तो नवीन प्रयोगों के माध्यम से इसका विकृत स्वरूप भी हमारे सामने आ सकता है परंतु यह भारतीय शास्त्रीय संगीत का सौभाग्य है कि गायन कला में प्रवीण होने के बाद जिन कलाकारों ने नवीन प्रयोग किए श्रोताओं द्वारा केवल उन्हें ही स्वीकार किया गया। अन्य ऐसे प्रयोग जो कि भारतीय शास्त्रीय संगीत के सिद्धांतों के अनुरुप खरे न उतरते हों श्रोताओं द्वारा वे सिरे से नकार दिये जाते हैं। इस प्रकार केवल वे ही नवीन प्रयोग संगीत जगत में स्थान प्राप्त कर पाते हैं जो सिद्धांतों के अनुरूप होने के साथ सुमधुर एवं प्रभावशाली भी हों।

## मौलिक चिंतन एवं मान्यताएँ :–

'पंडित दीनानाथ मिश्र के अनुसार संगीत एक नाद ब्रह्म है जिसमें मनुष्य अपनी साधना के माध्यम से ईश्वर से साक्षात्कार करता है, इसके बिना जीवन की मूल्यता का कोई महत्व नहीं है। जब भी आप अपने गायन का रियाज़ करते हैं या किसी

समारोह के अन्तर्गत अपनी प्रस्तुती देते हैं तब आप महसूस करते हैं कि संगीत में एक ऐसी शक्ति है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी हृदय स्पर्शी आवाज़ के माध्यम से ईश्वर के निकट पहुँच कर आत्म शांति का अनुभव करता है। पंडित जी का मानना है कि संगीत कला को दौलत से नहीं तोला जा सकता है लेकिन आज इस पर पश्चिमी सभ्यता का भूत सवार हो गया है, जिसने इसकी मूल संरचना को तोड़ने की कोशिश की है यह खतरनाक है, उन्होंने अफसोस जताते हुए कहा कि युवा पीढ़ी इस विधा में रुचि नहीं ले रही है, इसे बतौर पेशा अपनाने की प्रवृति का खामियाजा भारतीय शास्त्रीय संगीत को उठाना पड़ रहा है। उदयीमान कलाकारों का अकाल पड़ता जा रहा है। फिल्मों एवं एल्बमों के ग्लेमर से युवा पीढ़ी गुमराह हो रही है। एक सवाल के जवाब में पंडित जी ने कहा कि भुखमरी, बेरोज़गारी ने लोगो की कमर तोड़ दी है, हुनरमन्द हाथ जिन्हें विविध कलाओं में मर्मज्ञता बूझनी चाहिये, वे ज़िंदा रहने के लिए संघर्षरत हैं। जन सामान्य के साथ–साथ शासन प्रशासन को भी इन कलाओं के संरक्षण के लिए उचित परिवेश निर्मित करने में भागीदारी करनी चाहिए। केवल घोषणाओं से कुछ नहीं होने वाला। पंडित जी का कहना है कि आज़मगढ़ का हरिहरपुर गाँव संगीत की दुनिया में प्रख्यात रहा है लेकिन इस पर ध्यान देने वाला कोई नहीं है। उन्होंने अपनी इच्छा जताई कि हरिहरपुर गाँव में गुरुकुल परंपरा के आधार पर शास्त्रीय संगीत सिखाने का आश्रम बनाया जाना चहिए। पंडित जी से बातचीत के क्रम में राष्ट्रीय अखबारों को आड़े हाथ लेते हुए उन्होंने कहा क्षेत्रिय अखबार तो फिर भी कला संस्कृति के लिए थोड़ी बहुत जगह निकाल लेते हैं लेकिन राष्ट्रीय अखबार तो इस दिशा में जैसे अपने सारे दायित्वों को भूल ही गए हैं। हर तरफ व्यावसायिक भावनाओं का बाज़ार गर्म है, हर व्यक्ति कला के नाम पर कुछ न कुछ बेचने में लगा है। यह सोचने का किसी के पास समय नहीं है कि हर चीज़ नहीं बिकती है जैसे कला बिकाऊ नहीं होती है किन्तु इसका अभिप्राय हम यह नहीं लगा सकते कि पंडित जी संगीत के भविष्य को लेकर पूर्णतया निराशावादी हैं।'[1] ' गत40वर्षो से जिस तरह वे अपने शिष्यों को संगीत शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। उसे देख कर उनका मानना है कि शास्त्रीय संगीत की जड़ें इतनी गहरी हैं कि वे इन छोटे मोटे आक्रमणों से हिलने वाली नहीं हैं। वे कहते हैं कि संगीत के क्षेत्र में यह कठिन दौर अवश्य है किंतु आने वाली पीढ़ी अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए संगीत के प्रति पूर्ण समर्पित भाव से संगीत साधना में लीन रह कर

---

1 पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) दिनांक: 12/05/2014, स्थान–कोलकाता (पं. जी के निवास स्थान पर ) समय– सांय 6 बजे

इसके गौरवपूर्ण इतिहास को अपना संबल प्रदान करेंगी। पंडित जी की अपनी मान्यता है कि संगीत के विद्यार्थियों को यदि सही शिक्षा प्रदान की जाए तो हम समाज में अधिक से अधिक अच्छे कलाकारों का निर्माण कर सकते हैं वे सोचते हैं कि स्वर ज्ञान एवं रियाज़ के लिए आरोह अवरोह अभ्यास की पहली सीढ़ी है। लय के ज्ञान के साथ–साथ स्वर ज्ञान की तैयारी पर पंडित जी विशेष बल देते हैं क्योंकि उनका मानना है लय की प्रकृति के अनुसार गले की तैयारी अच्छी होती है अतः स्वराभ्यास के साथ–साथ लय की आदत प्रारंभ से ही शिक्षार्थियों को दी जानी चाहिए। पंडित जी का यह भी मानना है कि शिक्षार्थियों को विलंबित लय के माध्यम से स्वराभ्यास कराने से गले का अच्छा रियाज़ होता है तथा द्रुत लय में स्वराभ्यास से लय पर नियंत्रण आता है। जहाँ तक रागों का संबंध है इस बारे में पंडित जी का कहना है कि रागों का अभ्यास कराते समय गुरु को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रातः एवं सांयकालीन समय पर गायी जाने वाली रागों का अभ्यास उन्हीं के समयानुसार होना चाहिए। विद्यार्थियों की शुरू से ही आवाज़ की गुणवत्ता और स्वर लगाव के प्रति रुचि जागृत करनी चाहिए क्योंकि एक बार स्वर लगाने का ढंग बिगड़ जाने पर उसे पुनः संगीत के लिए उपयोगी बनाना कठिन होता है। उनका मत है गुरु के कंठ से उत्पन्न ध्वनि को सुनकर स्वरों के क्रम तथा स्वर लिपि को ग्रहण करना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि प्रत्येक स्वर के प्रस्तुतिकरण में जो सौंदर्य है उसे भी ग्रहण करें। '[1]

'उनका मानना है कि संगीत एक साधना है जब विद्यार्थी रियाज़ करता है तो उसे महसूस होता है कि मेरे ज्ञान में वृद्धि नहीं हो रही है परंतु वृद्धि होती अवश्य है क्योंकि जिस प्रकार कोई बालक अपनी उम्र के हिसाब से धीरे–धीरे बड़ा होता है लेकिन उसे लगता नहीं है कि मैं बड़ा हो रहा हूँ। आप कहते हैं कि शिष्यों को कुशल गुरु के निर्देशन में संगीत शिक्षा प्राप्त करके अपने रियाज़ को तीन चरणों में पूर्ण करना चाहिए। पहला स्वर, लय व ताल पर अपनी पूर्ण पकड़ बनाने का रियाज़ करना। दूसरे में गुरु की गायकी की नकल करना तथा तीसरे चरण में उस गायकी को आत्मसात करते हुए अपनी नई शैली तैयार करना। '[2]

'पंडित जी अपनी दिनचर्या में जब रियाज़ करते हैं तब समय का विशेष ध्यान रखते हैं। प्रायः प्रातः पाँच बजे उठकर आप अपने गायन का रियाज़ करते हैं, रियाज़ करते समय आप राजनीतिक व अन्य पारिवारिक बातें करना बिल्कुल पसंद नहीं करते हैं। यदि कोई व्यक्ति उनका रियाज़ सुनना चाहे तो इससे उन्हें कोई आपत्ति

**1 पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) दिनांकः 12/05/2014, स्थान–कोलकाता (पं. जी के निवास स्थान पर )**
**2. वही**

नहीं, बशर्ते उनके रियाज़ में कोई व्यवधान पैदा न हो। आप संगीत को पूजा अर्चना समझकर इसकी अराधना करते हैं। आपके स्वभाव में न तो घमंड है और न ही कठोरता किन्तु अपने शिष्यों को शिक्षा देते समय कभी–कभी थोड़ी सी कठोरता झलकती है। आप शिक्षा देते समय किसी बिंदु को स्पष्ट करने के लिए स्वयं गाकर समझाते हैं। पंडित दीनानाथ मिश्र का आध्यात्मिक जीवन एक साधारण जीवन के रूप में है। उन्हें ईश्वर भक्ति, ध्यान, साधना, योग एवं प्रायाणाम आदि से लगाव है। अपने जीवन में आप नियमित रूप से अपनी इन रुचियों का पूरा ख़्याल रखते हैं। आपका यह मानना है कि संगीत साधना के लिए मनुष्य की दिनचर्या में इन क्रिया कलापों का होना आवश्यक है। '[1]

'पंडित जी से बातचीत के दौरान यह भी जानकारी प्राप्त हुई कि जब भी आप किसी नवीन बंदिश की रचना करते हैं तब किसी खास प्रकार के माहौल की अपेक्षा नहीं करते। आपका कहना है कि नवीन रचना करते समय किसी अलग प्रकार के वातावरण की आवश्यकता नहीं होती, यह तो स्वाभाविक ही हो जाता है किसी भी राग को गुनगुनाते हुए पहले उसका स्थाई तैयार कर लेते हैं व उसी प्रकार अंतरे की भी रचना हो जाती है। कभी– कभी तो आप सफर के दौरान भी नवीन बंदिशों की रचना कर लेते हैं। '[2]

'पंडित जी अपने कार्यक्रम की प्रस्तुती के समय भी कोई विशेष प्रकार की तैयारी नहीं करते हैं। प्रस्तुती के पहले आप ग्रीन रूम में तबला संगतकार के साथ तबला मिलवाकर एक बार राग का स्वरूप गुनगुना लेते हैं तत्पश्चात् अपने कार्यक्रम की प्रस्तुती देते हैं। पंडित जी पान खाने का शौख रखते हैं परंतु कार्यक्रम के दौरान आप कभी पान का सेवन नहीं करते हैं। अपने कार्यक्रमों की सफल प्रस्तुती के बाद आप दर्शकों की प्रतिक्रिया को बड़े ध्यान पूर्वक सुनते हैं साथ ही अपने विचार भी प्रकट करते हैं। कई श्रोतागण पंडित जी से रूबरू मिलने की ईच्छा रखते हैं ,पंडित जी बड़ी तन्मयता से उनसे मिलते हैं व उनके द्वारा दी गई दाद को भी बड़े ही सहजता से स्वीकारते हैं। कभी कोई कार्यक्रम में प्रस्तुत की गई राग के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त करना चाहे तो पंडित जी उसे नकारते नहीं हैं, बल्कि उसके पूछे प्रश्नों का बड़ा ही सकारात्मक समाधान देते हैं। '[3]

---

**1 पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) दिनांक: 12/05/2014, स्थान–कोलकाता (पं. जी के निवास स्थान पर )**
**2. वही**
**3. वही**

## गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोग–

पंडित दीनानाथ मिश्र की गायकी में जहाँ एक तरफ अपने घराने एवं अपने गुरु की गायकी का समावेश है वहीं आपने अपनी गायकी के क्षेत्र में नवीन प्रयोग भी किए हैं, जिन्हें विभिन्न संगीत सम्मेलनों तथा कार्यक्रमों के अंतर्गत मर्मज्ञ विद्वानों द्वारा सम्मान के साथ स्वीकार किया गया। संगीत की वास्तविक शिक्षा का उद्देश्य ही यही है कि शिष्य अपने गुरु से सीखकर अपने नवीन प्रयोगों द्वारा अपनी प्रतिभा का परिचय देते हुए संगीत के विशाल क्षेत्र को और अधिक विस्तार रूप देने का कार्य करे इसके लिए संगीतकार को कड़े परिश्रम करके नवीन अविष्कार करने होते हैं। यही क्रम हिन्दुस्तानी संगीत में प्राचीन काल से निरंतर चला आ रहा है। इन्हीं नवीन प्रयोगों के माध्यम से नए–नए घरानों की उत्पति हुई। पंडित जी इस भारतीय शास्त्रीय संगीत की विरासत को और अधिक विस्तृत करने के उद्देश्य से अपनी नवीन रचनाओं के माध्यम से इस प्रगतिशील संगीत की कला को विकसित करने में अपना योगदान दे रहे हैं। आपकी प्रमुख कृतियों में राग भैरव, दुर्गा, चन्द्रकौंस, जोग, मिश्र खमाज, बैरागी भैरव, रामकली, पहाड़ी, सरस्वती आदि रागों का प्रयोग करते हुए अपनी योग्यता अनुसार आपने कई सफल प्रयोग किए हैं। पंडित जी ने स्वरचित बंदिशों में 'दीन पिया' उपनाम का प्रयोग किया है। उनकी स्वरचित बंदिशें इस प्रकार हैं:–

**'राग बैरागी भैरव**

छोटा ख़्याल–

स्थायी– चरनन की गति न्यारी मोरे प्रभु
तुम हो सब ही के दाता मोरे प्रभु

अंतरा– दीन पिया तुम चरन गहे धरो
वो हैं भाग्य विधाता

**राग रामकली**

छोटा ख़्याल–

स्थायी– धन–धन कुँवर कन्हईया नन्द राय घर जनम लियो
गोपिन संघ रास रचईया

अंतरा– बाँसुरी बजावत गौवें चरावत
दीन पिया को नाच नचईया

## राग भैरव

छोटा ख़्याल–

स्थायी– कब ले मिलो मोहे श्याम सुंदरवा
राह तकत मोरी थकी रे अंखियाँ

अंतरा– दरशन देदो मोरे मितवा
दीन पिया बिन बीते रतियाँ

## राग दुर्गा

छोटा ख़्याल–

स्थायी– नित उठ ध्यान धरो गुरुजन को
जीवन तेरा सफल होत मन

अंतरा– भव सागर तुम पार करो गुरु
दीन पिया की रखियो लाज

## राग चन्द्रकौंस

छोटा ख़्याल–

स्थायी– मोरे मन बस गए मेरो राम
पूर्ण करो मेरो सकल काम

अंतरा– निस दिन तुम से बिनती करत मैं तो
दीन पिया तेरो चरण है धाम

## राग जोग

छोटा ख़्याल–

स्थायी– सुर को ध्यान धरो रे मन
गाओ साधक स्वर ईश्वर को

अंतरा– सुन नर मुनि सब ध्यान धरत हैं
दीन पिया तुम चरण धरो

## राग सरस्वती

छोटा ख़्याल–

स्थायी– माँ सरस्वती वर दे मोहे
निस ध्यान धरूँ मैं तेरी

अंतरा– वीणा वादिनी सब जग जानत
जग को लुभावत रस बरसावत
दीन पिया सुन विनती मेरी

## राग मिश्र खमाज

ठुमरी–

स्थायी– आए नहीं घनश्याम
अटरिया पे बाँट निहारूँ

अंतरा– रैन दिन पलछिन तरसूँ तुम बिन
दीन पिया बिन सूनो मेरो धाम

**राग पहाड़ी**

ठुमरी–

स्थायी– जाओ–जाओ मोरे श्याम
नाहीं करूँ मैं तोसे बतियाँ

अंतरा– कर पकड़त बिनती करत
मग रोकत मारत अंखियाँ
जाए कहूँगी नन्द के घर
दीन पिया नाहीं मानत बतियाँ '[1]

पंडित दीनानाथ मिश्र ने अपनी रचनाओं में गायकी में रस होने पर विशेष ज़ोर दिया है। आपकी बंदिशों के अर्थ और काव्यात्मक पक्ष पर विचार करना गायकों के लिए आवश्यक है क्योंकि स्वर और लय के संयोग से जो ध्वन्यात्मक लालित्य निर्मित होता है वह बंदिश और बोल–आलाप मे अर्थ पूर्ण काव्य को एक व्यवस्थित रूप प्रदान करता है। आपने अपनी बंदिशों में स्वर को विशेष महत्व देने के कारण बड़े ख़्याल में अति विलंबित लय को अपनाया है ताकि जल्दी–जल्दी आने वाले ताल के आघात स्वर की स्थिरता को प्रभावित न करे। आपकी गायकी में स्वरों की बढ़त के कारण राग विस्तार पर इतनी अधिक केन्द्रित रहती है कि स्वर सर्वोपरि रहने के कारण ही लय के समान साहित्य पक्ष को भी कुछ हद तक समझौता स्वीकार करना पड़ता है। जैसा कि पूर्व में भी बताया जा चुका है कि आपकी गायकी स्वर प्रधान गायकी है क्योंकि स्वर ही आपकी गायकी में अभिव्यक्ति का माध्यम है। आपकी ऐसी ही बंदिशों के कुछ उदाहरण स्वरलिपियों के साथ यहां दर्शाये जा रहे हैं।

---

1 पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) दिनांक: 13/05/2014, स्थान–कोलकाता (पं. जी के निवास स्थान पर )

**राग– नट भैरव**

**विलंबित ख़्याल**

**आरोह–** सा रे ग म प ध नि सां

**अवरोह–** सां नि ध प म ग रे सा

**स्थायी**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सा ध | – म | गरे गम | रे– सा | साध निसा | सा रेग |
| अ पा | र | ते री | मा या | है | अ पार |
| ३ | ४ | X | 0 | २ | 0 |
| रेग म– | प प– | ग म | ध – | प मप | धनि धप |
| रा धा | सी | प्या | री | को | गा |
| ३ | ४ | X | 0 | २ | 0 |
| प ध | प ध | म | मप ग | म | रेनि धसा |
| कु व | री | से | जो ड़ा | था | प्या र |
| ३ | ४ | X | 0 | २ | 0 |

**अंतरा**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गम ध | ध निसां | नि सां | नि नि | सां निसां | धप गंमं |
| ते रे | ही | स ब | मा या | के पुत | ले ये |
| ३ | ४ | X | 0 | २ | 0 |
| रें सां | नि नि | सां सां | ध प | पध म | पगम रेधसां |
| ते रे | स ब | ज ग | के | नर | ना र |
| ३ | ४ | X | 0 | २ | 0 |

**राग– नट भैरव**

**छोटा ख़्याल– (त्रिताल)**

**<u>स्थायी</u>**

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | सा |
| | | | सु |
| रे ग म प | ध – प म | ग रे ग म | रे – सा रे |
| घ र ब र | पा यो | मो री | गुईं यां मो |
| ३ | X | २ | 0 |
| सा ध – ध | सा सा ग म | गम पध निसां गंरें | सांनि धप मग रेसा |
| रे म न | अ ति सु ख | पा | यो सु |
| ३ | X | २ | 0 |

**<u>अंतरा</u>**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ग म ध नि | सां – सां सां | निसां रेंगं रें सां | नि (सां) ध प |
| मं ग ल | गा वो री | झा वो पि | या को |
| ३ | X | २ | 0 |
| रें सां नि सां | ध प ध प | ग ग ग म | रे – सा सा |
| दी न पि | या सु ख | पा यो गु न | गा वो सु |
| ३ | X | २ | 0 |

**राग– मेघ**

**विलंबित ख़्याल– एकताल**

**आरोह–** सा रे म प नि सां

**अवरोह–** सां नि प म रे सा

**स्थायी**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नि सारेमप | रेरे निसा | रे प | म रे | रे मपमरे | नि सानिरेसा |
| ए | घ न | घ टा | के | बा दल | बा जे |
| ३ | ४ | X | 0 | २ | 0 |
| नि सारेमप | रेम पनि | नि प | मप नि | सां निप | म(प) मरेनिसा |
| झू ल न | मे ला | में | सखि | याँ | सा जे |
| ३ | ४ | X | 0 | २ | 0 |

**अंतरा**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मप निप | नि – | सां – | प निसांरेंसां | नि सां | प निप |
| सा व | न | के | ग र ज न | मे घा | बो ले |
| ३ | ४ | X | 0 | २ | 0 |
| रेम पप | मप नि | सां निप | प प | म प | रेमपनिसां |
| रिम झिम | रिम | झि म | छ न्द | बो ले | दा मिनी |
| ३ | ४ | X | 0 | २ | 0 |
| रेंरें निसां | नि सां | नि प | म प | म रे | नि सा |
| दम के | मे | घा | गा | | हे |
| ३ | ४ | X | 0 | २ | 0 |

**राग– मेघ**

**छोटा ख़्याल– एकताल(द्रुतलय)**

**स्थायी**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नि सा | रे प | मरे | सा रे | नि सा | नि प |
| ब र | स न | ला | गे मे | ह र | वा |
| X | 0 | २ | 0 | ३ | ४ |
| नि सा | रे म | प | निनि पम | पनि सांनि | पम रेसा |
| सा | व न | की | रु | | त |
| X | 0 | २ | 0 | ३ | ४ |

**अंतरा**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| म प | नि प | सां – | सां – | नि सां | नि प |
| दी | न पि | या | बूं | द न | झ रे |
| X | 0 | २ | 0 | ३ | ४ |
| रे म | प प | निनि पम | पनि सांरें | सांनि पम | रेसा निसा |
| अ ज | हूँ ना | आ | ये पि | ह र | वा |
| X | 0 | २ | 0 | ३ | ४ |

**राग– आभोगी**

**विलंबित ख़्याल– एकताल**

**आरोह–** सा रे ग म ध सां

**अवरोह–** सां ध म ग रे सा

**स्थायी**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रेगम रेसा | ध सा | मग रेसा | ध सा | रे गम | म धसां |
| साँ चो | है | दर बार | ते | रो | माँ |
| ३ | ४ | X | 0 | २ | 0 |
| रेंसां धम | ग म | ध सां | गं रें | सां धम | रेग रेसा |
| जग दम्बे | भ वा | नी | का | त्या नी | दे वी |
| ३ | ४ | X | 0 | २ | 0 |

**अंतरा**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ग म | ध – | सांसां सां | सां रें गं | रें सां | रेंध सां– |
| जो | जो | ध्या न | ध्या | वत है | ते रो |
| ३ | ४ | X | 0 | २ | 0 |
| रेंसां धम | गम धसां | गंमं रेंसां | रेंसां धम | ग म | रेध सा– |
| गुन गात | दी न | पि या | सुमि रन | ते रो | नाम |
| ३ | ४ | X | 0 | २ | 0 |

**राग– बैरागी भैरव**

**छोटा ख़्याल– तीनताल( द्रुतलय )**

**स्थायी**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प नि प म | रे – नि सा | रे – सा – | सो रे नि सा |
| च र न न | की ग ति | न्या री | ते रो प्र भु |
| 0 | ३ | X | २ |
| सा रे म – | प प म प | पनि सां नि प | म पम रे सा |
| तु म हो | स ब ही के | दा ता | मे रो प्र भु |
| 0 | ३ | X | २ |

**अंतरा**

| | | | |
|---|---|---|---|
| म प नि प | सां – सां सां | सां रें मं रें | सां निसां प म |
| दी न पि | या तु म | च र न ग | हे ध रो |
| 0 | ३ | X | २ |
| सा रे म – | प – म प | पनि सां नि प | म पम रे सा |
| वो है | भा ग्य वि | धा ता | मे रो प्र भु |
| 0 | ३ | X | २ |

**राग– बैरागी भैरव**

**छोटा ख़्याल– तीनताल (द्रुतलय)**

**स्थायी**

| | | | |
|---|---|---|---|
| प नि प म | रे – नि सा | रे – सा – | सो रे नि सा |
| च र न न | की ग ति | न्या री | ते रो प्र भु |
| 0 | ३ | X | २ |
| सा रे म – | प प म प | पनि सां नि प | म पम रे सा |
| तु म हो | स ब ही के | दा ता | मे रो प्र भु |
| 0 | ३ | X | २ |

**अंतरा**

| | | | |
|---|---|---|---|
| म प नि प | सां – सां सां | सां रें मं रें | सां निसां प म |
| दी न पि | या तु म | च र न ग | हे ध रो |
| 0 | ३ | X | २ |
| सा रे म – | प – म प | पनि सां नि प | म पम रे सा |
| वो है | भा ग्य वि | धा ता | मे रो प्र भु |
| 0 | ३ | X | २ |

**राग– भैरव**

**छोटा ख़्याल– तीनताल (द्रुतलय)**

**आरोह–** सा रे ग म प ध नि सां

**अवरोह–** सां नि ध प म ग रे सा

**स्थायी**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ध ध प ध | म म ध प | ग ग ग म | रे रे सा सा |
| क ब ले मि | लो मो हे | श्या म सुं | द र वा |
| 0 | २ | X | ३ |
| सा रे ग म | सां सां सां सां | ध नि सो निसां | ध प ग म |
| रा ह त | क त मो री | थ की रे | अं खि याँ |
| 0 | २ | X | ३ |

**अंतरा**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ध म प ध | सां सां सां सां | रे रे रे ग | रे रे सां सां |
| द र श न | दे दो | मो रे | मि त वा |
| 0 | २ | X | ३ |
| नि नि नि सां | ध ध प प | ग म ध म | रे रे सा सा |
| दी न पि | या बि न | बी ते | र ति याँ [1] |
| 0 | २ | X | ३ |

1 पंडित जी से चर्चा (प्रत्यक्ष) दिनांक: 13/05/2014, स्थान–कोलकाता (पं. जी के निवास स्थान पर )

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गायन के क्षेत्र में पंडित दीनानाथ मिश्र ने अपनी निजि बंदिशों के माध्यम से अनेक नवीन प्रयोग किये। ये नवीन प्रयोग आपने न केवल नवीन रचनाओं में ही किया अपितु अपनी गायकी में विभिन्न प्रकार की तान, आलापादि के माध्यम से भी किये। आपने अपनी गायकी को मौलिकता प्रदान करने के उद्देश्य से अपनी मौलिक विचारधारा जो कि गायकी से सम्बन्ध रखती है उसे अपनी गायकी में उतारने का प्रयास किया है। तंत्र की बारीकियों और पेंचदार तानों का प्रयोग आपकी गायकी को मौलिकता प्रदान करते हैं। अपनी कला के संरक्षण के लिए आप अपने विद्यार्थियों से भी यही अपेक्षा रखते हैं कि वे शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में नवीन–नवीन प्रयोग करें और अपने मौलिक चिन्तन से उत्पन्न विचारों के माध्यम से अपनी गायकी को एक नया स्वरूप प्रदान करें। यहाँ पंडित जी की एक विशेषता का ज़िक्र में अवश्य करना चाहूँगी कि ये नवीन प्रयोग आप अपने कार्यक्रमों को प्रस्तुत करते समय अचानक भी करते हैं, अर्थात कार्यक्रम के दौरान यदि अचानक दिमाग में कोई नई बात आ जाए तो उसे उसी समय बड़ी सफाई व सुन्दरता से प्रयोग में लाते हैं और प्रत्येक नये प्रयोग के बाद श्रोताओं से दाद पाते हैं।

# विभिन्न ख्यातिमान कलाकारों द्वारा पंडित दीनानाथ मिश्रा को प्रेषित बधाई संदेश

दिनांक 22 नवम्बर 2013 को संगीत संस्था 'तान चक्र' की ओर से आयोजित पंडित दीनानाथ मिश्र की सत्तरवीं वर्षगांठ पर ईश्वर से उनकी लम्बी आयु की कामना करते हुए विभिन्न ख्यातिमान कलाकारों ने अपने बधाई संदेश प्रेषित किये। यह आयोजन कोलकाता के महाजाति सदन में आयोजित हुआ। इस अवसर पर पद्मभूषण श्रीमती गिरिजा देवी, पद्मश्री अजय चक्रवर्ती, पंडित कुमार बोस तथा पंडित दीनानाथ जी के शिष्यों ने अपनी अपनी कला का प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ पंडित जी के शिष्यों द्वारा गुरु वंदना से किया गया। पंडित समर साहा, श्री जयशंकर मिश्रा ने तबले पर तथा श्री सनातन गोस्वामी, हिरण्यमय मित्रा ने हारमोनियम पर संगत की। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत पंडित जी के परिवार के सदस्य जिनमें श्री शम्भूनाथ मिश्र, श्री सारनाथ मिश्र, पशुपतिनाथ मिश्र, भोलानाथ मिश्र, कालीनाथ मिश्र, श्रीमती माधुरी मिश्रा तथा श्रीमती उर्मिला मिश्रा ने भी अपने हृदय की गहराई से आपको हार्दिक बधाई दी। इस पुस्तक में इन बधाई पत्रों को संलग्न किया गया है।

# उपसंहार

संगीतमयी जीवन के लगभग 52 वर्षो के अनुभव, रियाज़, संगीत के विभिन्न संस्थाओं से प्राप्त एवार्ड तथा शिष्यों की गायन पद्धति आदि के संदर्भ में संगीत रत्न पंडित दीनानाथ मिश्र के संबन्ध में जानकर तथा उनके जीवन पर शोध करके मैंने आपको गहराई से समझने का प्रयास किया तब पता चला कि कोई व्यक्ति संगीत के प्रति समर्पित होकर इसके प्रचार–प्रसार के लिए किस प्रकार सम्पूर्ण संगीत जगत के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है। यह केवल एक उदाहरण मात्र है ऐसे कई प्रश्नों के उत्तर इस शोध कार्य के अन्तर्गत मुझे स्वतः प्राप्त हुए और इनके प्रति जो मेरे अन्तर्मन में निहित जिज्ञासाएँ थीं उनका समाधान संभव हो पाया।

पंडित दीनानाथ मिश्र में निहित असीमित क्षमताएँ, दृढ़ इच्छा शक्ति, चिन्तन एवं अथक् प्रयास के कारण ही आपने संगीत के क्षेत्र में नये–नये स्तम्भ स्थापित किए। पहले मैंने भी यह कल्पना नहीं की थी कि मैं एक दिन इतने विस्तृत रूप में जानकारी एकत्रित कर इसे इस शोध के रूप में स्थापित कर सकूँगी। आपने सम्पूर्ण संगीत जगत को ऊँचाइयाँ प्रदान की। आपके प्रयास, कलाकारों एवं आने वाली समस्त पीढ़ियों के लिए वरदान सिद्ध होंगी।

आपके द्वारा निर्मित नवीन रचनाओं के निर्माण से जो आपकी चहुमुखि प्रतिभा का परिचय मिलता है वह भी भारतीय संगीत के विकास की कड़ी में मील का पत्थर साबित होगी तथा सम्पूर्ण विश्व में प्रचार–प्रसार, कुशल शिष्य तैयार करना, शैलियों का श्रेष्ठ प्रस्तुतिकरण, उपशास्त्रीय एवं शास्त्रीय गायन की विशेषताओं में बारीकियों आदि का इस शोध कार्य में विस्तार से लिखा गया है।

पंडित दीनानाथ मिश्र ने भारतीय संगीत से सम्बन्धित कार्य एवं योगदानों के माध्यम से संगीत जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ी तथा नये–नये आयाम भी स्थापित किए। पंडित दीनानाथ मिश्र सभी के लिए एक विशिष्ट उदाहरण बनकर उनके लिए प्रेरणा के महान् स्त्रोत हैं। मैं अपने शोध कार्य के माध्यम से यह भी जान सकी कि किस प्रकार एक कलाकार अपनी कला एवं अन्य रुचियों के मध्य कुशल

सामंजस्य स्थापित कर सकता है। पंडित दीनानाथ मिश्र एक प्रसिद्ध कलाकार होने के बाद भी सरल एवं सहृदय इंसान हैं। आप सदैव बाहरी दिखावे से दूर रहते हैं तथा संगीत के साथ–साथ ईश्वर भक्ति में लीन रहते हैं। आप दूसरों के दुखों को अपना दुख समझ कर उन से व्याकुल हो जाते हैं। आप गरीब, दीन एवं ज़रूरतमंदों की सदैव सहायता करते हुए उन्हें अपने परिवार की तरह ही स्नेह किया करते हैं।

अपने इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए मैने विभिन्न साधनों का प्रयोग किया जैसे समय–समय पर उनसे मिलकर बातचीत, नेट तथा समाचार पत्रों के माध यम से उनके सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना, फोन द्वारा उनसे बातचीत करना, उनके विभिन्न संगीत कार्यक्रमों में उपस्थित होकर उनकी गायकी को ध्यानपूर्वक सुनना, आपके परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा आपकी अन्य रुचियों को जानना। इस शोध कार्य के माध्यम से मैं पंडित दीनानाथ मिश्र की जीवन शैली, सांगीतिक जीवन, व्यक्तित्व एवं अन्य सभी विशेषताओं, प्रमुखताओं एवं महानताओं को जान सकी। आप वास्तव में इतने महान् व्यक्ति ही हैं और इन समस्त कलात्मक महानताओं के साथ अत्यन्त सरल, सहज एवं सादगी पसन्द व्यक्ति हैं। आप सदैव 'सादा जीवन–उच्च विचार' के मार्ग पर गतिमान रहते हैं एवं सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए अपनी समस्त कल्पनाओं को साकार कर रहे हैं।

इस कार्य में मैंने अपनी शोध निर्देशिका डॉ. श्रीमती निशि माथुर जी जिन्हें हाल ही में 9 सितम्बर 2014 को भारतेंदु समिति द्वारा भारतेंदु हरीशचन्द्र जी की 164 वीं जयंती के अवसर पर ''साहित्य श्री'' पुरस्कार से सम्मानित किया गया, ऐसी योग्य मार्गदर्शिका की सहायता एवं आशीर्वाद से श्रेष्ठ मार्गदर्शन प्राप्त कर इस शोध कार्य को सम्पन्न किया।

मैने पंडित दीनानाथ मिश्र के जीवन, व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सांगीतिक महानताओं से सम्बन्धित सभी जानकारियाँ सम्मिलित करने का पूर्ण प्रयास किया है तथा इसे उत्कृष्ट रूप देने में सफल भी हो पाई हूँ। इस शोध ग्रन्थ को पूर्ण करने के बाद मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करती हूँ कि ऐसे महान् कलाकारों का अभ्युदय

निरन्तर होता रहे  ताकि भारतीय संगीत की महानता में निरन्तर वृद्धि हो जिससे नई पीढ़ियाँ लाभान्वित होती रहें। आप एक साधक, चिन्तक, मार्गदर्शक एवं श्रेष्ठ गुरू भी हैं। आप अपने शिष्यों को जिस सहृदयता से संगीत शिक्षा प्रदान करते हैं उसी का परिणाम है कि वे आज अपने–अपने क्षेत्रों में संगीत कला में अपना एक मुकाम हासिल कर पाये हैं। ऐसे महान् कलाकार पर शोध करना मैं अपना सौभाग्य समझती हूँ।

मैंने इस ग्रंथ को व्यवस्थित रूप देने के लिए इसे आठ अध्याय में विभाजित किया है जिससे यह ग्रन्थ क्रमबद्ध तरीके से अपनी गति को प्राप्त कर सके तथा पाठकों को इसका सही दृष्टि से विश्लेषण एवं आलोचना करने में सहायता मिल सके व यह अधिक से अधिक उपयोगी सिद्ध हो सके।

प्रथम अध्याय में उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का उद्भव एवं विकास तथा भारतीय शास्त्रीय गायक कलाकारों का विवेचन किया गया है तथा भारतीय संगीत के इतिहास को चार भागों में विभक्त किया गया है–

1 .अतिप्राचीन काल जिसमें वैदिक काल के समय के संगीत का वर्णन है, उस समय के वाद्ययंत्रों, गायन शैली व नृत्य कला के बारे में उल्लेख किया गया है।

2 .प्राचीन काल– इसके अर्न्तगत पौराणिक तथा बौद्ध काल के समय के संगीत का वर्णन किया गया है। जिसमें रामायण और महाभारत के समय के संगीत का वर्णन मिलता है साथ ही जैन बौद्ध वाड्.मय में संगीत, भरत का नाट्यशास्त्र,मतंग का बृहदेशी ग्रन्थ आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है।

3 .मध्यकाल–इसमें मुगलकाल के संगीत का वर्णन मिलता है जिसमें अकबर के समय के संगीत का वर्णन है इस काल को संगीत का स्वर्णकाल कहा गया है वहीं संगीत के शत्रु औरंगजेब का भी ज़िक्र मिलता है।

इस अध्याय में राजा भोज, अभिनव गुप्त, सोमेश्वर, जयदेव, शारंगदेव, पार्श्वदेव, अमीर खुसरो, लोचन, कल्लीनाथ, रामामात्य, अकबर, मानसिंह तोमर, सूर, कबीर, तुलसी, मीरा, सोमनाथ, पंडित दामोदर, पंडित व्यंकटमुखी, अहोबल, भावभट्ट सदारंग–अदारंग एवं श्रीनिवास का भारतीय संगीत के विकास में योगदान

का वर्णन किया गया है।

4.आधुनिक काल– इस काल को दो भागों में विभाजित करके क. ब्रिटिश काल ख. भारतीय स्वाधीनता संग्राम काल– ब्रिटिश काल व भारतीय स्वाधीनता संग्राम काल के समय में भारतीय संगीत की दिशा, दशा एवं प्रचार– प्रसार का उल्लेख किया गया है।

इस अध्याय में संगीत में घरानों के महत्व, प्रमुख घराने तथा उनकी विशेषताओं और गायन शैली का विस्तार से विवरण किया गया है साथ ही भारतीय शास्त्रीय संगीत के अग्रणी विभिन्न गायक कलाकारों की गायकी एवं संगीत के क्षेत्र में उनके योगदान का विस्तार से वर्णन किया गया है। इस अध्याय में पंडित जी पर शोध करने के उद्देश्य तथा उनके गायन के शोध कार्य की समीक्षा भी की गई है।

द्वितीय अध्याय में संगीत रत्न पंडित दीनानाथ मिश्र के जन्म एवं बाल्यकाल का वर्णन करते हुए उनके परिवार एवं वंश का परिचय दिया गया है। साथ ही उनके प्रारंभिक जीवन, स्कूली शिक्षा एवं पारिवारिक स्थिति तथा परिवार में संगीत के वातावरण के बारे में बताते हुए उनके स्वभाव, उनका रहन–सहन एवं भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति उनके जीवन दर्शन का विस्तार से वर्णन मिलता है। इसी अध्याय में पंडित जी की विभिन्न रुचियों की जानकारी भी हमें प्राप्त होती है जिससे हमें पता चलता है कि एक कलाकार अपनी कला के प्रति तो समर्पित होता ही है साथ ही साथ वह अपने हृदय में अन्य कई रुचियों को भी आत्मसात किये होता है। अतः पंडितजी के प्रकृति के प्रति प्रेम, आध्यात्म से लगाव, दूरदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों में रुचि एवं दर्शनीय स्थलों की यात्राओं के प्रति लगाव के बारे में इस अध्याय में चर्चा की गई है।

तृतीय अध्याय में पंडित जी की गायन शिक्षा एवं पारिवारिक वातावरण में संगीत का प्रभाव तथा संगीत का विरासत के रूप में पाया जाने का वर्णन मिलता है साथ ही यह जानकारी भी इस अध्याय में मिलती है कि पंडित जी के परिवार का सम्बन्ध बनारस घराने के गायकों से किस प्रकार रहा है।

पंडित जी की गायन शैली पर अन्य कलाकारों के प्रभाव के बारे में इसमें विस्तार से समझाया गया है जिसमें उस्ताद अमीर खां, पंडित भीमसेन जोशी, उस्ताद नज़ाकत अली सलामत अली, सितार वादक उस्ताद विलायत खां, सितार वादक पंडित रविशंकर, सरोद वादक उस्ताद अली अकबर खां, ठुमरी गायिका

श्रीमती गिरिजा देवी आदि कलाकारों की गायकी एवं वादन शैली से प्रभावित होकर इनके प्रभाव को अपने गायन में किस प्रकार उतारा इसके बारे में समझाया गया है इसके साथ ही पंडित जी की प्रारंभिक गायन शिक्षा एवं उनके गुरुजन के बारे में बताया गया है। इस अध्याय में पंडित जी की संगीत के प्रति जिज्ञासा एवं संगीत को आत्मसात करने के गुणों का पता चलता है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत मैंने ख़्याल गायकी के घरानों का विवेचन करते हुए बनारस व पटियाला घराने का स्थान निरूपित किया है तथा परम्परागत रूप से ख़्याल गायकी के कुछ मुख्य घरानों का वर्णन किया गया है जिनमें ग्वालियर ,आगरा, पटियाला, जयपुर, किराना, बनारस व दिल्ली घराने प्रमुख हैं।

इसके साथ ही विभिन्न गायन शैलियों का वर्णन भी इस अध्याय में मिलता है जैसे ध्रुपद गायकी, ख़्याल गायकी, टप्पा, ठुमरी, तराना, धमार, ग़ज़ल, कव्वाली, दादरा, भजन, कजरी, चैती, लोकगीत, चतुरंग, त्रिवट आदि।

दीनपिया उपनाम से बनी पंडित जी की बंदिशों एवं नवीन रचनाओं पर भी प्रकाश डाला है। गायन शैली की परंपरा में बनारस व पटियाला घराने का तथा इन घरानों से जुड़े कलाकारों का भी विवेचन भी किया है। जिनमें पंडित दिलाराम मिश्र, श्री जगमन मिश्र, श्री ठाकुर दयाल, श्री प्रसिद्धू मनोहर मिश्र, श्री लक्ष्मीदास मिश्र, श्री रामसेवक मिश्र, गायनाचार्य बड़े रामदास मिश्र आदि का परिचय भी इसी अध्याय में मिलता है।

पंचम अध्याय में पंडित जी की गायन शैली का अन्य गायन शैलियों से तुलनात्मक अध्ययन का समावेश किया गया है। । इस अध्याय के अर्न्तगत समकालीन गायकों में प्रमुख रूप से भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी जी की गायकी से समानताएं असमानताएं, पंडित जसराज की गायकी से समानताएं असमानताएं, प्रसिद्ध गायिका गिरिजा देवी, कुमार गन्धर्व, पंडित चन्द्र प्रकाश मिश्रा, उस्ताद इकबाल अहमद खां, श्री पन्नालाल मिश्र आदि की गायकी का तुलनात्मक अध्ययन का विस्तार से वर्णन मिलता है साथ ही साथ समकालीन गायकों से तुलनात्मक अध ययन के आधार पर पंडित दीनानाथ जी के गायन की विशेषताओं को भी विस्तार

से समझाया गया है जिसमें बड़ा ख़्याल, छोटा ख़्याल, तराना, शुद्ध मुद्रा, शुद्ध वाणी आदि के बारे में बताया गया है। इस अध्याय में पंडित जी की गायन शैली में जिन–जिन विभिन्न तत्वों का समावेश है उनका विस्तार से वर्णन मिलता है जिससे आपकी गायकी को बारिकी से समझने में सहायता मिलती है।

षष्टम अध्याय के अंतर्गत पंडित जी के गायन कार्यक्रम जैसे दूरदर्शन केन्द्रों पर कार्यक्रम, अन्यत्र भारत में यात्राएँ एवं कार्यक्रम, विदेशों में गायन का प्रचार–प्रसार हेतु कार्यक्रम व उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है साथ ही संगीत के प्रति आपके दृष्टिकोण को दर्शाया गया है। इस अध्याय में पंडित जी को देश–विदेशों में जो सम्मान एवं जो प्रसिद्धि प्राप्त हुई उनका समावेश किया है साथ ही जिन उपाधियों से आपको नवाज़ा गया है जैसे सुरमणि, संगीत रत्न, गिरिजा शंकर पुरस्कार आदि का वर्णन मिलता है।

इस अध्याय को मूर्त रूप देने में पंडित जी एवं उनके परिवार के सदस्यों से रू–बरू चर्चा करके तथा फोन द्वारा जानकारी एकत्रित करके उन तथ्यों का इसमें समावेश किया है साथ ही पंडित दीनानाथ मिश्र जी के संगीत कार्य क्षेत्र के बारे में समाचार पत्रों एवं पत्र–पत्रिकाओं से प्राप्त जानकारी का उल्लेख किया गया है तथा आई. सी. सी. आर के तहत ओमान में दी गई विभिन्न प्रस्तुती एवं वहाँ के श्रोताओं पर अपनी गायकी से छोड़े प्रभाव का भी विस्तार से वर्णन मिलता है।

सप्तम अध्याय में पंडित जी के द्वारा सांस्कृतिक धरोहर का प्रचार –प्रसार एवं संरक्षण के अंतर्गत भारतीय एवं विदेशी विद्यार्थी तथा देश–विदेश में उनके कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ व अन्य तत्वों जैसे वेबसाईट, सी.डी, विडियो क्लिप्स एवं साहित्य का उल्लेख किया गया है।

इसके अतिरिक्त इस अध्याय में पंडित जी के प्रमुख शिष्य पंडित भोलानाथ मिश्र , खगेश कीर्तनिया, केशव दास, मंगल मिश्र, सीज़ा रॉय, बाबुल सुप्रियो , मधुश्री , स्नेहलता मिश्र , पोम्पा बनर्जी, इन्द्रानी रॉय , दीपांजना बोस आदि का वर्णन किया गया है। पंडित जी के अनेक विद्यार्थियों की गायन शैली व उनके गायन कार्यक्रम का वर्णन भी किया गया है।

इस अध्याय में पंडित जी के गायन कार्यक्रमों की प्रस्तुतियों का वर्णन किया गया है जिन्हें दो भागों में विभक्त किया गया हैं आपका अधिकांश समय पश्चिमी

बंगाल में गुज़रा है अतः प्रथम भाग में उन कार्यक्रमों का उल्लेख किया गया है जो उन्होंने पश्चिमी बंगाल में प्रस्तुत किये हैं। दूसरे भाग में भारत के अन्य प्रदेशों में आयोजित संगीत सम्मेलनों के बारे में विस्तार से बताया गया है जिसमें भारत की विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा करवाए गए पंडित जी के कार्यक्रमों का विवरण दिया गया है साथ ही कार्यक्रम के दौरान दर्शकों के द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देकर उनके मन में उत्पन्न जिज्ञासा को शांत करने का उल्लेख किया गया है।

अष्टम अध्याय के अंतर्गत पंडित जी के द्वारा शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों में उनके मौलिक चिंतन एवं मान्यताओं का विवेचन किया गया है। इस अध्याय में पंडित जी का संगीत के प्रति दृष्टिकोण एवं उनके विचारों का विस्तार से विवेचन किया गया है। युवा पीढ़ी को दिये गये संदेश एवं संगीत की आज की परिस्थिति का इस अध्याय में विस्तार से वर्णन मिलता है। संगीत के विद्यार्थियों को रियाज़ के समय किन – किन बातों का ध्यान रखना चाहिए इस संबन्ध में भी पंडित जी के विचारों का इसी अध्याय में उल्लेख मिलता है। सरकारी संरक्षण की , कला के प्रति अनदेखी की जो पीड़ा पंडित जी को है उसका भी इसी इस अध्याय में वर्णन मिलता है। गायन के क्षेत्र में नवीन प्रयोग के संबन्ध में आपका मानना है कि किसीभी कलाकार की प्रतिभा का वास्तविक परिचय उसकी मौलिक रचनाएँ होती हैं। इस अध याय में पंडित जी की मौलिक रचनाओं को स्वरलिपी सहित लिखा गया है। राग भैरवी, रामकली, भैरव, दुर्गा, चन्द्रकौंस, सरस्वती, मिश्र खमाज, एवं कुछ ठुमरी, दादरा रचनाएँ जो आपकी स्वरचित है उनका समावेश इसी अध्याय में किया गया है।

अन्ततः मैं इस शोध कार्य को एक मूर्त रूप दे पाई। इस कार्य को साकार रूप देने का मेरा मुख्य उद्देश्य यही है कि संगीत जगत की इस महान् हस्ती से जनमानस को परिचित कराना तथा आपकी प्रभावशाली एवं लोकप्रिय शैली से आमजन को रूबरू करवाना। मैंने अपने इस ग्रन्थ में यह स्पष्ट किया है कि कई महान् कलाकारों से प्रभावित होकर आपने जो अपनी गायन शैली बनाई है वह अपने आप में एक अनूठा उदाहरण है। यद्यपि कुछ गुणिजन आपकी गायन शैली को पटियाला घराने का मानते हैं वहीं मैंने इस ग्रन्थ के माध्यम से यह स्पष्ट करने का

प्रयास किया है कि पंडित दीनानाथ मिश्र की गायन शैली में मिश्र नाम को सार्थक करते हुए पटियाला तथा बनारस घराने की गायकी का मिश्रण साफ दिखाई देता है।

इस ग्रन्थ में मैंने समकालीन गायकों का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया है। आप ठुमरी, ख़्याल तथा तराने के गायक के रूप में जाने जाते रहे हैं किन्तु आपने ग़ज़ल व भजन भी खूब गाये हैं यह तथ्य भी इस शोध ग्रन्थ के द्वारा प्रकाश में लाया गया है। आपके गायन के पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित विवरण यत्र– तत्र बिखरे हुए थे जिनका मैंने इस अवधि के दौरान उनका अध्ययन करके जहाँ तक संभव हो पाया संकलन किया तथा उन्हें इस शोध ग्रन्थ में स्थान दिया। आपके द्वारा स्वरचित बंदिशों को भी स्वरलिपिबद्ध करने का मेरा यह पहला प्रयास है।

मैं ईश्वर की आभारी हूँ कि आपके आशीर्वाद एवं मेरी शोध निर्देशिका डॉ. श्रीमती निशि माथुर जी के श्रेष्ठ मार्गदर्शन के परिणाम स्वरूप मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि मैं पंडित दीनानाथ मिश्र जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोध कार्य कर सकी और उसे एक उत्कृष्ट रूप प्रदान करने में सफल हुई। आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोध कार्य करने के बाद मैं यही प्रार्थना करती हूँ कि ईश्वर की कृपा से आप जैसे युग पुरुष का निरन्तर अभ्युदय हो। अन्त में आपके चरणों में मेरा शत्–शत् नमन।

# परिशिष्ट – 1

## पंडित दीनानाथ जी की जीवनशैली

## एवं

## सांगीतिक जीवन से सम्बन्धित छाया चित्र

# परिशिष्ट – 2

## संदर्भ ग्रन्थ एवं समाचार पत्र–पत्रिकाएँ

# संदर्भ ग्रन्थ


| | | |
|---|---|---|
| डॉ. ठाकुर जयदेव सिंह | भारतीय संगीत का इतिहास | संगीत रिसर्च एकेडेमी, कलकत्ता प्रथम संस्करण–1994 |
| डॉ. सीमा जौहरी | भारतीय संगीत भाग–2 | मैसर्स यूनिवर्सिटी बुक हाउस(प्रा.)लि. 79,चौड़ा रास्ता,जयपुर संस्करण–2005 |
| डॉ. सुशील कुमार चौबे | संगीत के घरानों की चर्चा | छेदी लाल हिन्दी संस्थान,लखनऊ संस्करण–2005 |
| अमल दाश शर्मा | विश्व संगीत का इतिहास | राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. 1990 |
| रेनू जौहरी | भारतीय सांगीतिक जगत में वाराणसी का योगदान | बी.के.तनेजा क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी,संस्करण–2003 |
| राम अवतार वीर (संगीताचार्य) | भारतीय संगीत का इतिहास | राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली,1996 प्रथम संस्करण–2002 |
| सुधा श्रीवास्तव | भारतीय संगीत के मूलाधार | कृष्णा ब्रदर्स,महात्मा गांधी मार्ग,अजमेर |
| तुलसी राम देवांगन | भारतीय संगीत शास्त्र | मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ, अकादमी संस्करण–1997 |
| डॉ. जोगिन्द्र सिंह बावरा | भारतीय संगीत की उत्पति एवं विकास | ए.बी.ऐस पब्लिकेशन संस्करण–1994 |

| | | |
|---|---|---|
| नारायण भक्त | हमारे संगीतकार | पुस्तक महल<br>नई दिल्ली<br>संस्करण–2008 |
| रामलाल माथुर | भारतीय संगीत और<br>संगीतज्ञ | बोहरा प्रकाशन,जयपुर<br>संस्करण–1997 |
| कविता चक्रवर्ती | भारतीय संगीत को<br>महान संगीतज्ञों की देन | राजस्थानी ग्रंथागार<br>जोधपुर, 2004 |
| रमेश मिश्र | दिल्ली घराने का संगीत<br>में योगदान | राधा पब्लिकेशन्स<br>दिल्ली, 2001 |
| हुकम चंद | आधुनिक काल में शास्त्रीय<br>संगीत | ईस्टर्न बुक लिंकर्स<br>संस्करण–1998 |
| इब्राहिम अली | भारतीय संगीतकार<br>उस्ताद अमीर खाँ | क्लासिकल पब्लिशिंग<br>कम्पनी,नई दिल्ली,2000 |
| डॉ सुशील कुमार चौबे | हमारा आधुनिक संगीत | विनोद चन्द्र पाण्डेय<br>लखनऊ, 1983 |
| डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर<br>परांजपे | संगीत बोध | मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ<br>अकादमी,भोपाल,1992 |
| डॉ. सुरेश गोपाल<br>श्रीखंडे | हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन<br>की शिक्षा प्रणाली | अभिषेक पब्लिकेशन्स<br>चण्डीगढ़, 1993 |
| अमिता शर्मा | शास्त्रीय संगीत का विकास | ईस्टर्न बुक लिंकर्स,दिल्ली<br>संस्करण–2000 |
| रवीन्द्र नाथ बहोरे | भारतीय संगीत विमर्श | क्लासिकल पब्लिशिंग<br>कम्पनी,नई दिल्ली,2005 |

| | | |
|---|---|---|
| डॉ.उमा शंकर शर्मा | संगीत का योगदान मानव जीवन के विकास में | ईस्टर्न बुक लिंकर्स दिल्ली,2001 |
| डॉ.निशि माथुर | भारतीय संगीत कलाकार | पब्लिकेशन स्कीम जयपुर, 2001 |
| डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे | भारतीय संगीत का इतिहास | चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी,1994 |
| सुश्री शांतिगोवर्धन | संगीत शास्त्र दर्पण | पाठक पब्लिकेशन संस्करण–2008 |
| गिरीश चन्द्र उप्रेती | भारतीय संगीत | राहुल पब्लिशिंग हाऊस,दिल्ली,199 |
| प्रो.हरीशचन्द्र श्रीवास्तव | प्रभाकर प्रश्नोत्तर | संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद,1989 |
| वसंत | संगीत विशारद | संगीत कार्यालय हाथरस, 1994 |
| प्रो. हरीशचन्द्र श्रीवास्तव | राग परिचय भाग–तीन | संगीत सदन प्रकाशन इलाहाबाद,1992 |
| सुशील कुमार चौबे | हिन्दुस्तानी संगीत के रत्न | उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी,लखनऊ संस्करण–1977 |
| श्री भगवत शरण शर्मा | भारतीय संगीत का इतिहास | संगीत कार्यालय हाथरस (उ. प्र.) |
| डॉ. पूनम मिश्रा | प्राचीन भारत में संगीत | अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस दरियागंज,नई दिल्ली |

# संस्कृत ग्रन्थ

| | | |
|---|---|---|
| पाणिनी | – | गीता प्रेस, गोरखपुर |
| सामवेद | – | गीता प्रेस, गोरखपुर |
| ऋग्वेद | – | गीता प्रेस, गोरखपुर |
| यजुर्वेद | – | गीता प्रेस, गोरखपुर |
| रामचरितमानस | – | गीता प्रेस, गोरखपुर |
| श्रीमद्भागवत गीता | – | गीता प्रेस, गोरखपुर |

# संगीत पत्रिकाएँ

| | | |
|---|---|---|
| संगीत कला विहार | – | अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल प्रकाशन, मिरज |
| छायानट | – | उत्तरप्रदेश संगीत नाटक अकादमी का प्रकाशन, पोस्ट बॉक्स नं.30 विपिन खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ |
| श्रुति | – | 9, केथेड्रल रोड, चेन्नई |
| कला समय | – | जे–191, मगल भवन, ई–6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल |
| मनांजली (2012) | – | संगीत महाभारती, मुम्बई |

# ENCYCLOPEDIA


1. The Universal Encyclopedia,
   Volume - 8.

2. The Encyclopedia Americana,
   Volume 10,14 Printed in NewYork.

3. The Encyclopedia Britanica,
   A new survey of universal knowledge,
   Volume 16, Printed in Great Britain.

4. The New Standard Encyclopedia And World Atlas,
   The Times of India Head Office,
   Bombay, 1936.


# ENGLISH BOOKS


| | | |
|---|---|---|
| H.P. Krishna Rao | The Psychology of Music | Asian Educational, Services,New Delhi 1984 |
| Dr. Lovely Sharma | Glimpse on Indian Musicology | Sanjay Prakashan, 4378/4-D, 209 J.M.D. House, Ansari Road, Dariyaganj |
| Dr. Prabha Atrre | Along The Path of Music | Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd. |

# WEBSITES


1. www.swargana.org
2. www.surgyan.com
3. www.art india.net / hindustani.html
4. www.biswabrata chakrabarti.com
5. www.en. wikipedia.org / wiki / Gharana
6. www.benaras music academy.com
7. www.en. wikipedia.org / wiki / Dhrupad
8. www.en. wikipedia.org / wiki / category.Indian classical singers


# NEWS PAPERS


1.The Statesman (Tuesday) August 23,1994

2.Ananda Bazar Patrika 18th March 2006

3.Mumbai Mirror Tuesday, June24,2008

4.Out Look (Magazine) 25th October2004 (Delhi)

5.Indian Today 15th November 2006

6.Dainik Jagaran (New Delhi) 12th September 2005

# साक्षात्कार

1.पंडित दीनानाथ मिश्र
2.पंडित भोलानाथ मिश्र
3.पंडित कालीनाथ मिश्र
4. श्रीपशुपतिनाथ मिश्र
5. श्री मंगल मिश्र
6. श्री सारनाथ मिश्र
7. श्री शम्भूनाथ मिश्र
8. श्रीमती माधुरी मिश्रा
9. श्रीमती स्नेहलता मिश्रा
10. श्रीमती माया देवी मिश्र
11. श्री राजेश मिश्र

# शब्दकोष


| | | |
|---|---|---|
| डॉ. धीरेन्द्र वर्मा | हिन्दी साहित्य कोष | ज्ञानमण्डल लिमिटेड, संत कबीर रोड, वाराणसी (उ.प्र.) |
| डॉ. फूलचन्द जैन | नालन्दा विशाल सागर | न्यू इम्पीरियल बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली |
| श्री विमलकान्त रॉय चौधरी | भारतीय संगीत कोष | अनुवादक मदनलाल व्यास, भारतीय ज्ञानपीठ, बी–1, 45–47, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली |